पर्यावरण असंतुलन जिम्मेदार कौन ?

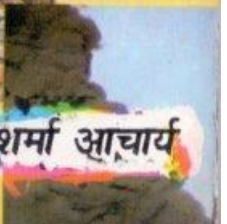

–पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

पर्यावरण असंतुलन— जिम्मेदार कौन ?

▼

लेखक :
वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

▼

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०- २५३०२००

▼

पुनरावृत्ति सन् २०११ मूल्य : ३१.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्राक्कथन

आज धरती का तापमान बढ़ता चला जा रहा है। पर्यावरण चक्र गड़बड़ा जाने-ऋतु विपर्यय के कारण प्रकृति-प्रकोप चारों ओर देखे जा रहे हैं। चाहे वे विकसित देश हों या विकासशील, सभी ओर यह कहर बरसता देखा जा सकता है। मनुष्य ने अपनी नासमझी से स्वयं ही इन आपत्तियों को आमंत्रित किया है। उसकी जीवनशैली विकृत हो चुकी है। साधनों को पाने की होड़ में मनुष्य ने अपनी तृष्णा को इतना बढ़ा लिया है कि कहीं अंत ही नजर नहीं आता। संसाधनों का दोहन आज चरम सीमा पर है। प्रतिदिन पूरे विश्व में कुल मिलाकर ७०,००० एकड़ के वृक्षों का कवच नष्ट कर दिया जाता है। यह सब हमारी सुख-सुविधाएँ बढ़ाने के लिये एक प्रकार से प्रकृति से यह खिलवाड़ मानवमात्र के महामरण की तैयारी है।

सभी को बैठकर एकजुट हो चिंतन करना होगा कि इस वर्तमान की स्थिति के लिए कौन जिम्मेदार है ? क्यों प्रकृति असंतुलित हो रही है ? मानवकृत विभीषिकाएँ क्यों बढ़ती जा रही हैं ? मनुष्य को अपनी गरिमा के अनुरूप अपना जीवन जीना सीखना ही होगा। पाश्चात्य सभ्यता का खोखलापन अब जग जाहिर होता जा रहा है। संस्कृति का इसने जमकर विनाश किया है। विज्ञान के नवीनतम आविष्कारों से लाभ तो कम उठाये गये, हानि अधिक दिखाई दे रही है। परमाणु बमों की विभीषिका, जर्मवार, रासायनिक युद्ध न केवल मानव मात्र के लिए, अपितु समूचे पर्यावरण के लिये एक खतरा बने हुए हैं। बहु प्रजनन भी एक टाइम बम की तरह विस्फोटक होता जा रहा है।

समझदारी इसी में है कि समय रहते चेता जाये। हम अपने आस-पास को भी देखें एवं पर्यावरण को प्रदूषित होने से रोकें। समष्टिगत स्तर पर आंदोलन जन्में एवं जनचेतना जागे, ताकि महाविनाश से पूर्व हम सँभल जाएँ। यह मानकर चलें कि स्थूल व सूक्ष्म पर्यावरण दोनों का ही प्रदूषण मानवी चिंतन को भी गड़बड़ाता है समाज में हिंसा के पारस्परिक अंतर्विरोधों को बढ़ाता है। यह सद्भाव तभी उत्पन्न हो पायेगा, जब हम स्थूल के साथ-साथ सूक्ष्म प्रदूषण, सांस्कृतिक प्रदूषण पर भी रोकथाम लगा पायेंगे। क्योंकि प्रदूषण इसी से जन्मा है। आध्यात्मिक चिंतन ही, वैचारिक क्रांति ही इन समस्याओं का समाधान दे सकती है, ऐसे परमपूज्य गुरुदेव आचार्य श्रीराम शर्मा जी का मत है। उन्हीं की लेखनी से लिखे विचारों का यह संकलन अब इक्कीसवीं सदी की प्रारंभिक घड़ियों में प्रस्तुत किया जा रहा है, ताकि सप्त आंदोलनों में पर्यावरण संशोधन रूपी पाँचवें आन्दोलन को गायत्री परिजन गति दे सकें।

—डॉ० प्रणव पण्ड्या

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विषय-सूची

१. पर्यावरण, प्रकृति और प्रदूषण ५
- प्रकृति और पर्यावरण चक्र ७
- प्रकृति संतुलन बिगाड़ने का प्रतिफल १३
- पर्यावरण चक्र का खतरनाक स्वरूप १६

२. पर्यावरण प्रदूषण में एक प्राथमिक कारण नासमझी २७
- गंदगी—एक सामाजिक अपराध २७
- बढ़ता कचरा—बढ़ते संकट ३२
- इस कचरे को समेटेगा कौन ? ३४
- 'डिस्पोजेबिल कल्चर'—नासमझी की प्रतीक ३६
- एक और नासमझी—नशा ३८
- चिंतन और पर्यावरण ४२
- बीसवीं सदी के समाज की एक विडंबना भरी कहानी ४६

३. प्रकृति से खिलवाड़ ५५
- महामरण की तैयारी ५६
- प्रकृति से छेड़छाड़—अब बंद की जाए ६३
- क्यों हो रही है प्रकृति असंतुलित ६७
- पर्यावरण से छेड़छाड़—खंड प्रलय को निमंत्रण ७१

४. वैज्ञानिक प्रगति बनाम प्राकृतिक असंतुलन ७६
- विज्ञान ने सुविधा ही नहीं, संकट भी दिए ७८
- प्रगति के नाम पर अवगति ८१
- मानवकृत विभीषिकाओं के मंडराते बादल ८४

५. अप्राकृतिक जीवन ९१
- फैशन का प्रदूषण भोजन को विषाक्त बना रहा है ९२
- खाद्य पदार्थों में मिलावट की समस्या ९८
- खोखली पाश्चात्य सभ्यता ही प्रदूषित कर रही है संस्कृति को १०२

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

६. युद्ध और पर्यावरण १०७
➢ परमाणु शक्ति—आत्मरक्षा या विनाश १०८
➢ पर्यावरणं के लिए नया खतरा—विषाणु बम ११६
➢ कितना खतरनाक है—ध्वंस का प्रयोग १२२
➢ क्या मानवीय प्रतिभा ध्वंस में ही लगनी चाहिए १२४
७. जनसंख्या और पर्यावरण १३०
➢ जनसंख्या वृद्धि—स्वयं में एक संकट १३०
➢ क्या धरती खिसक जाएगी १३४
➢ भविष्य का अन्न और आहार १३६
८. संस्कृति, विचार और पर्यावरण १४४
➢ चिंतन और पर्यावरण—अन्योन्याश्रित १४५
➢ अपसंस्कृति प्रसार बनाम सांस्कृतिक प्रदूषण १४६
➢ वैचारिक प्रदूषण १५३
➢ दूषित कार्यपद्धति १५६
➢ कहीं मनुष्य यंत्र मानव न बन जाए १६०
➢ मानव जीवन में बढ़ती विपन्नता के लिए जिम्मेदार है— वैचारिक प्रदूषण १६२

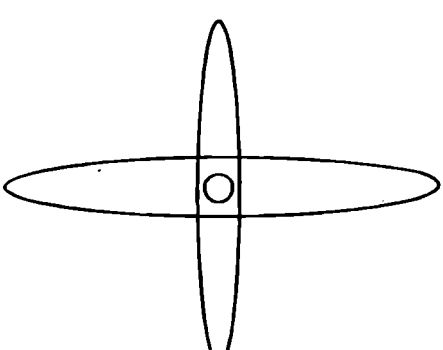

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर्यावरण, प्रकृति और प्रदूषण

पर्यावरण प्रकृति का वह घटक है, जो मानवजीवन से संबंधित है और उसे प्रभावित करता है। सूक्ष्म पर्यवेक्षण से पता लगता है कि पर्यावरण और प्रकृति में वस्तुतः कोई भेद नहीं है। प्रकृति का कोई भी घटक ऐसा नहीं है, जो मानवजीवन को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में प्रभावित न करता हो।

संक्षेप में हमारे आस-पास की प्रत्येक वस्तु जड़, चेतन और प्राणी, हमारा रहन-सहन, खान-पान, संस्कृति-विचार सभी कुछ पर्यावरण के ही अंग हैं। वैज्ञानिक शब्दावली में कहना हो, तो "चारों ओर की भूमि, जल, वायु और इसके भीतर-ऊपर के सजीव-निर्जीव सब पदार्थ मिलाकर बायोस्फियर यानि जीवमंडल है। इस जीवमंडल और मनुष्य के बीच के परस्परावलंबी संबंध का नाम पर्यावरण है।" जर्मन वैज्ञानिक अरनेस्ट हैकल ने पर्यावरण की परिभाषा की है, "किसी भी जीव-जंतु से समस्त कार्बनिक व अकार्बनिक वातावरण के पारस्परिक संबंधों को पारिस्थितिकी या पर्यावरण कहेंगे।"

पर्यावरण का मानवजीवन में विशेष महत्त्व है। उसका अपना प्रभाव होता है। मानव संस्कृति और मानवजीवन के विकास, उन्नयन में सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान पर्यावरण का ही रहता है। पर्यावरण की महत्ता, संवेदनशीलता और उपयोगिता को समझने के लिए कहा जाता है कि जैसे जलचर बिना जल के जीवित नहीं रह सकते, उसी प्रकार प्रत्येक जीव, प्राणी, वनस्पति उपयुक्त पर्यावरण के बिना नहीं रह सकते हैं। भिन्न स्थानों और प्रदेशों में पर्यावरण भिन्न स्वरूपों में दिखता और मिलता है। हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में पर्वत, चट्टानें, वनस्पति, जंगल और अनेक प्रकार के जीव-जंतु हैं तथा सर्दी, बर्फ व पानी की बहुतायत है, तो राजस्थानी क्षेत्रों में रेत, ताप, ऊष्मा, मरुस्थल का आधिक्य है। सम्मिलित रूप से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्थान विशेष में प्राप्त होने वाले सभी तत्त्व तथा वहाँ की जलवायु मिलकर ही 'पारिस्थितिकी' का निर्माण करते हैं।

पर्यावरण के महत्त्व को ऋषि-मुनि वैदिक युग में भी अच्छे से पहचानते रहे थे, यही कारण है कि आर्ष ग्रंथों में प्रकृति और उसके घटक तत्त्वों के प्रति विशेष सम्मान का, पूजा का भाव परिलक्षित होता है और ऐसी ही प्रेरणा संप्रेषित होती है। उन दिनों तदनुरूप ही नीति-नियम भी बनाए जाते थे। पर्यावरण की तरफ पश्चिमी जगत् का ध्यान-आकर्षण पिछले कुछ दशकों में ही हुआ है। वह भी प्रारंभ में पारिस्थितिकी यानि भौगोलिक पर्यावरण तक ही सीमित रहा था। उस समय मृदा, जल और वायु को ही मुख्यतः पर्यावरण के अंतर्गत माना जाता था। बाद में पर्यावरण के अर्थ को विस्तृत करते हुए नई परिभाषा दी गई। "मानव के चारों ओर के भौतिक एवं सांस्कृतिक घेरे में संपन्न होने वाली क्रियाओं, परिवर्तनों, अंतःक्रियाओं और तद्जनित प्रभावों से ही मानव पारिस्थितिकी या ह्यूमैन इकोलॉजी का निर्माण होता है।" इस परिभाषा के तहत मानव समुदाय के रहन-सहन, खान-पान के साथ विचारों को भी पर्यावरण के घटक के रूप में स्वीकारा जाने लगा।

वैज्ञानिकों की जिज्ञासु और खोजी प्रवृत्ति यहाँ पहुँचकर भी शांत न हो सकी। पर्यावरण के गहनतम अध्ययन और विश्लेषण के क्रम में वे भारतीय ऋषियों के आध्यात्मिक तत्त्वदर्शन को स्पर्श करने तथा समझने के क्रम में पहुँचने लगे हैं। यह तो पहले से ही ज्ञात था कि ब्रह्मांड के तत्त्व, अंतर्ग्रही परिवर्तन पृथ्वी को, मनुष्य तथा पृथ्वी के अन्य प्राणियों को प्रभावित करते रहते हैं। अनेकानेक प्रयोगों, परीक्षणों से अब यह भी स्पष्ट होने लगा है कि पर्यावरणीय क्रियाएँ भी ब्रह्मांड को निरंतर प्रभावित करती हैं। इस प्रक्रिया को वैज्ञानिकों ने 'डीप इकोलॉजी' के रूप में स्वीकारा है। डीप इकोलॉजी के अनुसार, पर्यावरण के दूसरे अन्य घटक एक निश्चित नियम-कानून के अंतर्गत ही व्यवहार करते रहते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर्यावरण की नियमितता, निश्चितता और नियमबद्धता में सबसे बड़ा व्यतिरेक और विकृति मानव समुदाय द्वारा ही उत्पन्न की जा रही है। तात्पर्य यह है कि पर्यावरण प्रदूषण के लिए हर तरह से मनुष्य ही जिम्मेदार है। मनुष्य के हस्तक्षेप से ही पर्यावरण में विकृति बढ़ी है और बढ़ रही है।

वैज्ञानिकों को अब यह स्पष्ट होने लगा है कि पर्यावरण संरक्षण का एकमात्र उपाय है कि मनुष्य डीप इकोलॉजी के सिद्धांतों यानि अध्यात्म को हृदयंगम करे और तदनुरूप व्यवहार स्वयं करे तथा दूसरों को प्रेरणा व मार्गदर्शन दे।

☆ प्रकृति और पर्यावरण चक्र

प्रकृति एक विराट् शरीर की तरह है। जीव-जंतु, वृक्ष-वनस्पति, नदी-पहाड़ आदि उसके अंग-प्रत्यंग हैं। इनके परस्पर सहयोग से यह वृहत् शरीर स्वस्थ और संतुलित रहता है। काया का अपना स्वतंत्र कोई अस्तित्व नहीं होता। कर्मेंद्रियों, ज्ञानेंद्रियों तथा विभिन्न स्थूल अवयवों का वह समन्वित रूप है। परस्पर एक-दूसरे के सहकार द्वारा शरीर के क्रियाकलाप चलते हैं। संतुलित स्वास्थ्य और आरोग्य का लाभ मिलता रहता है। गरिमा किसी भी अंग अवयव की कम नहीं है।

मस्तिष्क शरीर के मूर्द्धन्य भाग पर अवस्थित होता है। विचार करने तथा निर्णय लेने का काम वही सँभालता है, पर मात्र इसी कारण उसे सर्वाधिक उपयोगी नहीं ठहराया जा सकता। अन्य शारीरिक घटक भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। आँख, नाक, कान, जिह्वा से उनकी उपयोगिता भी कम नहीं है; जो श्रमिक, मेहतर की तरह निरंतर कार्यरत रहने, विभिन्न अंगों के लिए पोषण जुटाने, विजातीय द्रव्यों का परिशोधन करने में सतत संलग्न रहते हैं। फेफड़े एवं गुर्दे सबसे निकृष्ट काम सफाई का सँभालते हैं। यदि उनका सहयोग मिलना बंद हो जाए, तो स्वास्थ्य और आरोग्य के लिए खतरा उत्पन्न हो सकता है। तब शरीर अपना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यापार चलाने में अधिक दिनों तक समर्थ बना नहीं रह सकेगा। इसलिए स्वास्थ्य एवं आरोग्य अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए काया के प्रत्येक घटक पर समुचित ध्यान देना पड़ता है।

विराट् प्रकृति के साथ भी यही नियम लागू होता है। उसके प्रत्येक घटक परस्पर एक-दूसरे से अन्योन्याश्रित रूप से जुड़े हुए हैं। सभी अपने में महत्त्वपूर्ण और उपयोगी हैं तथा प्रकृति के व्यापार में उनकी एक अहम् भूमिका है। संभव है—उनकी उपयोगिता स्थूल दृष्टि से जान न पड़े और वे अनावश्यक प्रतीत हों। पर संपूर्ण सृष्टि संतुलन की दृष्टि से वे अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। अपनी ही उपयोगिता की कसौटी पर कसने की मानवीय दृष्टि एकांगी और अदूरदर्शितापूर्ण है। यही कारण है कि वह कितने ही प्रकृति घटकों को अनावश्यक समझता, अपने स्वार्थ के लिए नष्ट करता रहता है। उसका यह प्रयास प्रकारांतर से समूचे इकोलॉजिकल चक्र को प्रभावित करता है। प्रकृति की व्यवस्था में असंतुलन उत्पन्न होता है, जिसकी दुःखद प्रतिक्रिया अनेक प्रकार की प्राकृतिक विपदाओं के रूप में सामने आती है।

प्रकृति विज्ञान की ही एक शाखा इकोलॉजी शास्त्र के विशेषज्ञों का कहना है कि यदि मनुष्य अनावश्यक छेड़छाड़ न करे, तो प्रकृति का गतिचक्र सुव्यवस्थित और संतुलित रूप से चलता रह सकता है। इसमें व्यतिरेक मनुष्य के हस्तक्षेप द्वारा पैदा होता है। समृद्धि बढ़ाने के लिए दूरदर्शी स्थायी नीति अपनाने की अपेक्षा प्रकृति-शोषण की अदूरदर्शी नीतियों के कारण संपूर्ण प्रकृति परिकर असंतुलन का शिकार हुआ है। वे चक्र टूटते जा रहे हैं, जो प्रकृति में विविध रूपों में विभिन्न जड़-चेतन घटकों के सहयोग से गतिशील रहते हैं। इकोलॉजिस्टों के अनुसार इकोलॉजी विज्ञान की बुनियादी धारणा यह है कि प्रकृति के प्रत्येक घटक संतुलन की दृष्टि से उपयोगी हैं, यह एक-दूसरे पर परावलंबी हैं। दुर्भाग्यवश मनुष्य इस सिद्धांत को नहीं समझता; तात्कालिक लाभ की दृष्टि से स्वयं के लिए उपयोगी मानकर वह कितने ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीव-जंतुओं, वृक्ष-वनस्पतियों को अपने स्वार्थवश सतत नष्ट करता रहता है।

विद्वान् पॉलपियर्स का मत है कि यदि सभ्यता को सुरक्षित रखना है, तो इकोलॉजी शास्त्र के अध्ययन-अध्यापन को अन्य उपयोगी विषयों की भांति ही महत्त्व देना होगा। जीव-जंतुओं, वृक्ष-वनस्पतियों तथा अन्य घटकों की महत्ता समझे बिना मनुष्य उनको संरक्षण नहीं देता। प्रकृति चक्र की अन्य कड़ियाँ नष्ट होंगी तो मनुष्य भी अपना अस्तित्व सुरक्षित बनाए रखने में असमर्थ ही सिद्ध होगा।

सर जूलियन हक्सले ने एक बार कहा था कि गतिशीलता संतुलन की मांग करती है, जिसमें विरोधी लगने वाले प्रकृति घटकों का सहयोग अति आवश्यक है। यह तभी संभव है जब दिखने में परस्पर विरोधी लगने वाले जड़-चेतन घटकों के अस्तित्व को सुरक्षित रखा जाए।

इकोलॉजी विज्ञान सृष्टि के समग्र परिसर तथा जीवों एवं वनस्पतियों के परस्पर निकटवर्ती अनुबंधों पर प्रकाश डालता है और इस तथ्य को भलीभांति स्पष्ट करता है कि क्यों क्षुद्र से क्षुद्र जीवों, वनस्पतियों तथा अन्य घटकों का संरक्षण आवश्यक है ! पानी, हवा, रोशनी पेड़-पौधे, पशु-पक्षी तथा मनुष्य सभी एक व्यवस्थित जीवनतंत्र के अविछिन्न अंग हैं, जिनका अस्तित्व एक-दूसरे पर निर्भर है। यह सोचना भयंकर भूल होगी कि, जीवधारियों की अलग स्वतंत्र इकाई है, वृक्ष-वनस्पतियों की अलग और पानी, वायु और प्रकाश की अपनी अलग। वस्तुतः ये सब एक जीवन चक्र के अंग हैं।

जीव-जंतुओं, वृक्ष-वनस्पतियों का सहअस्तित्व परस्पर एक-दूसरे के सहयोग पर टिका हुआ है। एक मरेगा, तो दूसरा भी अपना अस्तित्व सुरक्षित न रख सकेगा। सहअस्तित्त्व का यह उदाहरण सर्वत्र देखा जा सकता है। मनुष्य तथा मनुष्येतर जीव वृक्ष-वनस्पतियों से पोषण प्राप्त करते हैं। जो मांसाहारी जीव हैं,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उन्हें भी परोक्ष रूप से वनस्पतियों से ही जीवनतत्त्व उपलब्ध होता है। जिन पशु-पक्षियों का वे भक्षण करते हैं, उनको पोषण तो शाकाहारी तत्त्वों से ही मिलता है। वृक्ष-वनस्पति मात्र स्थूल आहार ही नहीं देते, जीवन के लिए अन्य आवश्यक तत्त्व भी जुटाते हैं। प्राण के बिना कुछ घंटे भी जीवित रहना संभव नहीं है। यह तत्त्व भोजन से भी अधिक जरूरी है। ऑक्सीजन से मिलने वाला प्राण वृक्षों से ही मिलता है। एक ओर जीव समुदाय को वे पोषण देते हैं और दूसरी ओर उस गरल का पान भी करते हैं, जो मनुष्य तथा अन्य प्राणी श्वास के माध्यम से छोड़ते हैं। कैसी अद्‌भुत व्यवस्था है प्रकृति की यह ! एक का विष दूसरे को जीवन प्रदान करता है। प्राणियों द्वारा श्वास से निस्सृत किया गया विष कार्बन डाइ-ऑक्साइड वृक्ष-वनस्पति जगत् के लिए जीवनदायी होता है।

इस शृंखला की अन्य कितनी ही कड़ियाँ हैं, जो जीवन चक्र को सतत गतिशील बनाए रखने में मदद करती हैं। वनस्पतियों को पोषण जमीन से मिलता है। मिट्‌टी में मौजूद अनेक प्रकार के अगणित क्षुद्र जीव पूरी तत्परता से वृक्ष-वनस्पतियों की खुराक तैयार करने में संलग्न रहते हैं। असंख्यों की संख्या में विद्यमान बैक्टीरिया मिट्‌टी के केंद्रीय कार्बनिक पदार्थों से अपना पालन-पोषण करते और वंशवृद्धि करते रहते हैं। जितना मिट्‌टी से लेते हैं उसका कई गुना वापस लौटाते हैं। उनका मलमूत्र एवं मृत शरीर भूमि की उर्वरता बढ़ाने के काम आ जाता है। कुछ वर्ग फुट जमीन में ही अरबों की संख्या में विद्यमान ये सब जीवन के पूरक घटक बनकर रहते हैं। पौधे की सूखी पत्तियाँ और अंततः स्वयं पौधा भी उन नन्हें जीवों का खुराक बनते हैं, जिनके सहारे वह स्वयं पल रहा था।

जीवन के महाचक्र का अंत यहीं नहीं हो जाता। नये पौधे जन्मते और पुनः वह स्वचालित क्रम चल पड़ता है। मिट्‌टी में अन्य प्रकार के अनेक जीव-जंतु भी इस चक्र के सहभागी हैं। भूमि की उर्वरता बढ़ाने में केंचुए की भूमिका प्रख्यात है। बैक्टीरिया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिट्टी के जिन जीवित तत्त्वों को खाता है, उसका निर्माण केंचुए ही करते हैं। एक केंचुआ छह माह की अवधि में बीस पौंड पोषक कार्बनिक पदार्थ तैयार करके मिट्टी में मिला देता है। इनकी जातियाँ यदि नष्ट न हों, तो दस वर्ष में वे मिट्टी की एक इंच सतह को बढ़ा सकते हैं, जो अत्यंत उपजाऊ होती है। इनका सहयोग न मिले, तो प्रकृति को मात्र एक इंच परत बनाने में पाँच सौ वर्षों का समय लग सकता है। मिट्टी की सड़न को रोकने तथा उत्पादन क्षमता को दीर्घकाल तक सुरक्षित रखने में भी ये केंचुए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मिट्टी के अंदर घर बनाकर स्थायी रूप से निवास करने वाले कीट-दीमक, चींटे भी भूमि की उर्वरता तथा सांद्रता बढ़ाने में केंचुए की तरह ही सहयोग देते हैं।

पदार्थों के सड़ने से गंदगी फैलती है। इसकी रोकथाम की व्यवस्था भी प्रकृति ही करती है। कितनी ही वनस्पतियाँ और जीव-जंतु ऐसे हैं, जो शोधन का कार्य सफाई कर्मचारी की भांति सतत करते रहते हैं। सड़े-गले पदार्थ मृतोपजीवी पौधों का भोजन हैं। वनस्पतियों तथा प्राणियों के मृत शरीरों के जटिल कार्बनिक पदार्थों को अपघटित करने का दायित्व मृतोपजीवी पौधे सँभालते हैं। अपघटन के उपरांत वे नाइट्रोजन, कार्बन, फॉस्फोरस, पोटेशियम आदि विमुक्त करते हैं, जो मृदा में मिलकर उसकी उर्वरा शक्ति में अभिवृद्धि करते हैं। इस तरह वे प्रकृति में कार्बन, नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटेशियम आदि के चक्र को संतुलित बनाए रखते हैं। इस परिशोधन व्यवस्था में शृगाल, लोमड़ी, गिद्ध, कौवा तथा कुत्ते जैसे प्राणियों का भी योगदान है। ये मल-मूत्र, मृतक जीव-जंतु, सड़ती हुई कार्बनिक वस्तुओं आदि को स्वयं खाकर प्रकृति में प्रदूषण फैलाने से बचाते हैं।

अनेक जीव-जंतु ऐसे हैं, जो अप्रत्यक्ष रूप से न केवल मनुष्य के लिए वरन् समूचे पारिस्थितिकी तंत्र को संतुलित बनाए रखने के लिए अत्यंत उपयोगी हैं, पर मनुष्य उन्हें अनुपयोगी मानकर मार देता है। शेर एक मांसाहारी जीव है, जो अनेकों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकार के जंगली जीवों—हिरन, खरगोश आदि को खाता है, उनकी असीम वृद्धि पर नियंत्रण रखता है। उसकी मांसाहारी एवं खूंखार प्रकृति के कारण उसे नष्ट कर देने से संकट उत्पन्न हो सकता है, इसे कोई समझता नहीं। एक समय ऐसा आ सकता है जब शाकाहारी जीव विभिन्न प्रकार के पौधों की प्रजातियों को समाप्त कर देंगे, इससे वातावरण में हानिकर परिवर्तन हो सकता है। अतएव इन मांसाहारी जीवों का संरक्षण भी आवश्यक है। मोर तथा अन्य प्रकार के अनेक कीटभक्षी चिड़ियाँ विभिन्न तरह के हानिकारक कीड़ों को खा जाती है। यदि इन्हें नष्ट कर दिया जाए, तो पौधों में रोग लगने जैसी कितनी ही समस्याएँ पैदा हो सकती हैं।

वृक्ष-वनस्पतियों से युक्त जंगलों का सफाया करने से भी भयंकर परिणाम प्रस्तुत हो सकते हैं। वृक्षों की जड़ें भूमि की गहराई तक जाती हैं और मिट्टी के कणों को मजबूती से जकड़े रहती हैं। फलस्वरूप भूमि का कटाव नहीं होता। जड़ों से विभिन्न प्रकार के कार्बनिक पदार्थ तथा एन्जाइम्स निकलते रहते हैं, जो चट्टानों को तोड़कर मिट्टी के कणों में बदलते हैं तथा मृदा में पाए जाने वाले अनेक प्रकार के सूक्ष्मजीवों-बैक्टीरिया आदि को आवास प्रदान करते हैं। चिड़ियों तथा अनेक जंतुओं का निवास भी वृक्षों पर होता है। पौधों की सतह से श्वसन द्वारा जल का उत्सेक होता रहता है, जिससे वातावरण में नमी बनी रहती है और वर्षा अच्छी तरह होती है। यदि जंगलों को संरक्षण न दिया गया, तो समूचा इकोलॉजिकल चक्र परिवर्तित होकर मानवजीवन के लिए प्रतिकूल परिस्थितियाँ पैदा कर सकता है।

इकोलॉजिकल चक्र में प्रकृति के छोटे-बड़े प्रत्येक जीव-जंतु पेड़-पौधों का योगदान है। प्रकृति ने लाखों-करोड़ों वर्षों के प्रयासों के बाद इस चक्र को सुव्यवस्थित बनाया है। पृथ्वी पर जीवन का प्रादुर्भाव उन अथक प्रयासों का ही प्रतिफल है। अधिक अच्छा हो यदि मनुष्य भी उस विराट् प्रकृति-तंत्र का एक सहयोगी घटक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बनकर रहे और अनावश्यक छेड़छाड़, हस्तक्षेप को बंद करे। तभी वह प्रकृति से चिरकाल तक लाभ उठाता रह सकता है।

☆ प्रकृति संतुलन बिगाड़ने का प्रतिफल

प्रकृति गो माता की तरह उपकारी भी है और आक्रामक सिंहनी की तरह खूँखार भी। गाय को ठीक तरह पालने वाले उससे दूध, बछड़े आदि के रूप में बहुत कुछ प्राप्त करते हैं, किंतु जो सिंहिनी की माँद पर पत्थर फेंककर उसे छेड़ने पर उतारू होता है उन्हें बदले में ऐसा दंड भी सहना पड़ता है, जिसे देखने वाले तक कुछ नसीहत ग्रहण कर सकें। दर्पण में अपना ही मुँह दीखता है। गुंबज में अपनी ही आवाज गूँजती है। छाया उसी दिशा का अनुगमन करती है, जिसे चलने वाला अपनाए हुए होता है। प्रकृति व्यवस्था और उसकी रीति-नीति भी इसी प्रकार की है।

विषपान जैसे उद्धत आचरण करने वाले मौत के मुँह में जाते रहते हैं। जिन्हें आरोग्य से प्रेम है, वे बलिष्ठ बनने के लिए आवश्यक संयम-व्यायाम अपनाते और कुछ ही दिनों में पहलवान बन जाते हैं। क्रिया की प्रतिक्रिया का यह नियम सर्वत्र-सर्वदा चलता रहता है। भोजन पकने में भी कुछ देर तो लग ही जाती है। आँवे में कुम्हार के बर्तन तत्काल ही कहाँ पकते हैं ? बीज को वृक्ष बनने में भी देर लगती है। इस विधा को गंभीरतापूर्वक न समझ पाने वाले आतुर लोग ही ऐसा सोचते हैं कि कोई कुछ भी मनमर्जी का करते रह सकता है और अपनी चतुराई के बल पर परिणति की सुनिश्चित विधा से बचा रह सकता है; पर अदूरदर्शी समझ प्रायः गलत ही निकलती है।

निजी जीवन में किए गए भले-बुरे कृत्यों का परिणाम व्यक्तिगत रूप से भुगतना पड़ता है, पर जो गतिविधियाँ सामूहिक प्रचलन के रूप में चल पड़ती हैं, उनका प्रतिफल समूचे समाज में संसार को भुगतना पड़ता है। कारण कि हर मनुष्य एक सभ्य समाज का अविच्छिन्न अंग है। उसका कर्तव्य बनता है कि न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

केवल स्वयं सही रीति-नीति को अपनाए, वरन् दो कदम आगे बढ़कर अन्यान्यों को भी अनीति छोड़ने एवं नीति अपनाने के लिए प्रभावित एवं बाधित करें। जो अपनेपन की परिधि निजी जीवन तक ही सीमित करना चाहते हैं, वे भूल करते हैं। जब उनका निर्वाह और विकास सार्वजनिक सहयोग के आधार पर चलता है, तो कोई कारण नहीं कि सामाजिक गतिविधियों की उपेक्षा की जाए। छत की मजबूती देखना और समय रहते सँभालना उन सभी का कर्तव्य था, जो कि उसके नीचे बैठकर ऋतुप्रवाह से बचने का लाभ उठाते थे। सावधानीमात्र अपने संबंध में ही बरती जाए, यह पर्याप्त नहीं। समुदाय के एक अविच्छिन्न अंग होने के नाते हर किसी का यह कर्तव्य बनता है कि अन्यान्यों की गतिविधियों का पर्यवेक्षण का और समर्थन देने या विरोध करने का निश्चय करे।

इन दिनों प्रकृति मनुष्य समुदाय से रुष्ट है। जो कुछ चल रहा है, उसे देखते हुए लगता है कि वह अगले दिनों आपे से बाहर होने के स्तर का क्रोध व्यक्त करेगी। इस संभावना के संबंध में सूक्ष्मदर्शी लोग बुरी तरह आशंकित और आतंकित हैं। अदृश्य जगत् में चल रही गतिविधियों का गंभीर पर्यवेक्षण करने वालों का कथन है कि वातावरण का तापमान 'ग्रीन हाउस प्रभाव' के कारण तेजी से बढ़ रहा है। यही क्रम चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं, जब ध्रुवों की बर्फ तेजी से गलेगी और समुद्र के पानी की सतह मीटरों ऊँची उठ जाएगी, जिससे समुद्र तट पर बसे हुए नगर तथा नीचे बसे भू-भागों में इतना पानी भर जाएगा, जिसमें वर्तमान आबादी और संपदा का बहुत बड़ा भाग उस विपत्ति के गर्भ में चला जाएगा।

नदियों-जलाशयों में औद्योगिक कारखानों का कचरा तथा उस क्षेत्र के निवासियों द्वारा उत्पन्न होते रहने वाली गंदगी गिरते रहने का अनुपात निरंतर बढ़ रहा है। फल यह होता है कि इन जलाशयों में रहने वाले जीव-जंतु मर जाते हैं और गंदगी की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सफाई के जिस कार्य को वे निरंतर करते रहते थे, वह समाप्त हो जाता है। उस जल को समुद्री पानी की तरह न तो सिंचाई में काम लिया जा सकता है और जो उसे पीकर जीवित रहते हैं, न उनके जीवित रहने का कोई आधार बचता है। उस स्थिति में कितने लोग स्वस्थ रह सकेंगे, कितने जीवित बचेंगे ? यह कहा नहीं जा सकता। जापान की 'मिनी माता' क्षेत्र की बीमारी की विभीषिका अपने ढंग की अनोखी विपत्ति है, जो इन दिनों के औद्योगीकरण से पूर्व कभी भी सामने नहीं आई। इससे किस प्रकार विश्व स्तर पर निपटा जा सकेगा, कुछ कहा नहीं जा सकता। सरिता, समुद्रों एवं जलाशयों को विषाक्त करने के मूल्य पर बढ़ाई जा रही सुविधा और संपदा तब कितनों के लिए कितने काम आ सकेगी ? इसकी भयावह कल्पना कर सकना किसी के लिए भी कुछ कठिन नहीं होना चाहिए।

आहार, जल और वायु यह तीन जीवन की प्रारंभिक आवश्यकताएँ हैं। आहार में कमी इसलिए पड़ती जा रही है कि धरती की उर्वरता जितना उत्पादन कर सकती है, उसकी एक सीमा है, पर खाने वाली जनसंख्या तो दिन-दूनी और रात चौगुनी बढ़ती जा रही है। उन सबके लिए खुराक आएगी कहाँ से ? शहरों की तेजी से अभिवृद्धि और कारखाने, निवास-आवासों का विस्तार भी उपजाऊ जमीन को निरंतर हड़पता जा रहा है। शेष जितनी भूमि बचती है, वह बढ़ी हुई आबादी के लिए निश्चित रूप से अपर्याप्त होगी। उससे इतना उत्पादन कहाँ हो सकेगा, जिसके आधार पर हर किसी का पेट भर सकेगा ? यह भुखमरी की पूर्व तैयारी है, जिसे उत्साहपूर्वक अपनाया जा रहा है।

अधिक उत्पादन की आवश्यकता को देखते हुए ऐसे तात्कालिक लाभों को ही सब कुछ मान बैठने की नीति अपनाई जा रही है। भले ही उसका दुष्परिणाम अगले दिनों कितने ही भयंकर रूप में सामने क्यों न आ खड़ा हो ? इस संदर्भ में उर्वरता बढ़ाने के लिए रासायनिक खादों का और फसलों को बचाने के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिए कीटनाशक दवाओं का अंधाधुंध प्रयोग चल पड़ा है। रासायनिक खाद अपना जादुई चमत्कार दिखाकर कुछ दिनों उत्पादन तो अधिक कर सकती है, पर उनके कारण धरती की भौतिक उर्वरता नष्ट होने पर भविष्य में ऊसर-बंजर के रूप में खेतों की परिणति हो जाने का खतरा नजर अंदाज ही किया जा रहा है। इसी प्रकार कीटनाशक औषधियाँ उस खाद्य का अंग बनती हैं, जिसे इन विषों के माध्यम से बचाया गया था। विषैली वनस्पतियों की फसल मनुष्यों, पशु-पक्षियों को हानि पहुँचाती हैं। इन प्राणियों तथा जलाशयों के माध्यम से वे मनुष्यों के शरीरों में भी जा पहुँचती हैं। एक अध्ययन के अनुसार यह मात्रा ०.१ से ०.३ पार्ट पर मिलीयन (पी० पी० एम०) तक पाई गई है।

आहार और जल के क्षेत्र का संकट अगले दिनों भयावह रूप में उत्पन्न होने जा रहा है। इसका अनुभव सामान्यजनों को भले ही न लगे, पर जो परिस्थितियों का विश्लेषण कर सकता है उन विशेषज्ञों के लिए यह तथ्य मानवीय विकास के साथ दिन-दिन भयावह होता हुआ और निकट आ रहा स्पष्ट दीख पड़ता है।

अंतरिक्ष में शुद्ध वायु की एक सीमित मात्रा है, जिसे साँस द्वारा ग्रहण करके प्राणी जीवित रहता है। इस क्षेत्र में कारखाने का धुआँ, अन्यान्य कामों में प्रयुक्त होने वाले ईंधन वायुमंडल में विकिरण की मात्रा निरंतर बढ़ाते जा रहे हैं। उसके परिशोधन के लिए वृक्षों का अस्तित्व ही सबसे बड़ी ढाल रही है। अब वनों की कटाई भी बुरी तरह हो रही है। ईंधन की, फर्नीचर की, इमारतों, खेतों तथा निवास की बढ़ती हुई आवश्यकता मात्र एक ही हल सुझाती है कि वृक्ष संपदा को तेजी से काटकर उपरोक्त तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति की जाए। लोग इस कारण होने वाले वर्तमान तथा भावी विपत्ति की विभीषिका को सुनते-समझते तो हैं, पर ऐसा कुछ कर नहीं पाते, जिससे वनों का विनाश कारगर ढंग से रोका जा सके। भले ही यह मजबूरी हो, पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसका परिणाम तो भुगतना ही पड़ेगा। साँस के काम आने वाली हवा निरंतर दूषित और गरम होती जा रही है। फलतः प्राणी समुदाय की जीवनी शक्ति घटने से अनेकानेक चित्र-विचित्र रोगों का शिकार होना पड़ रहा है।

तेजी से बढ़ते हुए रेगिस्तान, उपजाऊ भूमि को बेदर्दी से उदरस्थ करते चले आ रहे हैं। लगातार बाढ़ें आती हैं। एक अनुमान के अनुसार प्रतिवर्ष छह से सात हजार मिलीयन टन भूमि की ऊपरी उपजाऊ परत बहकर समुद्र में चली जाती है। जड़ों के कारण भूमि में जो नमी बनी रहती थी, उसका वृक्षों का आधार न रहने से कुओं का पानी निरंतर गहरा होता जाता है, जिसे ऊपर खींचने में महँगी मेहनत तो लगती ही है, साथ ही पानी भी कम मात्रा में मिलता है। एक ओर नए सुविधा-साधनों के लिए पानी की आवश्यकता में असाधारण वृद्धि होती चले जाना और दूसरी ओर उसकी शुद्धता तथा मात्रा में कमी पड़ना ऐसा संकट है, जिसका समाधान सहज नजर नहीं आता। ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत समय से जंगलों से ही लाकर लकड़ी प्राप्त कर ली जाती थी, पर अब वे स्रोत समाप्त प्रायः होते जाने से गोबर के उपले जलाने के अतिरिक्त और कोई चारा बन नहीं पा रहा है। इसके कारण खेतों में उपयुक्त खाद न पहुँचने का जो विकट संकट खड़ा होने जा रहा है, उससे किसी को भी बेखबर नहीं रहना चाहिए।

प्रकृति के साथ असाधारण रूप में की गई छेड़छाड़ उसे दबाने-दबोचने जैसा है। मनुष्य को जितना अधिकार और हिस्सा सहज रूप से मिला है, उतने से संतुष्ट न रहकर अन्य प्रयोजनों के लिए प्रकृति के गर्भ में छिपाकर रखी गई संपदा का असाधारण उत्खनन हो रहा है। कोयला, गैस, तेल आदि को धरती की नीची परतों से उखाड़कर ऊपर लाया जा रहा है। धातुओं की बढ़ती आवश्यकता भू-गर्भ के असाधारण उत्खनन से ही उपलब्ध की जा रही है। यह सीमित भंडार एक शताब्दी तो दूर पच्चीस वर्षों से भी कम समय तक काम आ सकने योग्य बचाना है। उसके समाप्त हो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाने पर यांत्रिक सभ्यता, ऊर्जा साधनों के अभाव में बेमौत मरेंगी और फिर मानवीय श्रम तथा पशु श्रम पर ही उन कार्यों का आधार शेष रहेगा, जो इन दिनों विशालकाय कारखाने, द्रुतगामी वाहनों, विशाल जलयानों द्वारा पूरा किया जाता है। सब कुछ विषाक्त कर लेने के उपरांत भी यदि वैकल्पिक व्यवस्था स्थायी रूप से न बन पड़ी, तो इसे शीतनिवारण के लिए घर की झोपड़ी जला लेने जैसी अदूरदर्शिता ही कही जाएगी।

क्रुद्ध प्रकृति, बाढ़, भूकंप, भू-विस्फोट, तूफान, महामारी, सूखा, दुर्भिक्ष जैसे संकट महाविनाश की विभीषिका लेकर सामने आ खड़ी हुई है। अंतरिक्ष की ओजोन परत में छेद हो जाने के कारण लगता है कि ब्रह्मांडीय किरणों की बौछार धरती पर होगी और उनके कारण प्रचलित व्यवस्था में भारी गड़बड़ी होगी। एक-दूसरे प्रकार के वैज्ञानिक सर्वेक्षण ने यह निष्कर्ष निकाला है कि अब हिमयुग अति निकट है। पिछली जल-प्रलय, हिम-प्रलय अपनी-अपनी अवधि में धरती का नक्शा ही बदलकर रख गई हैं और उनके कारण ऐसा कुछ हो गया है कि इससे पूर्व की दुनिया और आज की दुनिया में असाधारण रूप से अंतर उत्पन्न हो गया है। अगले दिनों भी कुछ इसी प्रकार की उथल-पुथल हो, तो किसी को आश्चर्य नहीं मानना चाहिए।

मनुष्यकृत सामूहिक दुष्कर्मों का एक बड़ा पाप युद्धोन्माद है। अपना वर्चस्व, आधिपत्य बढ़ाने के लिए समर्थ राष्ट्र कोई न कोई बहाना ढूँढ़कर ऐसा युद्ध मनुष्य समुदाय पर लादने की तैयारी कर रहे हैं, जिसके दुष्परिणामों में आक्रमक भी अछूता न बच सके। आयुधों में बढ़-चढ़कर प्रमुखता प्राप्त करने और उन्हें दिग्भ्रांत कर, उकसा कर खरीदने के लिए बाधित करने वाला दुष्चक्र कम तेजी से नहीं घूम रहा है। महायुद्ध भले ही दूर हो, पर छुटपुट क्षेत्रीय युद्ध तो अनेक स्थानों पर आए दिन चलते ही रहते हैं। इनके स्थानीय कारण भी हो सकते हैं, पर प्रमुख कारण है कि आयुधों के निर्यात की मंडी खोजना। वर्चस्व स्थापित करके नई मंडियों को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने प्रभावक्षेत्र में लेना। इस निर्माण के कारण भी विकिरण पैदा होता है व उसे देखते हुए लगता है कि रासायनिक एवं आणविक आयुध संग्राम में प्रयुक्त न होने पर भी अपने निर्माण एवं भंडार के लिए ही अपार धनजन का, कौशल एवं साधनों का विनाश कर चुके होंगे। यह मानवता के प्रति अपराध है। इसे रोकने के लिए उन्हें आगे बढ़कर प्रयत्न करना चाहिए, जो विश्व शांति की उपयोगिता एवं आवश्यकता समझते हैं।

उपर्युक्त विनाश-विभीषिकाएँ काल्पनिक नहीं, वास्तविक एवं तथ्यों पर आधारित हैं। इनको रोकने के लिए प्रकृति-प्रकोप को शांत करना होगा। इसका उपाय एक ही है कि पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा कर उस मनःस्थिति को बदलने का समर्थ एवं व्यापक प्रयत्न किया जाए, जो अनाचार को प्रश्रय देती और विनाश को न्यौत-न्यौतकर बुलाती है। इस समाधानकारक उपाय का नाम ही है—'विचार क्रांति अभियान।' जिसमें हर विचारशील को सम्मिलित होना चाहिए।

☆ पर्यावरण चक्र का खतरनाक स्वरूप

जीवनी शक्ति का भंडार चुकते जाने पर मनुष्य क्रमशः अशक्त होता जाता है। बुढ़ापा घेर लेता है। क्रमशः बीमारियाँ घर बनाने लगती हैं। उनकी अनुपयोगिता और अशक्तता को देखकर प्रकृति परिवर्तन की नई व्यवस्था बनाती है। मृत्यु आ धमकती है। काया की अंत्येष्टि कर दी जाती है और नये जन्म की व्यवस्था चल पड़ती है; ताकि नए उत्साह से, नई शक्ति से, नए काम कर सकने की समर्थता प्राप्त हो सके। यही प्रकृति चक्र सर्वत्र चलता है, सृष्टि के सृजन और अंततः महाप्रलय का दुर्दिन आ धमकने के रूप में भी। साँप के ऊपर की त्वचा जब बोझिल और भारभूत हो जाती है, तो वह उतार फेंकता है, ताकि नई स्फूर्ति के साथ अगले दिनों अधिक तत्परता बरतने में सक्षम हो सके। पुराने वस्त्र जीर्ण-शीर्ण हो जाते हैं, तब उनका उपयोग कूट-पीटकर कागज

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बनाने आदि के रूप में कर लिया जाता है। लोहे की कतरन और उसकी बनी टूटी-फूटी वस्तुएँ जब निकम्मी हो जाती हैं, तो उन्हें भट्ठी में तपाकर गलाया जाता है और ऐसा कुछ बनाया जाता है, जो ढलने पर आवश्यक कार्यों में प्रयुक्त होकर अपनी उपयोगिता सिद्ध कर सके। पत्ते पुराने पड़ने पर भूमि पर गिर पड़ते हैं और सड़कर खाद के रूप में उस भूमि की उर्वरता बढ़ाते हैं, जो पेड़ और वनस्पतियाँ उत्पन्न करने के उद्गम हैं। परमाणुओं से लेकर सौरमंडलों, नीहारिकाओं और ब्रह्मांडों में भी यह परिवर्तनचक्र अपने-अपने ढंग से सर्वत्र चलता रहता है। यह गंदगी, अशक्तता ही नहीं, उच्छृंखलता भी नियति को स्वीकार नहीं। जो अनुपयुक्त है उसे हटाने, जो उपयुक्त है उसे उगाने-बढ़ाने की प्रक्रिया इस सृष्टि में निरंतर चलती रहती है। यह प्रत्यक्ष भी है, तथ्य भी है और आवश्यक भी।

मनुष्य को प्राणियों में श्रेष्ठ और संपन्न अवश्य बनाया गया है। उसे इच्छा शक्ति के आधार पर बहुत कुछ भला-बुरा करते रहने की छूट भी मिलती है, इतने पर भी यह विश्वव्यापी नियम-अनुशासन मनुष्यों पर भी लागू होता है कि वे जब तक मर्यादाओं का पालन करें, सीधी राह चलें, तब तक उसकी स्थिरता बनी रहे और प्रगतिक्रम चलता रहे। व्यवधान उत्पन्न करने पर भटकाव-टकराव के रूप में परिणत होता है। समय रहते यदि अवांछनीय गति या दिशा को न बदला गया, तो फिर अवांछनीयता को उलट देने वाली विश्वव्यवस्था अपना काम करती है। इस निमित्त उसका हंटर इतना जोरदार भी होता है, जो तिलमिलाकर रख दे और दुर्बुद्धि एवं अनाचार की राह से हट जाने के लिए बाधित कर दे। परिवर्तन की संधि वेलाएँ इसी कारण बड़ी कटु, कर्कश एवं भयावह होती हैं।

पिछले दिनों से कुछ ऐसा ही कुचक्र चल रहा है, जिसमें लिप्सा और महत्त्वाकांक्षा के संदर्भ में अतिवाद बरता जा रहा है। नियति के स्वाभाविक क्रम से काम चलना अपर्याप्त लग रहा है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जल्दी से जल्दी, अधिक से अधिक सुविधा प्राप्त करना, लिप्सा की तृप्ति में मदांध जैसी स्थिति बना लेना ऐसा है, जिसे विश्व व्यवस्था सहन नहीं कर सकती। इंजन जब पटरी छोड़कर मनमानी दिशा में चलने के लिए व्यग्र होता है, तो रेल के अनेक डिब्बे उलट जाते हैं और उस लाइन पर यातायात बंद हो जाता है। ऐसी ही परिस्थितियाँ इन दिनों भी बन रही हैं। सरल निर्वाह और नीति-मर्यादा के शाश्वत प्रचलन इन आतुरता के दिनों में उसे रास नहीं आ रहे हैं। आकुलता, आतुरता, व्यग्रता, उद्विग्नता इस स्तर तक जा पहुँची है कि जो कुछ पाया जा सकता है, उसे कुछ ही क्षणों में प्राप्त कर लिया जाना चाहिए, भले ही उसके लिए कितना ही अनाचार क्यों न बरतना पड़े ! भले ही उस निमित्त मर्यादाओं और वर्जनाओं को उद्दंडता स्तर तक की अवमानना क्यों न करनी पड़े ! अंधी दौड़ लगाने वाले खड्ड में गिरते और अपने पैर तुड़ा बैठते हैं। इसका ध्यान तब नहीं आता जब कोई आवेशग्रस्त हो। नशे की उन्मत्तता में लोग न जाने क्या-क्या बकते और क्या-क्या करते हैं ! भले ही उसके लिए पीछे कितनी ही हानि उठानी पड़े, कितनी ही भर्त्सना सहनी पड़े और कितना ही परिश्रम करने के लिए बाधित क्यों न होना पड़े !

प्रस्तुत परिस्थितियों का निरीक्षण-परीक्षण करने पर मानवीय चिंतन, चरित्र और व्यवहार पर ऐसा ही अदूरदर्शी विवेकहीनता का घटाटोप छाया दीखता है। वैयक्तिक और सामूहिक प्रयासों में इतनी अधिक विकृतियों की भरमार है कि कई बार तो यहाँ पर सोचना पड़ता है कि लोगों के होश-हवाश दुरुस्त हैं भी या नहीं। वे दूरदर्शिता की हर रीति-नीति का उल्लंघन करके कुबेर जैसे वैभव और इंद्र जैसा वर्चस्व जादुई फुर्ती के साथ हस्तगत करने के लिए आकुल-व्याकुल तो नहीं हो रहे हैं ! यदि ऐसा है तो वे गगनचुंबी महत्त्वाकांक्षाओं को तो पूरा कर न सकेंगे, इस उन्माद में ऐसा घाटा उठा लेंगे, जिसकी पूर्ति फिर कभी संभव न हो सके। नित्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक सोने का अंडा देने वाली मुर्गी का पेट चीरकर एक ही दिन में सारे अंडे निकाल लेने की आतुरता में पालने वाले को उस मुर्गी से भी हाथ धोना पड़ा था। अतिवाद के उन्माद में ग्रस्त अतिशय महत्त्वाकांक्षी प्रायः ऐसे ही जोखिम उठाते देखे गए हैं।

क्रिया की प्रतिक्रिया पर विचार करना जो छोड़ देते हैं, वे ही असंभव स्तर की छलांगें लगाते हैं और उसका दुष्परिणाम भुगतते हैं। इन दिनों प्रगति की बे-लगाम दौड़ में लगे मनुष्य को यह नहीं सूझ पड़ रहा है कि उसकी अनुचित क्रिया की ऐसी प्रतिक्रिया भी हो सकती है, जो सर्वनाशी विभीषिका बनकर सामने आ खड़ी होगी। इस ओर प्रायः लोकमानस का ध्यान ही नहीं जा रहा है और प्रचलन में ऐसे तत्त्वों का समावेश हो रहा है, जो भविष्य को अंधकारमय बनाने के अतिरिक्त और कुछ कर ही नहीं सकते।

तत्काल की उपलब्धि को ही बुद्धिमत्ता मान बैठने वाले आमतौर से पीछे असाधारण विपत्ति में फँसते हैं। बिना परिश्रम एक जगह ही एकत्रित बहुत सारा चारा-दाना देखकर चिड़ियों के झुंड वहाँ उतर पड़ते हैं। कुछ ही क्षण बीतते-बीतते वह समुदाय बहेलिये की झोली में जा पहुँचता है और प्राण गँवाने जैसी दुर्गति सहता है। आटे के लोभ में मछलियाँ भी इसी प्रकार पकड़ी जाती हैं। चासनी के कढ़ाव को क्षण भर में उदरस्थ कर जाने की ललक में मक्खियों के पंख फंसते हैं और तड़फते हुए प्राण निकलते हैं। आतुरतावादी अदूरदर्शिता के इन दुष्परिणामों को यदि समझा जा सके, तो उस ओर कदम बढ़े, जिसमें औचित्य की मर्यादाओं का पालन करना पड़ता है, और क्रमिक गति अपनाते हुए मंजिल पार की जाती है।

इन दिनों मनुष्य समुदाय द्वारा जिन अवलंबनों को अपनाया जा रहा है, वे सभी विचारणीय हैं। गाँवों की आबादी शहरों की ओर भाग रही है। वहाँ उन्हें अधिक कमाने के, अधिक सुख-सुविधा के आकर्षक साधन दीख पड़ते हैं। फलतः यह प्रवाह बरसाती नाले की तरह उफनता और उमड़ता चला जा रहा है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसके दो दुष्परिणाम हो रहे हैं। पहला गाँवों से प्रतिभाओं का पलायन, जिसके कारण उन्हें प्रगति व्यवस्था और समस्वरता से वंचित होना पड़ रहा है। दूसरी ओर शहर इतने बड़े होते जाते हैं, जहाँ निवास तक के लिए कोई प्रबंध नहीं। फुटपाथों पर पड़े रहने वाले, झोपड़-पटिट्यों की गंदगी में, गली-कूचों की घिचपिच में किसी प्रकार समय गुजारने वाले अनेक शारीरिक-मानसिक रोगों से ग्रसित होते हैं, असुविधा भरे जीवन का भार ढोते-ढोते अकाल मृत्यु मरते हैं। सामाजिक बुराइयों का जन्म ऐसी ही घिनौनी परिस्थितियों में होता है, जो अपनी चपेट में उन लोगों को भी लिए बिना नहीं रहती, जो अपने को सुखी-संपन्न मानते हैं। गंदगी के वातावरण में घिचपिच रहने की व्यवस्था एक अपने ढंग का अभिशाप है, जो बढ़ता ही जाता है, भले ही उसका दुष्परिणाम गाँवों और शहरों के, दोनों ही क्षेत्रों के निवासियों को कितनी ही बुरी परिस्थितियों में रहने के लिए विवश करता हो।

अनियंत्रित जनसंख्या की अभिवृद्धि भी ऐसी ही विपत्ति है, जिसका बेमौत मरने के अतिरिक्त और कोई परिणाम निकल नहीं सकता। धरती की परिधि सीमित है। उसके उर्वर क्षेत्र भी सीमित हैं। उर्वरता की भी एक मर्यादा है। उसे अत्यधिक नहीं बढ़ाया जा सकता, पर जिस तेजी से जनसंख्या बढ़ रही है, उसके अनुपात से तो दिन-दूनी रात चौगुनी निर्वाह सामग्री बढ़नी चाहिए। खाद्य-पदार्थ ही नहीं, वस्त्र, ईंधन, निवास, यातायात, शिक्षा, चिकित्सा आदि के लिए अर्थ साधन भी पर्याप्त मात्रा में चाहिए ही। यदि वे न मिलें तो अभावग्रस्तता ही असंख्य विपत्तियों का कारण बनेगी। उस कुचक्र में फँसकर बढ़ते हुए प्रजनन पर गाज गिरेगी। साधनों के अभाव में भी जीवन उपज तो सकता है, पर निर्वाह नहीं कर सकता। प्रगति के आवश्यक आधार भी उपलब्ध नहीं कर सकता। ऐसी दशा में घुट-घुटकर, पिस-पिसकर, गल-गलकर मरने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं। यह दुर्गति पिछड़े देशों में अभी भी सामने है। अगले दिनों संपन्न देश भी इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कुचक्र में पिसने से बच न सकेंगे। महामारियाँ फैलती हैं, तो एक सिरे से दूसरे सिरे तक का सफाया करती है। वे वर्ग भेद नहीं करतीं। अग्निकांड, बाढ़, अकाल जैसी विपत्तियाँ भी न्यूनाधिक मात्रा में सभी को प्रभावित करती हैं। बढ़ती जनसंख्या जब धरती की भार वहन क्षमता से आगे निकल जाती है, तो उस असंतुलित उत्पादन की अकाल मृत्यु ही निश्चित है। चुहे, कुत्ते, शूकर आदि अमर्यादित प्रजनन करते हैं, पर उस उत्पादन का दर्दनाक ढंग से कुछ ही समय में अंत हो जाता है। मनुष्यों का अंत भी इसी कारण दुर्गति के गर्त में गिरकर बेमौत मरने के रूप में होता दीख पड़ता है।

औद्योगिक सभ्यता अपने आप में एक विपत्ति है। उसका स्वरूप अनावश्यक रूप में बढ़ने पर कुछ ही श्रमिकों को काम मिल पाता है। जिन गृह-उद्योगों के सहारे प्रायः सभी को रोजी-रोटी मिल सकती है, उनका बड़ी मशीनों की तुलना में ठहरना कठिन हो जाता है, फलतः बेकारी, बेरोजगारी का अनुपात अत्यधिक तेजी से बढ़ता है। खाली समय शैतानी के तौर-तरीके अपनाकर वे किसी प्रकार अपने को जीवित रखते हैं। अपराधों की वृद्धि का यह भी एक बहुत बड़ा कारण है।

मशीनरी युग कारखानों पर निर्भर है। प्रतिद्वंद्विता में यह अभिवृद्धि और भी तेज होती चली जाती है, फलतः अमीरी और गरीबी की खाई और भी अधिक चौड़ी होती जाती है। कारखानों से जो धूम्र प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण उत्पन्न होता है, उसका प्रभाव समूची पृथ्वी एवं उसके वातावरण पर पड़ता है। उसकी घुटन हर प्राणी की काया एवं चेतना में विषाक्तता उँड़ेलती जाती है। इन्हीं कारखानों को, वाहनों को चलाने के लिए भूमिगत कोयला, तेल, धातु भंडार आदि का तेजी से उत्खनन होता जाता है। यह क्रम इसी प्रकार चलता रहा, तो एक शताब्दी से भी कम समय में भूगर्भ का सारा सत्त्व निचुड़ जाएगा। तब न कारखाने चलेंगे, न वाहन दौड़ेंगे। सुविधा और संपदाओं के अभ्यस्त लोगों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को जब ग्राम संस्कृति की ओर लौटना पड़ेगा, तो फिर उस परिवर्तन से जो आघात लगेगा, उसे सह सकना भी कठिन हो जाएगा।

बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ उपभोगपरक आवश्यकताएँ बढ़ाने की भी प्रतिस्पर्धा लगी हुई है। सीमित-संयमित रहने की बात कोई सोचता तक नहीं। ऐसी दशा में मकान, फर्नीचर और कागज जैसे साधनों के लिए वन कटते जा रहे हैं। वृक्ष-वनस्पतियों से जमीन छीनकर मनुष्यों के निवास, उद्योग आदि में काम लाई जा रही है। फलतः वृक्ष कटते जा रहे हैं। वन सिकुड़ते जा रहे हैं। इस अनाचार की असंख्य हानियाँ हैं। वायु-प्रदूषण का संशोधन हो नहीं पाता, फलतः प्राणियों को साँस के साथ विषाक्तता भी निगलनी पड़ती है, जिसका प्रभाव स्वास्थ्य-संतुलन और भावी पीढ़ियों में अवांछनीय अपंगता बढ़ते जाने के रूप में सामने आता है। वन्य प्राणियों का जीवन संकट में पड़ने से वहाँ की उर्वरता घटती है। जड़ें पानी को सोखती हैं और कटाव को रोकती हैं। वे जब रहेंगी नहीं, तो बाढ़ आएगी, भूक्षरण होगा और पानी मिलने की सतह कुँओं में गहरी होती चली जाएगी। वर्षा में कमी आएगी और रेगिस्तान का अधिकाधिक विस्तार होता चला जाएगा। मनुष्य वनस्पतियों के सहारे ही जीवन धारण करता है। वे यदि कटती-घटती जाएँगी, तो मनुष्य समेत सभी प्राणियों को आहार, पानी और शुद्ध वायु की कमी पड़ेगी और सभी के लिए जीवन संकट आ खड़ा होगा। वृक्ष-वनस्पतियों और वन-क्षेत्र का घटते जाना प्राणि जगत् के लिए सर्वनाश जैसी खतरे की घंटी है, जिससे समय रहते पग पीछे हटा लिया जाए तो ही ठीक है।

अणु शक्ति का अभिवर्द्धन प्रारंभ में युद्ध प्रयोजन के लिए किया गया था। अब भी हो रहा है। वह हुआ तो निश्चित है कि धरती का वायुमंडल ऐसा हो जाएगा, जिससे मनुष्य तो क्या कोई भी प्राणी जीवित न रह सकेगा। युद्ध के अतिरिक्त अणु शक्ति का उपयोग अब ऊर्जा उत्पादन के निमित्त भी तेजी से हो रहा है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसका परिणाम वायुमंडल में रेडियोधर्मिता का विकिरण बढ़ते जाने के रूप में होगा। यह वायु प्रदूषण से भी अधिक भयंकर है। अंतरिक्ष में भरते जाने वाला विकिरण सभी को रेडियोधर्मी बना देगा और कैंसर जैसे रोगों और अपंगता तथा चित्र-विचित्र विकृतियों से सभी को आहत होना पड़ेगा। भावी पीढ़ियाँ ऐसी होंगी, जो प्रगतिशील पुरुषार्थ कर सकना तो दूर अपने पैरों पर खड़ी हो जाने योग्य भी न रहेगी। अणु संयंत्रों से बची हुई राख को जहाँ भी डाला जायेगा, वहाँ के इर्द-गिर्द सर्वनाश जैसी स्थिति ही बन पड़ेगी।

भूमि में रासायनिक खादों की भरमार, कीटनाशक दवाओं का अंधाधुंध प्रयोग भी ऐसे कुप्रचलन हैं, जिनसे तत्काल कुछ लाभ भले ही न दीखता हो, पर भविष्य में उनके कारण उत्पन्न हुई विपत्तियाँ इतनी अधिक होंगी, जिनसे बचकर जीवनीशक्ति का अस्तित्व बनाए रहना कठिन पड़ेगा।

ऐसे-ऐसे अनेक संकट हैं, जो जनसंख्या की अभिवृद्धि, कारखाने का विस्तार और बढ़ती हुई ऊर्जा की माँग के साथ जुड़े हुए हैं। वे अभी भले ही धीमी गति से चल रहे हैं, पर वह दिन दूर नहीं, जब इस अपनायी जाने वाली अवांछनीयता के दुष्परिणाम सभी को प्रभावित करेंगे और इस धरातल की स्थिति ऐसी न रहने देंगे, जिसमें वनस्पतियों और प्राणियों का जीवन सुरक्षित रह सके।

संक्षेप में यह है मनुष्य की अब तक की एवं भावी प्रगति का सर्वेक्षण, जो यह दर्शित करता है कि अपनी अदूरदर्शिता के कारण जन समुदाय तेजी से अपने और भावी पीढ़ियों तथा समस्त संसार के लिए अनेक प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष, तत्काल एवं दूरगामी संकट खड़े करते चला जा रहा है। इसे आत्मघात की दिशा में द्रुतगति से बढ़ चलना भी कहा जाए, तो कोई अत्युक्ति न होगी।

❐ ❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर्यावरण प्रदूषण में एक प्राथमिक कारण—नासमझी

पर्यावरण की महत्ता और उपयोगिता से जनसामान्य का परिचित न होना पर्यावरण असंतुलन के लिए एक बड़ा कारण बन जाता है। इस नासमझी में वैज्ञानिक, तथाकथित समझदार समझे जाने वाले बुद्धिजीवी, अमीर-गरीब तथा सामान्य जनता सभी जिम्मेदार हैं। हम जान-समझ नहीं पाते हैं कि दैनंदिन जीवन में व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक रूप में तालाब, नदी तथा आस-पास के परिवेश को गंदा करने, यहाँ-वहाँ थूकने, कचरा फेंकने, धूम्रपान तथा अन्य नशों के द्वारा तथा सामाजिक-नैतिक मूल्यों को न मानने के द्वारा हम किस तरह सतत पर्यावरण को विकृत (प्रदूषित) करते रहते हैं।

'नासमझी' से जहाँ धनवानों द्वारा उपलब्ध संसाधनों का आवश्यकता से अधिक दोहन और खतरनाक पदार्थों का लापरवाही से प्रयोग होता है, वहीं गरीबों द्वारा जंगलों की निर्ममता से कटाई, यहाँ-वहाँ मल-मूत्र तथा कचरे विसर्जित करना और अव्यवस्था फैलाने जैसे कारणों से पर्यावरण संतुलन में तेजी से गिरावट आ रही है।

बुद्धिजीवियों में भी पर्यावरण के प्रति अभी तक जिम्मेदारी व जागरूकता के भाव उत्पन्न नहीं हुए हैं। होना तो यह चाहिए कि वे स्वयं इसके महत्त्व को समझकर भाषणों, सेमीनार, फिल्मों, दृश्य-श्रव्य कैसेटों, परिचर्चाओं, नुक्कड़ सभाओं, संस्थाओं, प्रेस, नियम-कानून आदि के द्वारा जनसामान्य को पर्यावरण संरक्षण के उपायों से अवगंत करवाएँ।

☆ गंदगी—एक सामाजिक अपराध

मनुष्य की अनेक विशेषताओं में एक विशेषता यह भी है कि उसे मलीनता से घृणा और स्वच्छता से प्रेम है। जहाँ साफ-सुथरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिखाई देता है, साफ-स्वच्छ वस्तुएँ दिखाई देती हैं, वहाँ स्वभावतः सभी आकर्षित होते हैं, पर यदि आँखों के आगे कोई गंदी वस्तु आ जाए, तो तुरंत उस तरफ से मुँह फेर लेते हैं। कोई दुर्गंध आए तो तुरंत वहाँ से हटकर दूर भाग जाने का प्रयत्न करते हैं। शरीर की हो या कपड़ों की, घर की हो या मुहल्ले की, गंदगी किसी को भी पसंद नहीं, सब उससे दूर भागने का ही प्रयत्न करते हैं।

इस बात से यह मालूम होता है कि स्वच्छता और सौंदर्य आत्मा का गुण है। इससे उसे विशेष आत्मसंतोष मिलता है। आत्मविकास के लिए जिन सद्गुणों की आवश्यकता बताई जाती है, स्वच्छता उन सबका मूल-मंत्र है। यही कारण है कि यहाँ प्रत्येक कार्य और प्रत्येक धर्मानुष्ठान में स्वच्छता को प्रमुख माना गया है, इसके बिना अपेक्षित पवित्रता का वातावरण बन नहीं पाता। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए, हमें इस ईश्वर प्रदत्त गुण का अधिकाधिक विकास और सदुपयोग करना चाहिए।

गंदगी से एक तरफ जहाँ पर्यावरण प्रदूषित होता है, तो दूसरी तरफ स्वास्थ्य प्रभावित होता है। आरोग्य को नष्ट करने वाले जितने भी कारण हैं, गंदगी उनमें सर्व प्रमुख है। शरीर की सफाई का समुचित ध्यान नहीं दिया जाता और इंद्रिय छिद्रों की पूरी तरह सफाई नहीं की जाती, तो शरीर में दाद, खाज, फोड़े, फुंसी, बिवाई आदि बीमारियाँ बनी रहती हैं। वस्त्र साफ नहीं होते और उनमें मिट्टी, तेल, पसीने आदि की दुर्गंध उड़ती रही है, तो इस दोषयुक्त वायु से खून की सफाई भी ठीक तरह नहीं हो पाती और भीतरी स्वास्थ्य-संस्थान में मल-विक्षेप जमा होने लगता है। इसी प्रकार जिन घरों के आस-पास गंदी नालियाँ, पेशाबघर, नाबदान, कूड़ा- कचरा तथा गंदगी का ढेर सड़ता रहता है, उनके निवासी भी प्रायः किसी न किसी बीमारी से ग्रस्त ही बने रहते हैं।

गंदगी चाहे शरीर की हो, चाहे निवास स्थान की, उसका स्वास्थ्य पर सदैव ही बुरा असर पड़ता है। इससे भी अधिक दुष्प्रभाव मनुष्य की मानसिक स्थिति पर पड़ता है, जिससे न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

केवल मनुष्य ही अव्यवस्थित होता, बल्कि आस-पास के सारे जीव-वनस्पति सभी प्रभावित होते हैं। गंदा व्यक्ति कभी बुद्धिमान् नहीं हो सकता, उसके कार्य भी गंदे और फूहड़पन से भरे हुए होंगे। गंदे व्यक्तियों में ही अक्सर आलस्य का दुर्गुण पाया जाता है। ऐसे व्यक्तियों के प्रति स्वच्छ मस्तिष्क के व्यक्तियों में भी घृणा और अविश्वास की भावना पैदा होती है। किसी भी समाज के लिए यह बहुत अशोभनीय बात है कि वहाँ के नागरिक इस प्रकार गंदगी के कारण स्वयं भी कष्ट पा रहे हों और दूसरों के लिए भी परेशानी का कारण बन रहे हों।

दुर्भाग्य से भारतीय समाज जितना अंधविश्वासी, रूढ़िवादी तथा हानिकारक सामाजिक कुरीतियों से ग्रसित है, वहाँ एक बात यह भी है कि उसका स्वच्छता और सफाई का स्तर भी बहुत गिरा हुआ है। कुछ दिन पूर्व यहाँ एक विदेशी पर्यटक आया था। स्वदेश लौटने के बाद भारतीय संस्कृति और सभ्यता पर उसने जो कुछ लिखा, वह संतोषजनक था, पर पर्यटक की कलम से निकले हुए कुछ शब्द ऐसे थे, जिनसे भारतीय समाज का एक अत्यंत भोंड़ा रूप प्रकट होता है। उसने लिखा है कि "भारतवर्ष में रात में भी लोग भटक नहीं सकते। कदाचित् किसी के सामने ऐसी स्थिति आ जाए कि उसे गाँव पहुँचने का रास्ता न मिल रहा हो और अंधकार के कारण मार्ग भी साफ न सूझ रहा हो, तो उसे किसी ऊँचे स्थान पर खड़े होकर चारों ओर की गंध लेनी चाहिए। जिस तरफ से उसे दुर्गंध आती जान पड़ रही हो उधर ही चल पड़े, तो निश्चय है कि वह जल्दी ही किसी आबादी वाले गाँव में पहुँच जाएगा।"

वस्तुतः भारतीय समाज की स्थिति ठीक ऐसी ही है। महात्मा गांधी गंदगी को "भारतीय समाज का क्षय रोग" कहा करते थे और इसके उन्मूलन के लिए उन्होंने विधिवत् सफाई आंदोलन चलाने का विचार किया था। बापू जी इस देश में सफाईकर्मी मुक्त समाज की रचना करना चाहते थे, किंतु यह दोष इतना बढ़ चुका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है कि उन्हें अंत तक सार्वजनिक स्थानों की सफाई की व्यवस्था से ही छुटकारा न मिला।

सर्वोदयी कार्यकर्ता बाबू जयप्रकाश नारायण ने कहा था—"दुनिया के सभी देशों में हिंदुस्तान ही सबसे अधिक गंदा देश है।" इस बात को अस्वीकार करने के कारण भी नहीं हैं। घने बसे, सीलन और सड़न भरे, धुआँ, शोर और तनाव से ग्रसित शहरों का तो कहना ही क्या है—गाँवों में लोग अधिक चौड़े में रहते हैं, फिर भी चारों तरफ मल, मूत्र, घूरे का साम्राज्य दीखता है, घर आदि सफाईरहित और गंदगी से ग्रसित रहते हैं। इसका कुप्रभाव भी उनके जीवन में देखने को मिल जाता है। आर्थिक साधनों की पर्याप्त व्यवस्था होते हुए भी उनका जीवन स्तर बहुत गिरा हुआ होता है और इसका कारण अधिकांश यही है कि वे गंदे रहते हैं और इसके कारण आए दिन बीमारियों से पीड़ित बने रहते हैं। स्वास्थ्य की खराबी के कारण एक ओर आर्थिक अपव्यय होता है, तो दूसरी ओर उनकी कार्यक्षमता भी घटती है। फलस्वरूप जीवन स्तर में सुधार की कोई समस्या हल नहीं होती।

शहरों में, जहाँ कि अधिकांश जनता शिक्षित होती है, वहाँ भी गंदगी का बोलबाला कम नहीं है। टट्टी और पाखानों की व्यवस्था होते हुए भी लोग गली की नालियों के किनारे बच्चों को टट्टी और पाखानों के लिए बैठा देते हैं। सार्वजनिक स्थानों की दुर्दशा का तो कहना ही क्या ? लोग धुँधलके में टट्टियों की बदबू से बचने के लिए पार्कों के किनारे पाखाना फिर आते हैं और अन्य सार्वजनिक स्थानों को भी गंदा कर देते हैं।

रास्ते चलते खाते जाना और मूँगफली, केले अथवा सिंघाड़ों के छिलके सड़क पर बिखेरते जाने में यहाँ के लोग कोई विशेष हानि अनुभव नहीं करते। किसी भी स्थान में थूक देने या नाक साफ कर देने के दुष्परिणामों पर लोगों ने विचार किया होता, तो आज जो शहरों में स्थान-स्थान पर कूड़ा-करकट बिखरा दिखाई देता है, वह न रहा होता और उनकी सफाई के लिए जितनी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यवस्था नगरपालिकाएँ बनाती हैं उतने से ही काम चल गया होता, पर कठिनाई यह है कि लोग अपने सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति उदासीन बने रहते हैं, फलस्वरूप गंदगी को बढ़ते रहने का पूरा अवसर मिलता रहता है।

शरीर, वस्त्र, घर, सामान, सार्वजनिक स्थान इन सभी क्षेत्रों में जो मलीनता पाई जाती है, उसका कारण कोई भौतिक कठिनाई नहीं है, मनुष्य का घटिया व्यक्तित्व ही एक मात्र कारण होता है। फुरसत न मिलना, नौकर न होना, घर के अन्य लोगों का ध्यान न देना आदि बहाने हो सकते हैं, पर वस्तुस्थिति ऐसी नहीं। अपने कार्यों को पूरा करने के बाद, जो अपनी आजीविका या व्यवसाय से संबंधित होते हैं, उन लोगों को इतना समय मिल जाता है जितने से वे अपनी ऐसी आवश्यकता बड़े आराम से पूरा कर सकते हैं। स्नान के लिए सभी लोग कुछ न कुछ समय निकालते हैं, पर इसे जो लोग केवल दो लोटे पानी से शरीर को गीला कर लेना मानते हैं, वह उनकी बड़ी भूल है। थोड़ा-सा और ध्यान दे लें और शरीर को रगड़कर साफ कर लें, तो सामान्य समय की अपेक्षा अधिक से अधिक पाँच मिनट का ही समय और ज्यादा लगेगा। इतना समय न तो किसी के लिए आपत्तिजनक हो सकता है और न ही इसके लिए किसी प्रकार का बहाना किया जा सकता है।

आँख के आगे कूड़ा-करकट का ढेर लगा रहता है, पर वह खटकता नहीं। सामने की नाली में मल और मूत्र सड़ता रहता है, पर वह अखरता नहीं। कपड़े गंदे हो जाते हैं, पर उसमें कोई बुराई नहीं जान पड़ती। सामान अस्तव्यस्त और बिखरा हुआ पड़ा रहता है, पर उसे ठीक-ठीक तरह से सजाकर रखने की बात नहीं सूझ पड़ती। लोगों का जैसा ढर्रा चलता रहता है, उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन करना उन्हें अच्छा नहीं लगता। इस प्रकार घटिया मानसिक स्तर ही गंदगी का कारण है। यदि अपना उद्देश्य स्वच्छता और सफाई को विकसित करना हो, तो यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कोई बड़ी कठिन बात नहीं कि वह पूरा न हो सके। सुरुचि जाग्रत् हो जाए तो सब वस्तुएँ स्वच्छ, सुव्यवस्थित और साफ रखी जा सकती हैं और उससे मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य की रक्षा भी आसानी से की जा सकती है। पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरुकता उत्पन्न करने का यही प्राथमिक उपाय और उपचार है।

☆ 'बढ़ता कचरा-बढ़ते संकट'

पेट भरने, तन ढकने और सिर छिपाने लायक आच्छादन बनाने की समस्या अभी हल नहीं हो पाई थी कि बड़ी मात्रा में उत्पन्न होने वाले कचरे को ठिकाने लगाने की नई समस्या सामने आ गई। प्रकृति अपने उत्पादित कचरे को ठिकाने लगाती और उपयोगी बनाती रहती है। पशुओं के मल-मूत्र, पेड़ों से गिरे पत्ते आदि सड़-गलकर उपयोगी खाद बन जाते हैं और कृषि उत्पादन में काम आते हैं। मनुष्य का मल-मूत्र भी उतना ही उपयोगी है, पर इसे दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि उससे खाद न बनाकर नदी-नालों में बहा दिया जाता है और पेय जल को दूषित किया जाता है। इसमें दुहरी हानि है—खाद से वंचित रहना और नदियों में फेंककर बीमारियाँ आमंत्रित करना। आशा की जानी चाहिए कि मनुष्य को सद्बुद्धि आएगी और कचरे तथा वर्ज्य पदार्थों का भी खाद रूप में प्रयोग करने का प्रचलन चल पड़ेगा।

किंतु इसे दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि, अनेक उपायों के बाद भी इन दिनों कचरे में भयानक वृद्धि हुई है। हर वस्तु कागज, प्लास्टिक के थैलों, पत्तल, दोना, डिब्बा आदि में बंद करके बेची जाती है, वस्तु का उपयोग होते ही वह पैकिंग कचरा बन जाती है और उसे जहाँ-तहाँ सड़कों-गलियों में फेंक दिया जाता है। इसकी सफाई में ढेरों खर्च तो होता ही है, विशेष समस्या यह है कि उसे डाला कहाँ जाए ? शहरों के नजदीक जो ऊबड़-खाबड़ जमीनें होती हैं, वे इस कचरे से भर जाती हैं। देहातों में ऐसी जगहें नहीं के बराबर हैं। जो पोखर, तालाब हैं, वे बरसाती पानी एकत्रित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करने के काम आते हैं, उन्हें भर दिया जाए, तो अन्यान्य उपयोगी कामों में बाधा पड़ेगी। घुमा-फिराकर सबसे बड़ा गड्ढा समुद्र रह जाता है। नदियों के रास्ते उसमें पहुँचाया गया कचरा सड़ता है और अपने साथ मिली हुई विषाक्तता से जलीय-जंतुओं का प्राण हरण करता है। यह भी एक बड़ी क्षति है।

सुविख्यात पर्यावरणशास्त्री पॉल एरलीश का कहना है कि जीवन को बचाए रखने के लिए पृथ्वी पर आवश्यक तत्त्वों का ह्रास एवं पर्यावरण की हानि जितनी अमेरिकावासियों के द्वारा होती है, अन्य देशों के लोगों की वजह से उतनी नहीं होती। औद्योगिक कचरे के अतिरिक्त घरेलू कचरा भी वहाँ सर्वाधिक उत्पन्न होता है। वहाँ प्रतिवर्ष १० करोड़ टायर, २८ अरब बोतलें, ४८ अरब डिब्बे एवं ७० लाख गाड़ियाँ कूड़े के ढेरों में चली जाती हैं। इसी तरह पेरिस की गलियों में नित्य-प्रति २० लाख टन कूड़ा एकत्रित हो जाता है, जिसे ठिकाने लगाने पर ढाई करोड़ डालर प्रतिदिन खर्च होते हैं। ब्रिटेन में प्रतिदिन २ करोड़ कागज के थैले कचरे के रूप में बाहर फेंक दिए जाते हैं।

किंतु अब कचरा उत्पादन में भारत इनसे भी आगे है। यहाँ प्रतिदिन २० करोड़ कागज के थैले इधर-उधर सड़कों, गलियों, पार्कों में बिखेर दिए जाते हैं। अकेले दिल्ली में हर रोज ३८४ टन जूठन फेंकी जाती है। संयुक्त राष्ट्र के एक सर्वेक्षण में बताया गया है कि दिल्ली, कलकत्ता, काहिरा, इस्तांबुल जैसे बड़े महानगरों में इस तरह के जूठन से जितना अधिक वातावरण दूषित होता है, उतना और किसी से नहीं। विशेषज्ञों ने अपने अध्ययन में बताया है कि अब सर्वाधिक कचरा कागज तथा प्लास्टिक के रूप में होगा। इसमें ७५ प्रतिशत की वृद्धि की संभावना की गई है और कहा गया है कि तब इसे दबाने के लिए जमीन भी न मिलेगी, मात्र जलाना ही एकमात्र उपाय रह जाएगा, जिससे उठते जहरीले धुएँ एवं उड़ती विषैली धूलों से जन स्वास्थ्य को भारी क्षति उठानी पड़ेगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जनसंख्या वृद्धि के साथ ही गाँव, नगर, हाट, बाजार बढ़ रहे हैं, साथ ही कचरे का अनुपात भी। इस समस्या को हल करने के लिए सर्वसाधारण को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए कि कम से कम कचरा उत्पन्न करें। कूड़े को छाँटकर उसमें से कागज बनाने लायक कचरा अलग कर दिया जाए, जिसे गलाकर नया सस्ता कागज बनाया जाए। खाने-पीने के संबंध में जूठन न छोड़ने की आदत डाली जाए तथा जूठन के रूप में शेष कचरे को मछलियों तथा पक्षियों के लिए चारे के रूप में प्रयुक्त किया जाए। बचे हुए शेष कचरे को जलाकर उसकी राख खेतों में डालने के लिए खाद रूप में प्रयुक्त किया जाए। घरेलू कचरे को दूसरे सम्मिश्रणों के साथ ईंधन के रूप में भी प्रयुक्त किया जा सकता है। ऐसे उपाय-उपचार अपनाकर बहुत हद तक इस समस्या से निपटा जा सकता है।

☆ इस कचरे को समेटेगा कौन ?

गंदगी फैलाना, वस्तुओं को कचरा बनाकर जहाँ-तहाँ बिखेर देना तो अनपढ़ बालकों के लिए भी सरल है, पर समस्या यह है कि उसकी सफाई कौन करे ? सफाई न करने पर कचरा हर किसी के लिए विपत्ति खड़ी कर सकता है। यह सोचते हुए ही कार्यक्रमों की रूपरेखा बनना चाहिए, अन्यथा अनर्थ की ही आशंका बनी रहेगी।

जितना जोश बच्चों को पतंगबाजी तथा गुब्बारे उड़ाने की विद्या उपलब्ध हो जाने पर उभरा था, उतना ही इन दिनों अंतरिक्षीय उड़ानों के संबंध में उमड़ रहा है। हेलीकॉप्टर, ग्लाइडर, वायुयान, एयर बर्से तो अब मोटर साइकिलों की तरह प्रयुक्त होने लगे हैं। उनकी गणना परिवहन साधनों में होने लगी है। यह उत्साह उभरने का पहला चरण तो अब पुराना ही हो चला है और आकर्षणविहीन भी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इन दिनों परीक्षणों के नाम पर बहुत ऊँचे उड़ने वाले, पृथ्वी की परिक्रमा करने वाले तथा अंतर्ग्रही उड़ानों पर निकलने वाले रॉकेटों की भरमार है। प्रक्षेपास्त्र के नाम से जानी जाने वाली मिसाइलें तो पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण सीमा में ही रहती हैं और टूटने पर जमीन पर भी आ गिरती हैं। प्रश्न उनका है जो अंतरिक्ष के ऐसे क्षेत्र में उड़ती हैं, जिन पर पूरी तरह रेडियो नियंत्रण भी काम नहीं करता।

सन् १९६८ के जुलाई माह में एक अमेरिकी उपग्रह का मलबा क्यूबा पर गिरा था। इन्हीं दिनों एक टुकड़ा मैनिटोक नगर के चौराहे पर गिरा। एक रूसी उपग्रह का टुकड़ा जापानी जलयान पर गिरा। चंद्रयान रॉकेट का मलबा जर्मनी के जलयान पर गिरा। सन् १९८३ के सितंबर माह में रूसी और अमेरिकी यान टकराने से बाल-बाल बचे थे।

अंतरिक्ष में बस्ती बसाने और प्लेटफार्म जमाने की चर्चा होती रहती है, पर कोई यह नहीं बताता कि उनके मलबे और कचरे का क्या होगा ? यदि वह इसी प्रकार बढ़ता गया तो अंतरिक्ष यात्राएँ पूरी तरह खतरे से भर जाएँगी।

सन् १९७९ में अमेरिका की एक अंतरिक्ष प्रयोगशाला स्काईलैब बेकाबू हो गई थी। स्काईलैब के कहीं भी गिरने के खतरे से संसार भर में आतंक था। संयोगवश वह आस्ट्रेलिया के तटवर्ती क्षेत्र में गिरी और लोगों की जान में जान आई।

इसी प्रकार सन् १९७८ में एक रूसी यान कनाडा में गिरा, उसमें १०० पौंड यूरेनियम था। संयोगवश वह आकाश में ही जलकर ऊपर उड़ गया। मात्र यान का मलबा ही जमीन पर एक निर्जन क्षेत्र में गिरा। यदि ऐसा सुयोग न बनता, तो उससे भी भयानक दुर्घटना हो सकती थी। इसी प्रकार अमेरिकी रॉकेट का यूरेनियम भी आकाश में जल गया था।

दूरवर्ती अंतरिक्ष उड़ानों से पृथ्वी के वायुमंडल की अयन पट्टी भी प्रभावित हुई है। उसकी गड़बड़ी से मौसम में व्यतिरेक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हुआ है। रेडियो तरंगों में हेरफेर हुआ हैं। पराबैंगनी प्रकाश किरणें भी पृथ्वी पर अधिक मात्रा में आ रही हैं। इन सबका मिला-जुला प्रभाव धरती और उसके निवासियों के जीवन में विचित्र-विचित्र संकट खड़े कर सकता है।

अमेरिका ने प्रजातांत्रिक देश के नाते आधी-अधूरी जानकारी सर्वसाधारण के सम्मुख प्रकट की है। उसके अनुसार अब तक प्रायः २५०० उपकरण अंतरिक्ष में फेंके गए। उनके १४००० टुकड़े हुए, जिनमें से ४ हजार टुकड़े पृथ्वी के वायुमंडल में आकर जल गए, फिर भी १० हजार के करीब अभी त्रिशंकु की तरह अनियंत्रित उड़ानें ही भर रहे हैं। यह मलबा पृथ्वी से ८५० किलोमीटर की ऊँचाई पर है। इन टुकड़ों का भार छह टन के आस-पास आंका गया है। इसी मलबे में इलेक्ट्रॉनिक उपकरण भी हैं। सूर्य ऊर्जा बैटरी और परमाणु ईंधन भी है। जिस गति से यह चल रहे हैं, उसमें कक्षा का व्यतिक्रम होना संभव है और वे परस्पर टकरा भी सकते है। इसमें मानव रहित नए यानों का अंतरिक्ष में छोड़ा कचरा भी शामिल है।

यह मलबा अंतरिक्ष में बिखरा पड़ा हुआ है, जिसके साथ-साथ परमाणु उपकरण भी हैं। वे अपना विकिरण अपने मार्ग में बिखेर रहे हैं, जो किसी प्रकार जमीन पर गिर पड़ें, तो वे यहाँ भयंकर संकट उत्पन्न करेंगे। प्रश्न यह है कि अब इस कचरे को समेटेगा कौन ? यदि मनुष्य को आसन्न विपत्ति से स्वयं को उबारना है, तो उसे सबसे पहले विज्ञान की इस तीव्र गति पर अंकुश लगाकर अपने द्वारा फैलाए कचरे की सुव्यवस्था करनी होगी, नहीं तो महाकाल का त्रास झेलना होगा।

☆ डिस्पोजिबल कल्चर—नासमझी का प्रतीक

कागज की महत्ता एवं उपयोगिता सर्वविदित है। ज्ञानार्जन की प्रक्रिया जितने बड़े स्तर पर इसके द्वारा संपन्न और संभव होती है, उतनी दूसरे माध्यमों द्वारा शायद ही संभव हो। पुस्तकों,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पत्र-पत्रिकाओं की उपादेयता इसी कारण इन दिनों सर्वोपरि सिद्ध हुई है।

यह कागज का एक पक्ष हुआ। इसे इसका उत्तम और उत्कृष्ट पहलू भी कह सकते हैं, पर इसका एक अन्य पहलू भी है, जो इन दिनों बहुतायत में प्रचलित है और हानिकारक है। यह है कागज के बने दैनिक काम में आने वाले सामान, जैसे—वायुयानों एवं अधिकांश पश्चिमी देशों में प्रयुक्त होने वाले ट्वायलेट पेपर, चाय-फिल्टर, रूमाल, तौलिए, बच्चों के नेकर-डायर्स आदि। इनका प्रयोग कीमत की दृष्टि से सुविधाजनक एवं सस्ते तो होते हैं, पर बिल्कुल निरापद भी नहीं हैं। इनके इस्तेमाल संबंधी जानकारी देते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने यह अपील जारी की है कि हर एक को इन कागजी वस्तुओं के उपयोग संबंधी नियंत्रण पर सदा ध्यान रखना चाहिए, अन्यथा उन्हें इनके गंभीर परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। उक्त संस्थाओं की यह चेतावनी निराधार भी नहीं है। जानवरों पर किए गए परीक्षण बताते हैं कि इन चीजों के निर्माण के समय आपसी प्रतिक्रिया के फलस्वरूप बनने वाला डायऑक्सीन नामक पदार्थ उनमें गर्भपात, नपुंसकता एवं प्रजनन संबंधी अनेक अन्य प्रकार के दोषों को जन्म देता है।

ऐसे ही इन दिनों महिलाओं में कृत्रिम सेनेटरी टावेलों का प्रचलन बढ़ चला है। इन कागजों के सेनेटरी टावेलों को जीवाणु मुक्त करने के लिए इनमें आर्गेनोक्लोराइड नामक एक रसायन मिला दिया जाता है, जो परीक्षण के दौरान घातक पाया गया है। वैज्ञानिकों का कहना है कि इससे महिलाओं में गर्भाशय (सर्वीक्स) कैंसर पनपने की संभावना बढ़ जाती है। मासिक चक्र संबंधी अनियमितताएँ तो इससे जन्मती ही हैं, गुप्तांगों एवं गर्भाशय से संबंधित अन्यान्य आम शिकायतें भी इसकी प्रयोक्ता महिलाओं में पाई जाने लगती हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कुल मिलाकर कृत्रिम कागजी वस्त्रों, फाइबर, प्लास्टिक, पॉलिथीन एवं सभी यूज एंड थ्रो उत्पादों का प्रयोग सुविधा, साधन और मूल्य की दृष्टि से सरल-सहज होते हुए भी इनसे जिस स्तर की जितनी स्वास्थ्य तथा पर्यावरणीय क्षति होती है, उसकी भरपाई इनसे बचे समय और पैसे से किसी भी प्रकार नहीं की जा सकती है। कहा भी गया है—'हेल्थ इज वेल्थ' अर्थात् स्वास्थ्य ही धन है, फिर पर्यावरण संरक्षण से तो मनुष्य के साथ अन्य प्राणियों की स्वास्थ्य रक्षा की भी व्यवस्था बनती है। यदि इसे गँवा दिया गया, तो किसी प्रकार की संपदा और उपलब्धि कभी भी नहीं कमाई जा सकती। अतः समझदारी इसी में है कि हम कृत्रिम और सस्ते आकर्षणों की ओर न भागें, उन वस्तुओं की ओर ध्यान केंद्रित रखें, जो प्राकृतिक हैं। अक्षुण्ण स्वास्थ्य का राज यही है। अपनाया भी इसे ही जाना चाहिए।

☆ एक और नासमझी—नशा

वर्तमान प्रगति किस दिशा में हुई है ? उससे हमने क्या पाया है ? मानसिक, शारीरिक और सामाजिक सुख-शांति के बढ़ने में, मानवीय मूल्यों को बढ़ाने में उसने कितना योगदान दिया है ? यह विचारने योग्य बात है।

योरोप का सबसे प्रगतिशील व्यवसायी देश है—पश्चिमी जर्मनी और इस महाद्वीप का सबसे अधिक संपन्न देश है—फ्रांस। इन दोनों देशों की प्रजा बहुत सुसंपन्न और साधनों से भरपूर है।

इस समृद्धि का उपयोग विलासिता के अतिरिक्त और भी हो सकता है, यह सोचने की उन्हें फुरसत नहीं है। विलासिता की मस्ती ही उन्हें जीवन की उपलब्धि प्रतीत होती है। अकेले पेरिस नगर में ५५०० क्लब ऐसे हैं, जिसमें युवा नर-नारी निर्वसन होकर नृत्य करते और राग-रंग में लीन रहते हैं। नशेबाजी आकाश चूमने लगी है। पूर्वी जर्मनी में ४ लाख पुरुष और दो लाख स्त्रियाँ ऐसी हैं, जो अहर्निश नशे में चूर पड़े रहते हैं। फ्रांस में एक लाख

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आबादी के पीछे हर साल २० व्यक्ति नशे की अधिकता से दुर्घटना ग्रसित होकर बेमौत मरते हैं। अमेरिका में नशेबाजी के कारण मरने वालों की वार्षिक संख्या ३,५०,००० पहुँच चुकी है।

रूस, अमेरिका से नशेबाजी के क्षेत्र में जरा भी पीछे नहीं है। उस देश में २० अरब रूबल अर्थात् भारतीय सिक्के के अनुसार २०० अरब रुपये की 'बोदका' शराब पी जाती है।

अस्तव्यस्त, अनिश्चित, आशंकाग्रस्त एवं एकाकी जीवन का तनाव इतना भारी पड़ रहा है कि, लोग नींद की गोली खाए बिना मस्तिष्कीय उत्तेजना से पीछा छुड़ा ही नहीं पाते। यह नींद की गोलियाँ दैनिक आहार में शामिल हो गई हैं। दिन-दिन बढ़ता तनाव-नशीली गोलियों का घटता प्रभाव अधिक मात्रा में सेवन करने के लिए विवश करता है। उस समय तो लगता है कि अनिद्रा की व्यथा से छुटकारा पाने का अस्त्र हाथ लग गया, किंतु शरीर के सूक्ष्म संस्थानों में यह विषाक्तता इतनी गहराई तक घुस जाती है कि उनमें विविध प्रकार की व्याधियाँ उठ खड़ी होती हैं। जिस मानसिक तनाव को कम करने के लिए नशा किया जाता है, प्रभाव कम होने के बाद वह स्वयं के लिए समस्याओं को तो बढ़ाता ही है, पारिवारिक और सामाजिक पर्यावरण को भी दूषित करता है। संतानोत्पादन पर तो नशेबाजी का और भी बुरा प्रभाव पड़ता है। अमेरिका में हर वर्ष ढाई लाख बच्चे विकलांग पैदा होते हैं। इंग्लैंड में हर ४० नवजात शिशुओं में एक विकलांग या अर्ध-विक्षिप्त उत्पन्न होता है। हाँगकाँग में ८७ के पीछे एक, स्पेन में ७५ के पीछे एक, आस्ट्रेलिया में ५३ के पीछे एक बच्चा विकलांग पैदा होता है। इसका एक मात्र कारण नशेबाजी की नर एवं नारियों में बढ़ती हुई आदत, रात को नींद की गोली लेना ही माना गया है।

विवाहों और तलाकों की अमेरिका में पूरे उत्साह के साथ धूम है। १६,१३,००० नए विवाह और ५,३४,००० तलाक। हर साढ़े तीन विवाहों में से एक को तलाक लेनी पड़ती है। उस देश में इन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिनों ३ करोड़ महिलाएँ विवाह के झंझट में फँसने की अपेक्षा अविवाहित जीवनयापन कर रही हैं और प्राप्त हुए कटु अनुभव को दोबारा दुहराने की हिम्मत नहीं कर रही हैं।

नशे से उत्पन्न पारिवारिक भ्रष्टता का बच्चों पर कितना बुरा असर पड़ता है, इसका अनुमान इस एक ही जानकारी से लग जाता है कि १८ वर्ष की आयु तक पहुँचने से पूर्व ही हर छह में से एक अमेरिकी लड़के को किसी बड़े अपराध में जेल की हवा खा लेनी पड़ती है।

नशे का यह एक पहलू है, जो आँखों से दिखाई पड़ता है और मोटी बुद्धि भी प्रत्यक्ष परिणामों के आधार पर जिसकी विभीषिका को समझ लेती है, किंतु अन्य असंख्य तस्वीरें ऐसी हैं, जो परदे की ओट में खड़ी रहने के कारण अपने संहारी प्रभाव से जनसाधारण को अपरिचित जैसी स्थिति में डाले भुलाए रहती हैं।

नशे की समस्या भौगोलिक पर्यावरण में भी उतनी ही समस्या उत्पन्न कर रही है जितनी कि प्रत्यक्ष में पारिवारिक और सामाजिक पर्यावरण में। केवल अपने ही देश में प्रतिवर्ष ४ लाख टन तंबाकू को सुखाने के लिए लगभग ५½ लाख एकड़ भूमि में लगे वृक्षों का उपयोग ईंधन के रूप में किया जा रहा है। मात्र १० हजार सिगरेट की तंबाकू पकाने, तैयार करने में १०० टन लकड़ी की आवश्यकता होती है, जबकि देश में सिगरेट का १० करोड़ तथा बीड़ी का ४½ करोड़ से ज्यादा का उत्पादन होता है। इस प्रक्रिया में एक तरफ वायु प्रदूषण तो होता ही है, साथ में पर्यावरण परिशोधन में मदद करने वाले वृक्षों का बहुतायत में सफ़ाया भी।

वनों की कटाई को देखते हुए कृषि वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि भारत, पाकिस्तान तथा पश्चिम एशिया के अन्य देशों में २१०० तक एक तिहाई से ज्यादा भूमि कृषि की दृष्टि से भी बंजर हो जाएगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नशेबाजी के उपकरण और मादक द्रव्य बनाने में लगभग उतनी ही जनशक्ति और संपत्ति लगती है जितनी युद्ध व्यवसाय में। मनुष्यों ने जितनी आयु युद्ध की वेदी पर चढ़ाई उसका हिसाब लगाया जा सकता है। मनुष्य की औसत आयु साठ वर्ष की मानी जाए और युद्ध में मरने वालों की औसत उम्र ३५ साल, तो यह कहा जा सकता है कि औसत सैनिक ने अपनी २५ वर्ष की आयु युद्ध देवता की वेदी पर समर्पित कर दी। यदि लड़ाई में एक लाख मनुष्य मरे हों, तो मानवी उम्र के २५ लाख उसमें खो दिए गए, यह तथ्य स्वीकार किया जा सकता है। अब नशेबाजी को लीजिए, यदि संसार की आधी आबादी नशा पीती मानी जाए और उन दो सौ करोड़ मनुष्यों से हर मनुष्य अपने जीवन के दस वर्ष नशे की वेदी पर कम कर रहा हो, तो कहा जायेगा कि बीस अरब वर्ष नशा खा गया। यह युद्ध से कम नहीं, वरन् बढ़ा-चढ़ा विनाश है। इन साधनों को उत्पन्न करने और बनाने में जो श्रम एवं धन लगता है उस पूँजी की युद्ध पूँजी से और युद्ध श्रम से तुलना की जाए, तो इस आधार पर भी नशा आगे है और युद्ध पीछे। बारूद जल जाती है और धमाके के बाद उसके पीछे पर्यावरण में कोई उत्पादक परिणाम नहीं रहता। नशे के उपकरण भी पीने के साथ नष्ट हो जाते हैं, इतने तक दोनों की समता है, किंतु नशे का पर्यावरण में प्रभाव पीछे भी बना रहता है। जो लोग पीते हैं, वे आधि-व्याधियों से घिरते जाते हैं और रोते-कलपते, सिसकते-कराहते जिंदगी के दिन काटते हैं। उनका बुरा प्रभाव आस-पास के वातावरण में भी अनेकानेक प्रकार की विकृतियों को जन्म देता है, साथ ही यह प्रभाव पीढ़ी दर पीढ़ी चलता चला जाता है।

कहते हैं कि नशा पीने से सुस्ती दूर होती है और गम गलत होता है। फिर ऐसे काम ही क्यों किए जाएँ, जो सुस्ती और गम पैदा करें। भलमनसाहत का हलका-फुलका जीवन जिया जा सकता है और सुस्ती तथा गम उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों से बचा जा सकता है। यदि ध्वंस के स्थान पर सृजन को नियोजित किया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाए और नशे के स्थान पर दूध उद्योग खड़ा कर दिया जाए, तो हर व्यक्ति को एक किलो दूध हर रोज मिलता रह सके ऐसी व्यवस्था हो सकती है। साथ ही खाद, गोबर और बछड़ों से अनुत्पादक जमीन उपजाऊ बनाकर खाद समस्या सर्वदा के लिए हल की जा सकती है।

☆ चिंतन और पर्यावरण

बीसवीं सदी को प्रगति की अवधि भी कह सकते हैं और साथ ही भयानक अवगति की भी। पिछले दिनों विज्ञान और बुद्धि के दो देवताओं ने अपने चमत्कार दिखाए हैं, वे सशक्त भी रहे हैं और भयानक भी। दिन का अधिपति सूर्य और रात्रि का स्वामी चंद्रमा कहा जाता है, पर राहु-केतु अपने दाँव पर इनसे भी बलिष्ठ सिद्ध होते हैं। ग्रहणकाल में वे इन दोनों को ग्रस लेते हैं। संपन्नता और शक्ति सभी को अभीष्ट है। इन्हें देने और छीनने में शताब्दी की उपर्युक्त उपलब्धियों का बढ़ा-चढ़ा हाथ है। विज्ञान ने वे सुविधा-साधन प्रदान किए हैं, जिनकी पूर्वजों ने कभी कल्पना तक न की होगी। प्रत्यक्षवाद ने मान्यताओं के धुर्रे उड़ा दिए और चिंतन को नये सिरे से सोचने की सामग्री दी। यह दोनों ही उत्साहवर्धक रहे और आश्चर्यचकित करने वाले भी। किंतु जिस प्रकार दीपक तले अँधेरा और उसके धुएँ में कालिख पाई जाती है, उसी प्रकार आधुनिक उपलब्धियों के साथ-साथ कुछ ऐसा भी घुला रहा, जिसे अवांछनीय एवं अनुपयुक्त भी कहा जा सके।

विज्ञान ने हमें जल-थल-नभ पर द्रुतगति से गमन करने की क्षमता दी। तार, रेडियो, टेलीविजन जैसे संचार साधन भी। साथ ही उसने बिजली, बारूद, वैभव और विनाश के परस्पर विरोधी सरंजाम भी जुटाए। कल-कारखाने खड़े किए। कंप्यूटर और यंत्र-मानव बनाए। इन उपलब्धियों पर गर्व किया जा सकता है, क्योंकि इनके पीछे इतना अध्यवसाय और शक्ति-साधन है कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसकी पुरातन काल के देव-दानवों के साथ तुलना की जा सकती है।

दर्शन, अन्वेषण, प्रतिपादन के संदर्भ में भी यही हुआ है। चिर पुरातन मान्यताओं में से कितनी ही हवा में उड़ा दी गईं, कितनी ही संदिग्ध बना दी गईं। कितनों को नये सिरे से, नये ढाँचे में ढाला गया और सोचने का अभिनव आधार खड़ा किया गया। यों अशिक्षितों और पिछड़े क्षेत्रों में अंधविश्वास अभी भी है, पर उसकी जड़ें खोखली होने लगी हैं। लोग समझने लगे हैं कि **"बाबा वाक्यं प्रमाण"** ही सब कुछ नहीं है। लकीर के फकीर बनकर सदा-सर्वदा नहीं रहा जा सकता। तर्क, तथ्य, प्रमाण, उदाहरण को साक्षी रखकर हर प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ा जाने लगा। इसे प्रत्यक्षवाद भी कह सकते हैं और बुद्धिवाद भी। शिक्षा के साथ ऐसे तथ्यों का समावेश हुआ, जिनसे विश्व प्रवाह के संबंध में अभिनव आधारों का समावेश होता चला गया।

यह सब प्रशंसनीय है। सृष्टि के आदिकाल से लेकर प्रगतिक्रम जिस गति से चला, उसकी तुलना में इन दिनों की गति को चमत्कारी जादुई-कल्पनातीत ही कहा जा सकता है। यह सभी बातें ऐसी हैं, जिनके कारण मानवी प्रतिभा के ज्वालामुखी फटने जैसे विकास का यशगान ही किया जा सकता है और अभिनंदन भी।

यदि इन उपलब्धियों के सदुपयोग की वेला में श्रद्धा-सद्भावना का नीति और औचित्य का समावेश रहा होता तो प्रस्तुत साधनों से समूचा जन समुदाय अपेक्षाकृत अधिक सुखी और समुन्नत स्थिति में पहुँच चुका होता। जब पूर्वज स्वल्प-साधनों में सुखी और समुन्नत जीवन जीते रहे, तो कोई कारण नहीं कि इन शताब्दियों की उपलब्धियाँ उन्हें हर क्षेत्र में अधिक सुविकसित न बना सकी होतीं।

दुरुपयोग से अमृत भी विष बन जाता है। रसोई घर में काम आने वाले चाकू, हँसिया जैसे छोटे-से उपकरण किसी का सहज

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ही प्राण-हरण कर सकते हैं। इस बुद्धि के दुरुपयोग का तो कहना ही क्या, वह न केवल स्वयं उलटा सोचती है, वरन् समूचे प्रभाव क्षेत्र को भी उसी अनौचित्य के मार्ग पर घसीट ले जाती है। हस्तगत सुविधा-सामग्री का ऐसा दुरुपयोग करती है कि उससे लाभदायक परिस्थिति एवं सामग्री उलटकर ऐसे प्रहार करती हैं, जिससे शरीर अशक्त बने, मन बौराये, बुद्धि अनौचित्य का समर्थन करे, कुकर्मों में रुचि बढ़े। इसका प्रतिफल भी सुनिश्चित रूप से ऐसा ही होना चाहिए, जिससे विग्रह खड़े हों, दुर्व्यसन पीछे पड़ें और संकटों—उद्वेगों के पर्वत सामने आ खड़े हों। समस्याएँ उत्पन्न हों, उलझनें इस प्रकार उलझें कि सँभालने में ही न आवें।

इन दिनों जिधर भी नजर पसारकर देखा जाए उधर ही सुविधाओं की तुलना में संकटों की भारी भरमार दीख पड़ने लगी है। संतुष्ट लोगों की तुलना में असंतुष्टों का वर्ग कहीं अधिक विस्तृत है। सुखिया की तुलना में दुखिया कई गुने अधिक हैं। यह आश्चर्य की ही बात है। विज्ञान और बुद्धिवाद अपनी चमत्कारी सामर्थ्य के बावजूद मनुष्य जाति की ऐसी सेवा न कर सके, जिससे वह नित्य और निरंतर सुखी रह पाता, बल्कि हो उलटा रहा है। स्थूल के साथ सूक्ष्म पर्यावरण भी गड़बड़ा गया है।

शारीरिक रुग्णता, मानसिक उद्विग्नता, आर्थिक दरिद्रता, पारिवारिक विशृंखलता, सामाजिक अराजकता, धार्मिक विडंबना के ऐसे दैत्य सर्वत्र व्याप्त हो गए हैं, जितने कि इससे पूर्व आदिमकाल से लेकर अब तक कभी देखने को नहीं मिले। जिनके हाथ में नेतृत्व और साधन हैं, वे अपनी समझ-बूझ के अनुसार निराकरण के उपाय भी करते हैं, पर परिस्थिति काबू में नहीं आती। सुलझने के स्थान पर उलझनें और भी अधिक उलझ जाती हैं।

ऐसा क्यों होता है ? इसका कारण समझने वाले समझते हैं कि पदार्थों की कमी पड़ गई है, व्यवस्था लड़खड़ा गई है, कूटनीति या कानूनों में कमी पड़ रही है। आवश्यकताओं की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तुलना में उपकरण या अवसर कम हैं, आदि-आदि। इस समझ के अनुसार अधिक धन की आवश्यकता समझी जाती है। अधिक टैक्स लगते हैं। विशालकाय योजनाएँ बनती हैं। महँगाई और बढ़ा हुआ टैक्सेशन दोनों परस्पर संबद्ध हैं। आजीविका बढ़ती है तो महँगाई उसके प्रभाव को समाप्त कर देती है। जिधर मैत्री और सहयोग के हाथ बढ़ाए जाते हैं, उधर से ही वे झटक दिए जाते हैं। भीतरी और बाहरी, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय, वैयक्तिक और सामाजिक कठिनाइयों का अभाव नहीं दिखता। यद्यपि उनके निराकरण का उपाय सोचने और प्रयास करने में किसी प्रकार की कमी नहीं दीख पड़ती।

इन असमंजस भरे भटकावों का कारण एक ही है—साधनों और परिस्थितियों को ही सब कुछ मानना। उन्हीं की पूर्ति और व्यवस्था में लगे रहना। इससे सामर्थ्य तो जुटती रहती है, पर वह क्षेत्र छूट जाता है, जिसके कारण उलझनें उभरती हैं और संकट गहराते हैं। पुरुषार्थ तो चलता रहता है, पर सफलता के दर्शन नहीं होते। वह विस्मृत एवं उपेक्षित पक्ष विचारणा का परिशोधन, जनमानस का परिष्कार है।

इन दिनों विचार भी गड़बड़ाए हुए हैं और वातावरण भी बिगड़ा हुआ है, पर देखना यह है कि इन दोनों के बीच कोई प्रत्यक्ष संबंध तो काम नहीं कर रहा है। गंभीरता को साथ लेकर निरीक्षण-परीक्षण करने पर एक ही निष्कर्ष हाथ आता है कि मनःस्थिति ही परिस्थितियों की जन्मदाता है। चिंतन प्रधान है। चरित्र उसी आधार पर बनता है। व्यक्तित्व का गया-गुजरा स्तर ही ऐसी रीति-नीति अपनाता है, जिसमें बोये हुए विष वृक्ष के कड़ुए फल खाने पड़ें, उगाई हुई नागफनी के काँटे पैरों में गड़ने लगें।

समझा जाना चाहिए कि मनुष्य अपने आप में पूर्ण है। उसके पास ज्ञानेंद्रियों, कर्मेंद्रियों और मस्तिष्कीय विभूतियों का इतना बड़ा भंडार है कि उसी के सहारे वह बहुत कुछ कर सकता है। बहुत कुछ बन और बदल सकता है, किंतु यदि सद्विचारों का अभाव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हो, तो संपदा और समर्थता का बढ़ा-चढ़ा अंबार भी ऐसे प्रयास करेगा, जिसमें समाधान हाथ आना तो दूर उलटा संकटों का प्रकोप ही बढ़ता चले। इतिहास साक्षी है कि विचारवानों ने स्वल्प साधनों और विषम परिस्थितियों के रहते हुए भी स्वयं ऊँचे उठे और दूसरों को बढ़ाने में सफल हुए हैं। बुद्ध, गांधी जैसे व्यक्तित्वों ने अपने आपको धन्य बनाया और विषमता से भरे वातावरण को आश्चर्यजनक रीति से बदल दिया। संसार की महान् क्रांतियाँ विचारों की प्रचंडता के साथ व्यापक हुई हैं और सफल बनी हैं। तोप, तलवार और विज्ञान की ताकत मात्र में इतनी क्षमता नहीं कि निरंतर बढ़ते विघटन को रोककर पर्यावरण में संतुलन स्थापित कर सकें।

☆ बीसवीं सदी के समाज की एक विडंबना भरी कहानी

मानवी प्रगति का इस शताब्दी का इतिहास बताता है कि दो विश्व युद्धों ने मानवीय मानसिकता को बहुत कुछ प्रभावित किया है। दोनों ही युद्धों के बाद अमेरिका, यूरोप, एशिया महाद्वीप के राष्ट्रों में इस मान्यता को खूब बल मिला कि यदि सुख-शांति भरा, संपन्नता-सफलतायुक्त जीवन बिताना है, तो आधुनिकता की दौड़ और तेज की जाए। ९६३० की आर्थिक मंदी ने सारे विश्व को प्रभावित किया। उपनिवेश स्वतंत्र होते चले गए एवं लगभग सभी राष्ट्रों में बड़ी तेजी से औद्योगीकरण होने लगा। जहाँ राष्ट्रों को आमूलचूल विकसित होना चाहिए था, वहाँ पूँजी का केंद्रीयकरण सीमित परिधि वाले कुछ शहरों में ही होने का क्रम आरंभ हुआ। जनसंख्या बढ़ते रहने का क्रम चलता रहा एवं शहर फैलते चले गए। भौतिक जीवन की चकाचौंध और औद्योगीकरण की प्रक्रिया के साथ ही नैतिक-सामाजिक मूल्यों में स्वच्छंदतारूपी प्रदूषण की निरंतर बढ़ोत्तरी होती गई।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस तीव्र औद्योगिक एवं तकनीकी प्रगति में सामाजिक और नैतिक मूल्यों की बलि चढ़ती गई। अपराध तेजी से बढ़े। एक तरफ गरीबी, भुखमरी एवं दूसरी ओर अपराधों का बाहुल्य, अराजकतावादी मनोवृत्ति का बढ़ना, यह सभी एक साथ हुआ। मनोरोगों, मनोविकारों का बाहुल्य इसी शताब्दी की देन है। छल-कपट, शोषण, व्यभिचार, कालाबाजारी-मुनाफाखोरी, जुआ, लाटरी आदि की कीमत पर तथाकथित प्रगति के लक्ष्य, वैभव, विलासिता एक सीमित समुदाय को प्राप्त भी होने लगे, किंतु इस प्रगति के साथ मानव समुदाय शांति, प्रफुल्लता, मानसिक आरोग्य से वंचित होता चला गया।

सिगमंड फ्रायड जैसे मनोवैज्ञानिक इसी सदी में विकसित हुए जिन्होंने मानसिक उलझन व तनावों का मूल कारण यौन दमन को बताया। इस प्रतिपादन ने औद्योगीकरणजन्य बुराइयों के साथ यौन स्वेच्छाचार को भी जन्म दिया। इस प्रतिपादन से शेष बची वर्जनाएँ, सामाजिक—नैतिक मूल्य ताश के महल की तरह ढह गए। कामुकतावाद-हिप्पीवाद इसी शताब्दी की उपज हैं। फ्रायड व उनके समकालीन वैज्ञानिकों की विचारधारा ने पश्चिम जगत् के युवक-युवतियों की जीवन शैली में एक क्रांति ला दी। फलतः युवा समुदाय ने तमाम यौन और सामाजिक बंधनों के विरुद्ध बगावत कर दी और बिल्कुल स्वच्छंद, स्वतंत्र जीवन जीना शुरू कर दिया। यही स्वच्छंद जीवन शैली बाद में सन् १९६० के लगभग "हिप्पीवाद" के रूप में विकसित हुई। अस्तव्यस्त क्रियाकलाप, वेषभूषा, रहन-सहन अपनाना इन युवकों-युवतियों का फैशन बन गया। वे युवक ऐसी जीवन शैली अपनाने वालों को ही सच्चा, पुरुषार्थी, निर्भीक तथा परंपरागत जीवन शैली अपनाने वालों को कायर, नपुंसक आदि नाम देकर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करते रहे।

नैतिक मूल्यों में स्वच्छंदता का यह प्रदूषण लगातार बढ़ता गया। समाचारपत्रों, पत्रिकाओं और चलचित्रों पर भी फ्रायड विचारधारा का पूरा प्रभाव पड़ा और २०वीं सदी के ये सारे माध्यम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रोमांस, प्रेम कथा-प्रसंगों, यौन अपराधों आदि की खबरों, दृश्यों से भरे रहे। परिणामस्वरूप स्वच्छंद संभोग, रोमांस की लहर बड़ी तेजी से सारे विश्व के युवा समुदाय में फैलने लगी।

शीघ्र ही इन यौन स्वच्छंदता के वीभत्स दुष्परिणाम आने शुरू हो गए। अमेरिका की एक मेट्रापॉलिटन लाइफ इन्श्योरेन्स कंपनी ने वहाँ की एक प्रसिद्ध पत्रिका में अपनी ओर से पूरे पेज का एक विज्ञापन छपवाया। जिसमें बड़े-बड़े शब्दों में यह चेतावनी छपी थी—"सावधान ! मानवता की सबसे बड़ी शत्रु—'सिफीलिस।' एक भयावह यौन रोग है।" अमेरिका तथा कनाडा में प्रत्येक दस में से एक व्यक्ति इससे ग्रसित पाया गया है।" सिफीलिस एक भयानक छुआछूत का रोग होता है, जिसके दुष्प्रभाव यौन अंगों के अलावा चमड़ी के रोगों, हृदय, आँख, फेफड़े तथा स्नायविक रोगों के रूप में भी प्रकट होते व अंततः अकाल मृत्यु की ओर ले जाते हैं। तब प्रकाशित एक मेडिकल रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका के कई अस्पतालों में भर्ती कुछ मरीजों में ३० प्रतिशत से भी अधिक रोगी किसी न किसी रूप में सिफीलिस रोग से ग्रसित पाए गए थे। लेकिन इतने भयानक परिणाम भी आने वाले अन्य अनेक दुष्परिणामों की पूर्व भूमिका मात्र थे। यौन क्रांति के विस्फोट की यह एक झांकी भर थी।

वहीं पश्चिम के एक विवादास्पद शिक्षाशास्त्री जॉन डिवे ने एक नया मत प्रतिपादित किया कि नैतिकता नाम की कोई चीज नहीं है। आधुनिक मनुष्य अपने जीवन का लक्ष्य वैज्ञानिक प्रयोगों तथा स्वयं के मानवीय अनुभवों के आधार पर प्राप्त कर सकता है, नीतिगत मान्यताओं, मर्यादाओं से हमें बंधने की कोई जरूरत नहीं है। जॉन डिवे की इस विचारधारा से पश्चिम के तत्कालीन अधिकांश शिक्षाशास्त्री, स्कूल व कॉलेज अधिकारी और अधिष्ठाता बहुत प्रभावित हुए और उक्त मान्यता को उन्होंने अपने-अपने क्षेत्र में व्यावहारिक रूप देना शुरू कर दिया। इस कदम ने स्वच्छंद होते तत्कालीन पश्चिमी युवक समाज को एक नई गति दे दी। लगभग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसी समय चल रहे द्वितीय विश्वयुद्ध में पश्चिम के पुरुष बड़ी संख्या में व्यस्त हो गए तथा अपने परिवारों से दूर हो गए। तब पहली बार घर की व्यवस्था को सँभालने के लिए महिलाओं ने घर के बाहर काम करने के लिए कदम रखा। काम के लिए महिलाओं के बाहर निकलने से बड़ी संख्या में छोटे बच्चे माँ के प्यार, देखभाल से वंचित होकर अनुशासनहीन स्थिति में पलने लगे। प्रकारांतर से महिलाओं के इस कदम ने भी खुले यौन संबंध, दांपत्यच्युति तथा बड़े होते युवकों में सामाजिक बगावत, अनुत्तरदायित्व, परिवार विग्रह जैसे दुष्परिणाम उत्पन्न करने में परोक्ष सहायता की। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद स्वच्छंद यौनाचार के विस्फोटक रूप को तत्कालीन गुप्त रोगों के आँकड़ें के रूप में देखा जा सकता है।

नैतिक मूल्यों के निरंतर अवमानना से वैचारिक पर्यावरण में आ रही विकृति के दुष्परिणाम बड़ी संख्या में किशोर अपराध, पारिवारिक विघटन, पलायनवाद, अवैध यौनाचार, यौन रोग, उत्तरदायित्व की उपेक्षा, बड़ों की अवमानना, तिरस्कार आदि के रूप में सामने आने लगे। सन् १९६३ में अमेरिका की एक प्रसिद्ध तथा बड़ी संख्या में बिकने वाली पत्रिका 'लुक' ने अमेरिका में नैतिकता पर गहन खोज के बाद उसके परिणाम कुछ इस प्रकार प्रस्तुत किए—"इस समय अमेरिका में मुश्किल से एक-दो व्यक्ति ही ऐसे होंगे जिन्हें कौन-सा कृत्य नैतिक है और कौन-सा अनैतिक यह मालूम हो। बड़े आश्चर्य का विषय है कि इस समय सारे पश्चिमी जगत् में नैतिकता का पाठ पढ़ाने वाला एक भी संगठन या संस्था नहीं है। अंत में पत्रिका के संपादक ने अपना एक संक्षिप्त नोट छापा कि—"पूरा अमेरिका व यूरोप सही और गलत के अज्ञात के कुहासे से ढका हुआ है और नैतिकता का ह्रास देश की एक प्रमुख तथा भयावह दुष्परिणाम उत्पन्न करने वाली समस्या है।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बढ़ती हुई संपन्नता से जहाँ माता-पिता क्लब, पार्टी आदि के रूप में उपभोग में लग गए, वहीं युवाओं को भी साधनों तथा पैसों से खेलने की इतनी छूट मिली जितनी कि पहले कभी नहीं मिली थी। इस सबके परिणाम लगभग सभी पश्चिमी विश्व के देशों में बड़ी तेजी से मनमुटाव, यौन अपराध, बलात्कार, तलाक एवं हिप्पीवाद आदि के रूप में सामने आए।

स्वीडन की १९६० में प्रकाशित एक सामाजिक अध्ययन रिपोर्ट के अनुसार स्वीडन की दो-तिहाई महिलाएँ विवाह से पूर्व ही गर्भवती हो चुकी होती हैं, अधिकांश विवाह के दिन भी गर्भवती ही रहती हैं। चूँकि पुरुष भी समान रूप से इसके लिए उत्तरदायी है, अतः उन्हें यह सब अटपटा भी नहीं लगता। वे इसे सहज रूप में ले रहे हैं।

स्वच्छंद यौनाचार को मिली सामाजिक छूट ने यौन विकृति की एक और घृणित दिशा समलैंगिक यौन संबंध (होमोसेक्सुएलिटी) में कदम रखा। सन् १९६० के अंतिम वर्षों में अधिकांश पश्चिमी देशों में 'होमोसेक्सुएलिटी' का बड़ी तेजी से जोर पकड़ना शुरू हुआ। अब तो कई देशों में इस अनोखी जीवन शैली को कानूनी मान्यता भी मिल चुकी है तथा कई बड़े-बड़े शहरों में ऐसे लोगों की अलग से बड़ी-बड़ी कालोनियाँ हैं। अभी भी यह एक फैशन के रूप में पश्चिम देशों के, उच्च विकसित समाज, अरब राष्ट्रों आदि में प्रचलित हैं। यदि बात यहीं तक रहती तो इसे नैतिक आंदोलनों द्वारा मिटाया अथवा अन्यान्य देशों व समाजों में फैलने से रोका जा सकता था, किंतु प्रकृति कभी अपनी अनुशासन व्यवस्था में उल्लंघन स्वीकार नहीं करती। समलैंगिकता की परिणति एक ऐसे असाध्य रोग के रूप में १९८० के दशक के रूप में उभर कर आई है, जो कैंसर से भी अधिक घातक व शीघ्र प्राण लेने वाला रोग है। ए० आय० डी० एस० (एक्वायर्ड इम्यूनो डेफिशिएन्सी सिंड्रोम) नामक इस रोग में जीवनीशक्ति ३ से ५ माह के अंदर छूँछ हो जाती है, शरीर गल जाता है व कष्ट साध्य मृत्यु

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हो जाती है। यह रोग एक देश विशेष तक ही सीमित होकर नहीं रह गया है; द्रुतगामी जेट विमानों ने अब सभी राष्ट्रों को समीप ला दिया है—अतः अप्राकृतिक यौनाचार के अतिरिक्त रोगियों के ब्लड ट्रांस-फ्यूजन या उन्हें लगाए गए इंजेक्शन की सुई द्वारा भी यह अब अविकसित एवं विकासशील देशों में तेजी से फैल चुका है।

सामाजिक एवं नैतिक मूल्य के माध्यम से हो रहे इस प्रदूषण को फैलाने में आग में घी की तरह काम किया है—रेडियो, टी० वी०, फिल्मों, वीडियो द्वारा अश्लील विज्ञापनों एवं ब्लू फिल्मों के जहर ने। यह जहर अब बढ़ता ही जा रहा है। फलतः स्कूल में प्रवेश करने वाले भावी समाज के कर्णधार भी इसकी लपेट में आ रहे हैं।

जेनाइटल हर्पीस तथा 'एंटीबायोटिक रेसिस्टेंट गोनोरिया' जैसे दो दर्जन से अधिक अन्य संक्रामक असाध्य यौन रोग बड़ी तेजी से फैल रहे हैं। जिन्हें अब नियंत्रण के बाहर माना जाने लगा है।

अमेरिका की एक स्वास्थ्य संस्था के अनुसार होमोसेक्सुअल कम्यूनिटी के लोगों में ७५ प्रतिशत से अधिक लोग इन बीमारियों से ग्रसित पाए गए। यह रोग उन महिलाओं व बच्चों में भी संव्याप्त पाए जाते हैं, जो ऐसे रोगी से किसी रूप में संबंधित हैं। वस्तुतः यौन रोगों का यह संक्रामक ज्वार अपनी चपेट में दो तिहाई से अधिक युवा पीढ़ी को ले चुका है। आधुनिकता की यह एक बहुत बड़ी कीमत समाज को चुकानी पड़ी है।

फ्रायड के नये प्रतिपादनों से प्रेरणा लेकर प्राकृतिक जीवन की ओर लौटने के नाम पर शुरू इंस वितंडावाद को बीटल्स व रजनीशवाद ने और भी भड़काया व विकृत रूप दे डाला है। इस अभियान से हो रहे वैचारिक प्रदूषण के कारण हजारों युवक-युवतियाँ प्राकृतिक भोजन, प्राकृतिक प्रजनन, प्राकृतिक शिशुपालन एवं पोषण (मां के दूध के आधार पर) के स्थान पर फ्री सेक्स

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(स्वच्छंद यौन संबंध) नशीली दवाओं का उपयोग तथा सामूहिक निवास आदि की नई जीवन शैली अपनाने लगे हैं तथा इसे ही प्राकृतिक जीवन की ओर लौटने का एक कदम समझने लगे हैं। बाद में इस अभियान ने 'युनीसेक्स' के नाम से एक और विकृत रूप धारण किया। 'युनीसेक्स' एक फैशन के रूप में प्रसिद्ध हो गया। इसके अंतर्गत युवकों ने महिलाओं जैसे बाल रखना तथा युवतियों ने युवकों जैसे कपड़ा पहनना शुरू कर दिया। कुल मिलाकर युवक-युवती जैसे और युवतियाँ, युवकों जैसे स्वयं को दिखाने के नए फैशन को बड़ी तेजी से अपनाने लगे। इसमें यौन वर्जनाओं का स्पष्ट उल्लंघन था।

इसके बाद के उतार-चढ़ाव और भी अधिक विडंबना भरे हैं। स्वच्छंद जीवन जीने की ओर बढ़ते ये कदम 'वाइफ स्वैपिंग' अभियान के रूप में सामने आए। पिछले दो दशकों में वैवाहिक जीवन की जितनी उपेक्षा और अवमानना हुई, वह पहले कभी नहीं हुई थी। इस दौरान हजारों की तादाद में पारिवारिक विग्रह हुए तथा जो नए परिवार बसे, वे विवाह की मर्यादाओं के आधार पर नहीं, बल्कि बिना विवाह के, "जब तक मन मिले, तब तक साथ रहने" के थोथे सिद्धांत पर बसने शुरू हुए। कुछ समाजशास्त्रियों ने भी इस सामयिक समझौते के रहन-सहन को पारिवारिक वैवाहिक बंधन से श्रेष्ठ बताकर सारे समाज की ओर से एक मोहर लगा दी।

नारी स्वतंत्रता आंदोलन (वूमेन्स लिबरेशन मूवमेंट) जिसने पश्चिमी देशों के लाखों परिवारों को बरबाद कर दिया, लाखों बच्चों को तबाह कर दिया, वस्तुतः स्वच्छंद जीवन शैली की ओर महिलाओं के बढ़ते हुए आकर्षण का ही एक दुष्परिणाम है। पारिवारिक जीवन में इसका गहरा दुष्प्रभाव लाखों परिवारों के करोड़ों लोगों द्वारा अनुभव किया गया और किया जा रहा है। इसका अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि इस अभियान के जो प्रारंभिक प्रबल समर्थक और अग्रदूत थे, वे ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इससे इतना संत्रस्त हो गए हैं कि अब पुनः संयुक्त परिवार की मांग करने लगे हैं।

इसी अमर्यादित यौन स्वच्छंदता के दुष्परिणाम कई करोड़ों अजन्मे शिशुओं की हत्या करने वाले गर्भपात के रूप में सामने आए हैं और आते जा रहे हैं। जैसे-जैसे नये शिशु पैदा हो रहे हैं, वैसे-वैसे उनमें अवैध शिशुओं की संख्या लगातार बढ़ रही है। पश्चिमी देशों के कुछ बड़े शहरों में इस प्रकार के अवैध शिशुओं अर्थात् विवाह से पूर्व ही बच्चों के जन्म की संख्या कुल शिशु जन्म संख्या की आधे से अधिक पाई गई है।

पिछले कुछ दशकों को एक और बुरे व्यसन, मद्यपान तथा अन्य घातक नशों के आदी लोगों की संख्या में लगातार वृद्धि के लिए भी याद किया जाता रहेगा। एक रिपोर्ट के अनुसार अपने देश में प्रतिवर्ष दस लाख से अधिक लोग शराब के बुरी तरह आदी (व्यसनी) हुए और इसी की मदहोशी में लगभग इसी संख्या में लोग अनेक बीमारियों, अपराधों तथा अकाल मृत्यु के शिकार हुए।

"युनाइटेड स्टेट्स फैकल्टी ऑफ ड्रग एब्यूज" के डायरेक्टर विलियम पोलिन के अनुसार "मात्र अमेरिका में पिछले २० वर्षों की अवधि में नशीली दवाओं की खपत में अत्यंत तेजी से वृद्धि हुई है, जो मात्र १००-२०० प्रतिशत नहीं, बल्कि पूरे ३००० प्रतिशत की वृद्धि है।"

इस प्रकार प्रथम विश्वयुद्ध के बाद पिछले वर्षों में सर्वतोमुखी विकास, प्रगति व सुख-संपन्नता से भरा जीवन प्रदान करने के दावे के साथ जो औद्योगिक और वैज्ञानिक क्रांति शुरू की गई थी तथा सिगमंड फ्रायड के क्रांतिकारी प्रतिपादन के आधार पर मानवीय मस्तिष्क को स्वस्थ तथा तनावमुक्त रखकर खुशहाल सामाजिक जीवन जीने की जो कल्पना की गई थी, उसमें लगातार निराशा ही हाथ लगी है। उलटे जिन मान्यताओं को प्रगति व शांति का आधार माना गया था, उन पर चलने से सुख-शांति और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सामाजिक जीवन का पूरा ढाँचा लगभग पूरी तरह धराशायी अवश्य हो गया है। प्रगति के नाम पर नैतिक और सामाजिक मूल्यों की दृष्टि से समाज इतना नीचे गिर चुका है, जिसकी तुलना में प्रगतिजन्य उपलब्धियाँ बहुत नगण्य प्रतीत होती हैं।

यदि कहा जाए कि प्रगति के नाम पर अनैतिकता ने सामाजिक पर्यावरण से खिलवाड़ कर मानवजाति को पतन के गर्त में ढकेलने में ढलान का काम किया है, तो अतिशयोक्ति न होगी। समय का तकाजा है कि मनुष्य अभी भी सँभले व समाज के ढाँचे को बदले। इसे किसी सीमित समुदाय में नहीं, वरन् सारी संस्कृतियों के परिप्रेक्ष्य में बदलना होगा। नैतिकता की कीमत पर, आदर्शों की बलि देकर आधुनिकता किसी भी कीमत पर स्वीकारी नहीं जा सकती। जो मन-मस्तिष्क स्वच्छंदवाद के नाम पर उच्छृंखलता में लिप्त हो गए, उन्हीं को वापस नई दिशा दी जा सकती है, विचार परिवर्तन कर नवसृजन में जुटाया जा सकता है। आंदोलन के प्रवाह को नई दिशा व नया चिंतन भर देना है। "विचार क्रांति अभियान" के प्रयासों से जैसे परिवर्तन इस शताब्दी में पूर्व में देखने को मिले हैं, उन्हें दृष्टिगत रख उत्साहपूर्वक यह कहा जा सकता है कि यह असंभव नहीं।

❑ ❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकृति से खिलवाड़

बुद्धिमत्ता अच्छी चीज है, पर अति हर चीज की हानिकारक है। प्रकृति की गोद में पलकर उसका माँ की तरह दूध पीना उपयुक्त है, पर सोने का एक अंडा रोज देने वाली मुर्गी का पेट चीरकर सारे अंडे एक साथ ही निकालने का लालच लाभ के स्थान पर हानिकर ही अधिक सिद्ध होता है।

प्रकृति-संतुलन बिगाड़ने वाली बुद्धिमत्ता इन दिनों जोरों से चल रही है और उससे मनुष्य को लाभ के स्थान पर हानि ही अधिक हो रही है।

प्रकृति की सुरम्य वाटिका में चित्र-विचित्र जीवधारियों का जमघट है। प्रत्येक विश्व-उपवन की शोभा बढ़ाते तथा सौंदर्य को निखारते हैं। उसमें मानवीय प्रगति में प्रत्यक्ष योगदान देने वाले जीवधारी भी हैं और ऐसे प्राणी भी जो मनुष्य के लिए तो अनुपयोगी हैं, पर चैतन्य चक्र के अनिवार्य घटक होने के कारण उनकी भी महत्ता है। स्रष्टा ने कुछ भी ऐसा नहीं बनाया है, जिसे निरर्थक कहा जा सके। मनुष्य अपने सीमित स्वार्थ की कसौटियों पर किसी भी वस्तु अथवा जीवधारी की उपयोगिता-अनुपयोगिता को कसता है और उन्हें सार्थक अथवा निरर्थक ठहराता है, पर यह तथ्य नहीं भूलना चाहिए कि पृथ्वी एक मात्र मनुष्य के लिए नहीं बनाई गई है। यह तो अन्य प्राणी समुदाय और व्यापक सृष्टि की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर विनिर्मित हुई है। किस जीव को इस विशाल उपवन में किस प्रकार की जरूरत है ? यह निर्णय करना मनुष्य का काम नहीं है। कोई और सत्ता है, जो अपनी स्वसंचालित व्यवस्था द्वारा समस्त सृष्टि प्रक्रिया तथा इकोलॉजिकल चक्र का संचालन एवं नियंत्रण करती है। पैदा करना और मारना उसी व्यवस्था के अंतर्गत आता है। मनुष्य इस प्रक्रिया में यदि अनावश्यक हस्तक्षेप करता है, तो यह उसकी धृष्टता ही कही जाएगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जड़ और चेतन की युग्म इस मनोरम सृष्टि में जड़-प्रकृति का अपना महत्त्व है और चेतनाधारी जीवों का अपना। जड़ का सौंदर्य चेतना की अभिव्यक्ति है, जो दोनों के अभिन्न और अन्योन्याश्रित संबंधों को व्यक्त करता है। मानवीय हस्तक्षेप प्रकृति को सुरम्य और चेतना को सुविकसित करने तक ही उचित है। इस सीमा रेखा का उल्लंघन करने से और अदूरदर्शी कदम उठाने से इकोलॉजिकल चक्र में व्यतिरेक उत्पन्न होता है, जिसकी परिणति विविध प्रकार की समस्याओं के रूप में दृष्टिगोचर होती है।

जड़ प्रकृति को ही लें तथा उसकी स्थिति का विश्लेषण करें तो मालूम होगा कि तथाकथित प्रगति के नाम पर मनुष्य ने उसकी जितनी छेड़छाड़ की, उससे लाभ कम और हानि अधिक हुई है। दुर्भाग्यवश समृद्धि का मापदंड भी प्रत्यक्ष सीमित भौतिक उपलब्धियों के आधार पर आँका जाता है। संतुलित पर्यावरण के असीम होते हुए भी परोक्ष वातावरण संबंधी दैवी उपलब्धियों को भौतिक लाभों के रूप में मानने की आधुनिक परंपरा नहीं है। मनुष्य ने उन परोक्ष अनुदानों का महत्त्व समझा होता और उसका सही मूल्यांकन किया होता तो कभी भी प्रकृति को इतना अधिक छेड़ने का दुस्साहस नहीं होता, पर उसे दुर्बुद्धि ही कहना चाहिए कि मनुष्य जाति ने तात्कालिक लाभों के समक्ष विपुल दूरगामी लाभों को ठुकरा दिया। पर प्रकृति के दोहन के अदूरदर्शी प्रयासों के दुष्परिणामों से स्वयं बचा न रह सका। समस्त विश्व के समक्ष प्रस्तुत होने वाली अनेकानेक प्रकार की प्राकृतिक विभीषिकाएँ वस्तुतः मानवी दुष्कृत्यों और अदूरदर्शी प्रयासों का ही प्रतिफल है।

☆ महामरण की तैयारी

पृथ्वी, जल एवं वायु के अगणित अनुदानों से भूलोक पर जीवन गतिशील है। सौरमंडल के अन्यान्य ग्रहों का भी इसमें महत्त्वपूर्ण सहयोग है। उनके अनुदान न मिलें तो मनुष्य का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पुरुषार्थ भी कुछ काम न कर सकेगा और असमय मरने की स्थिति आ जाएगी। मनुष्य ने जो कुछ भी भौतिक क्षेत्र में उपलब्ध किया है, उसमें उसके स्वयं के पुरुषार्थ का कम, प्रकृति की अनुकूलता का अधिक योगदान है, पर ऐसा लगता है कि मानव उस सत्य को भुला बैठा है कि संतुलन की हालत में ही प्रकृति से लाभ उठाया जा सकता है। प्रगति की अंधी दौड़ से समस्त वातावरण ही विषाक्त हो उठा है, प्रकृति चक्र का असंतुलन बढ़ता जा रहा है। बढ़ती विषाक्तता से वायुमंडल की पोषक विशेषता समाप्त होती जा रही है। अगणित प्रकार के संकट उभर रहे हैं।

पृथ्वी के वायुमंडल में २१ प्रतिशत ऑक्सीजन तथा ·०३२ प्रतिशत कार्बन डाइ-ऑक्साइड की मात्रा का संतुलन माना गया है। यह अनुपात ६५० तथा १ का पड़ता है, पर मनुष्य की अदूरदर्शिता के कारण अब कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा वायुमंडल में निरंतर बढ़ती जा रही है। यह सूर्य के प्रकाश तथा विद्यमान विकिरण को अपने में शोषित कर लेती है। पृथ्वी की गर्मी को अंतरिक्ष में जाने से रोकती है। फलस्वरूप विश्व का तापक्रम निरंतर बढ़ता जा रहा है। अनुमानतः सारे संसार में वार्षिक ईंधन की खपत में ५ प्रतिशत की वृद्धि होने से आगामी दस वर्षों में विश्व के तापक्रम में ४ डिग्री फारेनहाइट की बढ़ोत्तरी हो जाएगी।

१९७९ में किए गए एक पर्यवेक्षण के अनुसार अकेले संयुक्त राज्य अमेरिका में १४ करोड़ ७० लाख टन कार्बन मोनोऑक्साइड, २ करोड़ ५० लाख टन धूलिकण, ३ करोड़ ४० लाख टन सल्फर डाइ-ऑक्साइड, २ करोड़ ३० लाख टन नाइट्रोजन ऑक्साइड और ३ करोड़ ५० लाख टन हाइड्रोकार्बन वायुमंडल मे फेंके गए। ये विजातीय पदार्थ विभिन्न माध्यमों से विपुल परिमाण में निकलते हैं। उद्योगों की बाढ़ ने गत, तीन वर्षों में यह स्थिति और भी विकट बना दी है।

कार्बन मोनोऑक्साइड, सल्फर डाइ-ऑक्साइड, हाइड्रोकार्बन, नाइट्रोजन ऑक्साइड, कार्बन डाइ-ऑक्साइड जैसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनेक गैसें वायुमंडल में मिलकर विषाक्तता पैदा करती हैं। कार्बन मोनो-ऑक्साइड एक रंगहीन, गंधहीन पर विषैली गैस है, जो दहन प्रक्रिया के अंतर्गत ईंधन में कार्बन के पूर्णतः जलने की स्थिति में ऑक्सीकृत होकर पैदा होती है। सल्फर डाइऑक्साइड की उत्पत्ति तेल व कोयला जलाने से होती है। ६० प्रतिशत सल्फर डाइऑक्साइड का उत्पादन कोयला जलाने से ही होता है। हाइड्रोकार्बन अधजला अवशिष्ट ईंधन से पैदा होता है, ऑटोमोबाइल्स इसके प्रमुख स्रोत हैं। इसी प्रकार विषैली गैस नाइट्रोजन ऑक्साइड की उत्पत्ति जीवाश्म ईंधन को अत्यधिक तापमान पर जलाने से होती है। यातायात साधनों तथा भारी उद्योगों से यह पैदा होती है।

कार्बन मोनोऑक्साइड को एक धीमा विष कहा जाता है, जो शरीर में प्रवेश करके ऊतकों में विद्यमान जीवनदायी ऑक्सीजन की मात्रा में ह्रास उत्पन्न करती है। इससे शारीरिक शिथिलता तथा मानसिक अवसाद की अनुभूति होती है। स्वस्थ व्यक्ति की भी कार्य क्षमता घट जाती है। मानसिक विक्षोभ के कारण दुर्घटनाग्रस्त होने की संभावना बढ़ती है। श्वास तथा स्नायु संबंधी क्रॉनिक रोगों को बढ़ावा देने में इस गैस की प्रमुख भूमिका होती है।

सल्फर डाइऑक्साइड श्वसन तंत्र को उत्तेजित करता तथा उसके सामान्यक्रम में व्यतिरेक उत्पन्न करता है। नाइट्रोजन ऑक्साइड रक्त विकारों तथा बच्चों में इन्फ्लुएंजा उत्पन्न करता है। प्रमुख बात तो यह है कि इन सभी विषैली गैसों की भूमिका मनोविकारों को जन्म देने हेतु जितनी उत्तरदायी है, उतनी ही पर्यावरण प्रदूषण संबंधी भूमिका भी उल्लेखनीय है।

विशेषज्ञों का निष्कर्ष है कि सन् १६५० के बाद संसार का तापक्रम बढ़ने लगा है। इसका कारण वे वायुमंडल में बढ़ते कोहरे को बता रहे हैं। इस सघन कुहासे के बढ़ने के अनेकों कारण हैं— कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा में वृद्धि, कारखानों की चिमनियों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से धूम—कोहरे (स्मॉग) का बढ़ना, भूगर्भ में आणविक परीक्षण, ईंधन का विपुल परिमाण में दहन आदि।

हैदराबाद के हुसैन सागर सरोवर की स्थिति तो और भी खराब है। सी० आर० ई० बी० एल० के डायरेक्टर डॉ० पी० सी० कामर्त्त ने सरोवर के जल का परीक्षण करके बताया कि यह जल विभिन्न रसायनों से युक्त, तैलीय, गंदा, दुर्गंधयुक्त तथा बहुत ज्यादा अम्लीय हो गया है। डॉ० टी० वी० केसिंग का तो कहना है कि सरोवर से खतरनाक गैसें निकलने लगी हैं, जिसके कारण चर्मरोग, एलर्जी तथा आँखों में जलन होने लगती है।

भोपाल में जल के स्रोत वहाँ के सरोवर ही हैं, पर अधिकतर सरोवरों की स्थिति दयनीय है। जागरुकता की कमी, अव्यवस्था तथा अस्वच्छता के चलते पूरे शहर का कचड़ा इन सरोवरों को "कचरे का तालाब" बनाता जा रहा है। ऐसी ही भयंकर स्थिति काश्मीर के डल और वागिन, मणिपुर के लोकतक, उदयपुर के जयसमंद सरोवरों की भी हैं।

वायुमंडल के अतिरिक्त भूमंडल पर विषाक्त रासायनिक तत्त्वों के घुलते-मिलते रहने से उसकी उर्वरता धीरे-धीरे नष्ट होती जा रही है। रासायनिक तत्त्वों से फैलते प्रदूषण के कारण यूरोप की लगभग ४० प्रतिशत जमीन अब कृषि योग्य नहीं रही। फ्रांस में एक करोड़ एकड़ जमीन बरबाद हो चुकी है। अनुमानतः रेगिस्तान का क्षेत्रफल हर वर्ष संसार में तीस हजार एकड़ बढ़ता जा रहा है। एक ओर संसार की बढ़तीं आबादी के लिए अधिक कृषि योग्य भूमि चाहिए, दूसरी ओर कृषि योग्य भूमि का एक बड़ा भाग प्रदूषण की विषाक्तता के कारण उत्पादन क्षमता गँवाता जा रहा है। ऐसी स्थिति में अन्न का संकट अगले दिनों और भी गंभीर रूप में प्रस्तुत हो सकता है।

जल स्रोतों की स्वच्छता एवं विशेषता अब नष्ट होती जा रही है। झीलों, नदियों में भी वह विष निरंतर घुलता जा रहा है। अछूते समझे जाने वाले सौंदर्य स्थल उनकी चपेट में आ गए हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर्यावरण मंत्रालय के अध्ययन की रिपोर्ट के अनुसार "नैनीताल की प्रख्यात झील अब पूर्णतः प्रदूषित हो चुकी है।" अब तक यह झील लाखों पर्यटकों के मनोरम पर्यटन केंद्र के रूप में विख्यात थी। झील के जल का अध्ययन करने वाले डॉ० एस० एम० दास तथा अन्य विशेषज्ञों की आम राय है कि "उसमें कॉपर, कोबाल्ट, शीशा, मैंगनीज, जस्ता सोडियम तथा कैल्सियम जैसे धातुओं का प्राचुर्य है। इसके अतिरिक्त जल में अनेक विषाक्त रासायनिक तत्त्व तथा जीवाणु पाए गए हैं। प्रदूषण बढ़ने से झील की अधिकांश मछलियों की प्रजातियाँ अब दम तोड़ रही हैं। जो जीवित बची हैं, वे विषाक्त हैं।

मछली को आहार रूप में प्रयुक्त करने वालों के लिए नदियों में बढ़ती विषाक्तता के कारण गंभीर संकट आ खड़ा हुआ है। जापान के क्यूशू द्वीप के पूर्व में "मीनीमाता" नामक एक नगर है। उस नगर में एक विशाल फैक्टरी विनाइल क्लोराइड तथा एसिटल्डी हाइड्रेट नामक रसायनों का निर्माण करती है। कुछ वर्षों पूर्व वहाँ एक भयंकर महामारी फैली। एक जैसे रोग से ग्रसित होकर बहुत-से लोग मरने लगे। आरंभ में रोगी के अंग तथा ओंठ शून्य हो जाते तथा एक सप्ताह बाद स्पर्श बोध की, बोलने, सुनने की क्षमता समाप्त हो जाती थी। नेत्र ज्योति भी कुछ ही दिनों बाद नष्ट हो जाती। गंभीर यंत्रणा सहते हुए अंततः रोगी मृत्यु का शिकार बन जाता। इस अविज्ञात रोग से सैकड़ों व्यक्ति मरे, हजारों रुग्ण होकर अपाहिज बन गए।

कारण की खोजबीन करने पर मालूम हुआ कि "मीनीमाता" खाड़ी की मछलियाँ फैक्टरी द्वारा फैलाए गए प्रदूषण के कारण विषाक्त हो गई हैं। उसमें पारे की मात्रा अत्यधिक पाई गई, तब से खाड़ी में मछली पकड़ना पूर्णतः निषिद्ध कर दिया गया।

स्वीडन के ४० क्षेत्रों, फिनलैंड के ५ तथा यूनाइटेड स्टेट के १७ राज्यों में मछली पकड़ने को कानूनी जुर्म घोषित कर दिया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गया है। ऐसा मछलियों के भीतर बढ़ती विषाक्तता को देखते हुए करना पड़ा है।

लॉस एंजेल्स के निकट यू० एस० ए० की सबसे बड़ी फैक्टरी डी० डी० टी० उत्पादक फैक्टरी है। फैक्टरी से निकले कचरे को निकटवर्ती सांतामोनिका नामक खाड़ी में वर्षों से बहाया जाता रहा है। विगत वर्षों में कितने ही व्यक्तियों की अकस्मात् मृत्यु हो गई। उनके शवों का परीक्षण करने पर मालूम हुआ कि डी० डी० टी० विषाक्ततायुक्त मछलियाँ खाने के कारण उनकी अकाल मृत्यु हुई।

पौलैंड की सबसे बड़ी नदी जो ६६४ मील लंबी है, जिसका जल संचार क्षेत्र ७५०२२ वर्गमील है, में इतना अधिक प्रदूषण भर गया है कि उसके तटों पर रहने वालों को विभिन्न रोगों का संकट आ खड़ा हुआ है। खनिज उद्योग तथा कागज उद्योग के कारण अपनी सुंदरता के लिए विख्यात ओंटेरियो—कनाडा की 'एकीटे लेक' अब अपनी सौंदर्य विशेषता गँवा चुकी है। इसी प्रकार अवकाश मनाने वालों द्वारा प्रयुक्त पैसिफिक समुद्र तट का निकटवर्ती क्षेत्र अब तेजी से मरुस्थल में बदलता जा रहा है।

अपनी सुंदरता के लिए प्रख्यात टोकियो अब संसार का सबसे अधिक प्रदूषित नगर है। यहाँ सुरक्षा चौकियों पर ऑक्सीजन के सिलेंडर टंगे रहते हैं, ताकि श्वास के लिए शुद्ध वायु की कमी पड़ते ही तैनात सिपाही ऑक्सीजन ग्रहण कर सकें।

एक सर्वेक्षण अध्ययन रिपोर्ट के अनुसार लंदन में चार घंटे ट्रैफिक की ड्यूटी सँभालने वाले पुलिसकर्मियों के फेफड़े में इतना विष भर जाता है, मानों उनने १०५ सिगरेट पी ली हों। लंदन के सत्तर प्रतिशत विद्यार्थियों की आम शिकायत आँख, नाक एवं गले के रोगों की है। जब टोकियो के लोगों से एक चुनाव में पूछा गया कि आप लोगों को सबसे अधिक किस चीज की जरूरत है, तो चारों ओर से एक ही उत्तर मिला—"शुद्ध हवा और साफ आकाश की"।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कृषि विज्ञानियों का मत है कि पृथ्वी का लगभग एक तिहाई कृषि क्षेत्र कुछ ही वर्षों के अंदर बेकार हो जाएगा। प्रभावित होने वाले क्षेत्रों में भारत, पाकिस्तान, चीन, पश्चिम एशिया, यू० एस० ए० तथा कनाडा प्रमुख हैं। एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार पृथ्वी का पाँचवाँ हिस्सा अर्थात् तीन करोड़ वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पूर्णतः सूखने की स्थिति में पहुँच गया है। अनुमानतः २ लाख वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र प्रतिवर्ष कृषि कार्य हेतु अनुपयुक्त होता जा रहा है। इससे १३० अरब रुपयों की फसल के रूप में क्षति हो रही है।

इसका कारण विशेषज्ञ वृक्षों की अंधाधुंध कटाई को मानते हैं। हरितिमा बादलों को बरसने के लिए आकर्षित करती है। उसके उन्मूलन के कारण पृथ्वी की उर्वरता नष्ट हो रही है। दूसरी ओर वृक्ष, प्रदूषण रूपी गरल का पान करके वायुमंडल को दूषित होने से बचाते हैं। उनकी बड़ी संख्या प्रति वर्ष तंबाकू रूपी विष के उत्पादन में आहुति स्वरूप दी जा रही है।

एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका १९८२ के अनुसार ३ लाख ६३ हजार टन तंबाकू के उत्पादन के लिए भारत में मात्र एक वर्ष में १२ लाख ८६ हजार एकड़ भूमि में विद्यमान जंगलों को वृक्षविहीन कर दिया गया। खेत से काटी गई तंबाकू की कच्ची पत्तियों को सुखाने के लिए वृक्षों के ईंधन का ताप देना पड़ता है। विशेषज्ञों का मत है कि "१००० डिब्बों की सिगरेटों की तंबाकू पकाने के लिए लगभग १०० टन लकड़ी की जरूरत पड़ती है, जो औसतन २० बड़े पेड़ों से प्राप्त होती है। प्रतिदिन भारत में १७ करोड़ सिगरेटें तथा ४४ करोड़ बीड़ियाँ बनती हैं। ५०० बीड़ी अथवा सिगरेट के तंबाकू को पकाने में एक पूरा वृक्ष खप जाता है। प्रतिदिन देश में बनने वाली सिगरेट, बीड़ियों को पकाने के लिए अनुमानतः १२ लाख २० हजार पेड़ों के ईंधन की जरूरत होगी। यह तो मात्र भारत के आँकड़ें हैं। समस्त विश्व में तंबाकू

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्पादन के लिए प्रतिवर्ष एक बड़े भू-भाग की हरीतिमा नष्ट की जा रही है।

प्रदूषण का विषपान करने वाले पेड़-पादपों के घटने तथा निरंतर वायुमंडल में विषाक्तता भरने से अब गंभीर संकट की स्थिति आ खड़ी हुई है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि अब से कुछ वर्षों बाद सन् २००८ तक वायुमंडल में बढ़ती कार्बन डाइ-ऑक्साइड गैस की मात्रा के कारण भू-मंडल का औसत तापक्रम ५ डिग्री सेंटीग्रेड से भी अधिक बढ़ जाएगा और ऐसी विनाशकारी परिस्थितियाँ पैदा हो जायेंगी जिनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।

अगणित प्रकार के उभरते संकट इस बात का संकेत देते हैं कि यदि मनुष्य ने अपनी अदूरदर्शिता न छोड़ी, तो प्रस्तुत संकट और भी गंभीर होंगे तथा महाविभीषिका के रूप में प्रस्तुत होकर समस्त मानवजाति को घुट-घुटकर मरने को विवश करेंगे। वस्तुतः यह मनुष्य की स्वयं की आमंत्रित की हुई सामूहिक आत्महत्या होगी।

☆ "प्रकृति से छेड़छाड़ अब बंद की जाए"

पिछले कुछ दशकों से जड़ प्रकृति में अनावश्यक छेड़छाड़ के कारण मौसमी व्यतिरेकों—बाढ़, सूखा, भूकंप, भूस्खलन की घटनाओं में तेजी से वृद्धि हुई है और उनकी प्रतिक्रिया स्वरूप फैलने वाली अनेक तरह की आधि-व्याधियाँ समूचे विश्व में दृष्टिगोचर हो रही हैं। जड़ तो जड़ है, पर जीवचेतना संवेदनाओं से युक्त है। मनुष्य चैतन्य जीवों में क्षमताओं की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है। बुद्धिबल के बलबूते उसका प्राणि-जगत् पर आधिपत्य है। अन्य जीवों को भी अपनी ही भाँति सृष्टि का एक आवश्यक और अभिन्न घटक मानकर यदि जीने का अधिकार मनुष्य ने दिया होता अथवा उन्हें स्वच्छंद जीने के लिए छोड़ दिया होता, तो यह विश्व कहीं अधिक सौंदर्य से युक्त दिखाई पड़ता, पर मनुष्य की आंतरिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्रूरता का शिकार बनने लगे निरीह वन्य प्राणी। कुछ जातियाँ शिकार के मनोरंजन के लिए मारी गईं, तो कुछ विकृत मांसाहार के स्वाद के कारण मनुष्य के पेट में जा पहुँची। कुछ को आधुनिकता की बढ़ती हुई मांग के कृत्रिम संसाधनों के निर्माण में तड़प-तड़पकर अपने प्राण गँवाने पड़े। इस निष्ठुर प्रक्रिया के कारण विश्व वाटिका से विभिन्न जीवों की कितनी ही जातियाँ-प्रजातियाँ विलुप्त होती जा रही हैं।

जीव विशेषज्ञों के अनुसार अपने देश में पाँच सौ से भी अधिक प्रजाति के जानवर, तीन हजार से भी अधिक पक्षी तथा तीन हजार से भी अधिक किस्म के नन्हें कीड़े-मकोड़े पाए जाते थे। जानवरों में ३५ प्रजातियों का वर्षों पूर्व से अस्तित्व समाप्त हो चुका है। कुछ वर्षों पूर्व तक हिमालय के उत्तरी-पश्चिमी क्षेत्र में भूरे रंग के बटेर पक्षी की बहुलता थी, पर इस क्षेत्र में भी शिकारियों की घुसपैठ होने से उनका अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया। लंबी पूँछ और लाल चोंच वाली इस जाति के पक्षियों की सुंदरता देखते ही बनती थी। हिमालय के तराई क्षेत्र में गुलाबी सिर वाले दुर्लभ बत्तख पाए जाते थे, जो विश्व के अन्य किसी भी स्थान पर नहीं मिलते। अभी तीन दशक पूर्व तक ये हिमालय के अंचल में निर्द्वंद्व विचरते दिखाई भी पड़ते थे, पर अब इनका नामोनिशान नहीं मिलता। राष्ट्रीय संग्राहलयों में मात्र इनके अवशेष देखे जा सकते हैं। आंध्रप्रदेश के कुछ क्षेत्रों तक गोदावरी तट पर इस सदी के आरंभ में कोर्स नामक पक्षी मिलते थे, पर अब उस जाति का एक भी पक्षी नहीं दिखाई पड़ता।

पक्षियों के अतिरिक्त जंगलों में रहने वाले शेरों, चीतों, बाघों, बारहसिंघों, हिरनों आदि की संख्या भी तेजी से घटती जा रही है। मध्य प्रदेश के बीहड़ जंगल शेरों के लिए विख्यात थे। उनकी संख्या अभी एक दशक पूर्व हजारों में थी, पर एक रिपोर्ट के अनुसार अब मात्र चार सौ के लगभग रह गई हैं। बारहसिंघों का तो मात्र नामोनिशान रह गया है। सरकारी कानूनों द्वारा जंगली

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जानवरों का शिकार करना यों तो अब अवैध घोषित कर दिया गया है, पर चोरी-छिपे उनके शिकार का क्रम अभी बना हुआ है। नागालैंड में औसतन प्रतिदिम पाँच शेर मारे जाते हैं। खरगोश, लोमड़ी, सियार, हिरण तो प्रतिदिन हजारों की संख्या में मारे जाते हैं। वन्य विशेषज्ञों का मत है कि तीव्रता से वन्य जीवों की संख्या में ह्रास का एक प्रधान कारण यह है कि प्रकृति-सौंदर्य को बढ़ाने वाले ये सुंदर जीव अब मानवीय क्रूरता के शिकार होकर धनोपार्जन के साधन बन गए हैं। जापान, स्वीडन, डेनमार्क, आस्ट्रेलिया, अमेरिका आदि देशों में इनका बड़ी संख्या में लुक-छिपकर निर्यात हो रहा है। लंगूर व बंदरों की संख्या भी अब तेजी से देश में घटती जा रही है। ऐसा अनुमान है कि विकास क्रम में मनुष्य के अधिक नजदीक होने के कारण वैज्ञानिकों को मानवीय प्रकृति एवं शरीर संस्थान के सूक्ष्मतम परिवर्तनों को समझने एवं अंगों के प्रत्यारोपण में इनके माध्यम से अधिक सुगमता होती है।

इकोलॉजी विशारदों का निष्कर्ष है कि प्रकृति संतुलन की प्रक्रिया सृष्टि के संपूर्ण परिसर तथा जीवों के परस्पर सघन अनुबंधों पर निर्भर करती है। जड़-चेतन के प्रत्येक पेड़-पौधे, वनस्पतियाँ, ऑक्सीजन, जल, प्रकाश तथा पशु-पक्षी, जीव-जंतु, मनुष्य सभी एक विराट् जीवन चक्र के अभिन्न अंग हैं। परस्पर सबका एक-दूसरे से घनिष्ठ संबंध है। जड़ और चेतन के संयोग से ही पृथ्वी पर जीवन का अस्तित्व है। पौधे मिट्टी से अपनी जड़ों द्वारा सांद्रता खींचते हैं। हवा और रोशनी मुक्त हस्त से पौधे को अपना अनुदान देते हैं। जिसे पीकर पौधे परिपोषित और विकसित होते हैं। पशु और मनुष्य का वह आहार बनते हैं। गंदगी के रूप में विजातीय तत्त्व अंततः मिट्टी में मिलकर उसे उर्वरा बनाते हैं। पौधे के सूखे बीज, फूल-पत्तियाँ भी झड़कर मिट्टी में गिरते रहते हैं। एक निश्चित समयावधि के उपरांत प्राणी और पौधे दोनों ही जराजीर्ण होकर मिट्टी में मिल जाते हैं। मिट्टी में नन्हें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीव-जंतु और बैक्टीरिया उन अवशेष पदार्थों को खाते हैं तथा अंततः पौधों के लिए अपने मल-मूत्र एवं मृत शरीर द्वारा खुराक तैयार करते हैं। मांसाहारी जीवों का भी एक स्वसंचालित चक्र चलता रहता है। जिन जीवों का बाहुल्य होता है, वे दूसरों का आहार बनते हैं। उनकी अभिवृद्धि का नियंत्रण इकोलॉजिकल चक्र के घटक जीव स्वयं करते हैं। चिड़ियाएँ कीड़े-मकोड़े खाती रहती हैं, तथा उनकी बेशुमार वृद्धि पर नियंत्रण रखती हैं। मेंढक, मच्छर जैसे नन्हें कीड़ों को खाता है और अंततः स्वयं भी साँप का ग्रास बन जाता है। चूहों की वृद्धि बाज रोकता है। मोर का आहार साँप है। शेर, हिरन, सूअर, खरगोश आदि जंगली जीवों का भक्षण करता है। यह एक मांसाहारी जीवों का चक्र है, जिसमें एक मारता और अंत में स्वयं भी मारा जाता है। मनुष्य इस जैविक चक्र के बाहर आता है। उसका जीव-समुदाय के स्वसंचालित चक्र में कोई हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए।

पर मनुष्य द्वारा इस संतुलित चक्र को निरंतर भंग किए जाने के कारण कितने ही प्रकार के संकट प्रस्तुत होने की संभावना बन गई है। पक्षियों का यदि शिकार इसी प्रकार होता रहा, तो कुछ ही वर्षों में वनस्पतियों के लिए हानिकारक कीड़े-मकोड़ों की संख्या में तीव्र गति से वृद्धि होगी। संभव है उनसे वृक्ष-वनस्पतियों का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाए। कितने ही पक्षी ऐसे भी होते हैं, जो बीजों के वितरण में सहायक होते हैं। सर्पों को नष्ट कर देने से चूहों की मात्रा बढ़ जाएगी, जो फसलों के लिए अत्यंत ही हानिकारक है। हिंसक जीवों में शेर, बाघ आदि को भी मारना इसलिए उचित नहीं है कि वे भी संतुलन क्रम में अपने स्तर का सहयोग देते हैं। स्वास्थ्य एवं स्वच्छता की दृष्टि से भी कितने ही जीवों की प्रकृति के परिसर में महत्त्वपूर्ण भूमिका हैं। गिद्ध, चील, गीदड़ आदि मृतजीवों को खाकर गंदगी एवं महामारी फैलने से बचाते हैं। श्रमजीवी प्राणियों में तो गाय, बैल, भैंस, घोड़े, खच्चर आदि का असाधारण महत्त्व है। वे जितना खाते हैं, उसका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हजार गुना अधिक मनुष्य जाति को लाभ पहुँचाते हैं। जीवित हालत में उन्हें मांस एवं चमड़े के लिए बूचड़खाने में भेज देना मानवीय क्रूरता का ही परिचायक है।

थोड़े से भौतिक लाभों के लिए जीव-जंतुओं का हनन मानवीय गरिमा के भी विरुद्ध है। उपयोगितावाद की बौद्धिक कसौटी पर उपर्युक्त प्रतिपादन गले न उतरे तो भी एक पक्ष ऐसा है, जो हर मनुष्य की अंतःसंवेदनाओं को झकझोरता है। इस तथ्य से कोई विशेषज्ञ इनकार नहीं कर सकता कि भाव संवेदनाओं की दृष्टि से मनुष्य जाति शुष्क एवं अतरंग की दृष्टि से निष्ठुर होती जा रही है। सूक्ष्मदर्शियों का मत है कि प्राणियों के हनन से परोक्ष वातावरण विक्षुब्ध होता जा रहा है, जिसकी प्रतिक्रिया मनुष्य की घटती अंतःभाव संवेदनाओं के रूप में दिखाई पड़ रही है। उजड़ती हुई मूक प्रकृति बुद्धिमान् कहलाने वाले मनुष्य से बिलखती हुई मांग कर रही है कि उसे अब और न उजाड़ा जाए।

☆ क्यों हो रही है प्रकृति असंतुलित

असंतुलन प्रत्येक क्षेत्र में घातक सिद्ध होता है। प्रकृति की सुव्यवस्था भी संतुलन पर ही टिकी हुई है। पर्यावरण विशेषज्ञों का कहना है कि प्रकृति के प्रत्येक घटक जीव-जंतु, वनस्पति, वायु एवं जल का एक-दूसरे से अन्योन्याश्रित संबंध है। एक की विकृति जुड़े हुए अन्य घटकों को प्रभावित करती है। इनमें आपसी संतुलन से ही प्रकृति का गतिचक्र ठीक प्रकार चलता तथा उसके अनुदानों का लाभ समुचित मात्रा में मिल पाता है।

इन दिनों पर्यावरण में भारी असंतुलन पैदा हुआ है। फलस्वरूप प्रकृति-प्रकोपों की बहुलता देखी जा रही है। इसे समझा तो दैवीय अभिशाप के रूप में जा रहा है, पर है वस्तुतः मानव द्वारा रचित। क्रिया की प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक है। प्राकृतिक विपदाएँ मनुष्य की स्वयं के क्रियाकृत्य की परिणति हैं। उत्पादन के नाम पर औद्योगीकरण के प्रति जो उत्साह चल रहा है, उससे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तात्कालिक लाभ तो दिखाई पड़ रहा है, पर जब दूरगामी परिणामों पर ध्यान देते हैं, तो पता चलता है कि अति उत्साह का क्रम अंततः हानिकारक ही सिद्ध हुआ।

पर्यावरण के संतुलन में वृक्षों का भारी योगदान है। पौधे प्राणि-जगत् के जीवन का स्रोत हैं। एक ओर जहाँ प्राणियों के लिए आहार जुटाते, जीवन प्रदान करते हैं। वहीं दूसरी ओर वायु-मंडल की विषाक्त गैस कार्बन डाइ-ऑक्साइड को वायुमंडल से खींच लेते हैं। प्राणी समुदाय के लिए वे सच्चे हित चिंतक हैं। इसमें पाया जाने वाला क्लोरोफिल जीवन का स्रोत है। मांसाहारी अथवा शाकाहारी सभी मूलतः आहार हरे पौधों व वनस्पतियों से प्राप्त करते हैं। इन दिनों औद्योगिक विकास एवं अन्य कार्यों के लिए तेजी से वन संपदा को नष्ट किया जा रहा है। विशेषज्ञों का कहना है कि पर्यावरण संतुलन को बनाए रखने के लिए किसी देश का एक-तिहाई भाग पेड़-पौधों से भरापूरा होना चाहिए। प्राप्त आँकड़ों के अनुसार भारत में २५.७ प्रतिशत भाग वनों से आच्छादित है, जो पर्यावरण संतुलन सीमा रेखा से दस प्रतिशत कम है। अन्य देशों की स्थिति और भी बुरी है। प्राकृतिक वन संपदा में कमी होने से जो विभीषिकाएँ उत्पन्न हुई हैं, उनकी रोकथाम के लिए पिछले कुछ दशकों से भारत के प्रायः सभी प्रांतों, शहरों में आए दिन वैज्ञानिकों, बुद्धिजीवियों की गोष्ठियों के आयोजन हो रहे हैं। इन गोष्ठियों में पारस्परिक चर्चा और विचार विनिमय द्वारा विशेषज्ञों ने प्राकृतिक संपदा के संरक्षण के लिए एक विश्व नीति तैयार की है। ऐसे ही एक सम्मेलन में उपस्थित प्रकृति तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण संबंधी अंतर्राष्ट्रीय संघ के महानिर्देशक डॉ० डेविड मनरो ने कहा कि "आने वाली हजारों पीढ़ियों के कल्याण के लिए प्राकृतिक संपदा के संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए।"

एक ओर वन संपदा में भारी कमी आई है। दूसरी ओर औद्योगीकरण बढ़ता जा रहा है। इससे उत्पादन तो बढ़ रहा है,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किंतु पर्यावरण संतुलन के आवश्यक घटक वायु एवं जल में विषाक्तता भरती जा रही है। परिवर्धन के प्रति उत्साह एवं परिशोधन की उपेक्षा से प्रदूषण एक विभीषिका के रूप में प्रस्तुत हुआ है। एक आँकड़े के अनुसार अमेरिका में मोटरें हर दिन ढाई लाख टन विषैला धुआँ उगलती हैं। फ्रांस के पावर स्टेशनों से प्रति वर्ष २००,००० टन सल्फर डाई-ऑक्साइड वायु में मिल रही है। न्यूयार्क में हर साल ५½ लाख टन सल्फर डाई-ऑक्साइड हवा को विषाक्त बना रही है। एक व्यक्ति को प्रतिदिन १४,००० लीटर शुद्ध हवा चाहिए, जो इन स्थानों पर अप्राप्त है।

प्राप्त आँकड़े के अनुसार संसार में लगभग ६० करोड़ मोटर वाहन सड़कों पर हैं। १००० किलो मीटर चलने के लिए एक कार को जितनी ऑक्सीजन चाहिए उतनी एक मनुष्य को एक वर्ष तक साँस लेने के लिए पर्याप्त है। प्रकृति का स्रोत सीमित है। मोटर वाहनों द्वारा ऑक्सीजन के इतने बड़े भाग के खपत से वायु में इसकी मात्रा की कमी हो जाना स्वाभाविक है। प्राणियों एवं वनस्पतियों के लिए उपलब्ध प्रकृतिगत ऑक्सीजन का एक बड़ा भाग यों ही बेकार चला जा रहा है। उलटे इन वाहनों से विषाक्तता और बढ़ रही है। जिसके परिशोधन के लिए कोई प्रयास नहीं चल रहा है। करोड़ों टन विष गैस के रूप में प्रतिवर्ष वायुमंडल में मिल रही है। जल की यही स्थिति है। उद्योगों, कल-कारखानों से निकलने वाला कचरा नदी के जल स्रोतों को इस योग्य नहीं छोड़ रहे हैं कि उनका उपयोग कर स्वस्थ रहा जा सके।

तीसरा असंतुलन जनसंख्या का है। अब तक विश्व की जनसंख्या ६०० करोड़ के निकट जा पहुँची है। प्रत्येक १४ वर्षों में १०० करोड़ की वृद्धि हो रही है। प्रकृति साधन सीमित हैं और उपभोगकर्त्ताओं की संख्या दिन-प्रतिदिन तेजी से बढ़ती जा रही है। अधिक उत्पादन के लिए अदूरदर्शी रीति-नीति अपनाई जा रही है। अन्न प्राप्त करने के लिए कृत्रिम रासायनिक खादों से लेकर अन्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भौतिक साधन बढ़ाने के लिए बड़े उद्योगों के निर्माण से तात्कालिक लक्ष्य की आपूर्ति तो संभव है, पर अंततः इसका प्रभाव प्रकृति-संतुलन पर पड़ रहा है। एक ओर वन संपदा को काटा जा रहा है। दूसरी ओर उद्योगों से निकलने वाली विषाक्तता से स्वच्छ वायु एवं जल अप्राप्त सा हो गया है।

छेड़छाड़ का यह उपक्रम प्रकृति के स्थूल पक्षों तक ही सीमित नहीं है, वरन् सूक्ष्म परतों में भी घुसकर किया जा रहा है। परमाण्विक परीक्षण से निकलने वाला विकिरण मानवजाति के लिए संकट सिद्ध हुआ है। दूसरा संकट नवीन प्रयोगों से उभर रहा है। जीवन का स्रोत है कोशिकाओं के केंद्रक में मौजूद डी० एन० ए०। डी० एन० ए० के हेरफेर से ही प्राणियों की एवं वनस्पतियों की आकृति एवं प्रकृति नियंत्रित होती है। इनके गुण-धर्मों में भिन्नता का कारण डी० एन० ए० है। जीवविज्ञान की नई शोधों द्वारा यह संभव हो गया है कि दो सूक्ष्म जीवों के डी० एन० ए० को मिलाकर एक तीसरे किस्म का जीव तैयार करना। नवीन प्रयोगों के प्रति उत्साह होना स्वाभाविक है, पर आशंका यह है कि, कहीं प्रयोग से कोई ऐसा जीव न पैदा हो जाएं, जो भयानक रोगाणु हो। इस संभावना से पूर्णतः इनकार नहीं किया जा सकता। इन दिनों जेनेटिक इंजीनियरिंग द्वारा महामानवों, अतिमानवों की नई संतति तैयार करने की कल्पना भी चल रही है। इस प्रकार के प्रयोग प्रकृति व्यवस्था के प्रतिकूल हैं। जीव प्रकृति पर इसका बुरा प्रभाव पड़ेगा।

इन सबका सम्मिलित प्रभाव पर्यावरण पर पड़ा है। प्रकृति का इकोलॉजिकल 'बैलेन्स' डगमगा गया है। फलतः इसकी प्रतिक्रिया प्रकृति विक्षोभों, प्रकोपों के रूप में परिलक्षित हो रही है। स्वीडिश सिस्मोलॉजिस्ट प्रो० मारकस भट्ट के अनुसार पर्यावरण के असंतुलन से बाढ़ एवं भूकंप की घटनाओं में वृद्धि हुई है। प्राप्त आँकड़ों के अनुसार भू-स्खलन से पिछली दशाब्दी में ४ लाख व्यक्तियों की मृत्यु हुई। सन् १९७६ में चाइना के तागसेन में हुए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भू-स्खलन से दो लाख ४२ हजार व्यक्तियों की जानें गईं। ३१ मई १९७० को पेरू में हुए भू-स्खलन से ७० हजार व्यक्ति मृत्यु की गोद में समा गए। टर्की में सन् १९७० में ११ हजार व्यक्ति मरे। १२ अगस्त १९७९ को मोरवी में आई बाढ़ से २५ हजार व्यक्ति मात्र ७५ मिनट में काल के गर्भ में समा गए। यह प्रकृति विक्षोभ पर्यावरण असंतुलन का ही अभिशाप है।

संतुलन बनाए रखने के लिए मनुष्य को प्रकृति से छेड़छाड़ बंद करनी होगी। वातावरण में भरी विषाक्तता के परिशोधन के लिए हर संभव प्रयास करना होगा। वन संपदा के कटाव को रोकना होगा। अन्यथा क्रुद्ध प्रकृति का आक्रोश अगले दिनों और भी भयंकर रूप से बरसेगा। समय रहते-भूतकाल की भूल से प्रेरणा लेकर मनुष्यजाति को अपनी गतिविधियों में हेरफेर करना अभीष्ट हो गया है।

☆ पर्यावरण से छेड़छाड़—खंड प्रलय को निमंत्रण !

प्रकृति मनुष्य के हाथ की घड़ी नहीं है, जिसे चाहे जिस तरह घुमाते रहा जाए और फिर चाहे जिस कोने में पटक दिया जाए। वस्तुतः इस विश्व ब्रह्मांड की सभी गतिविधियाँ एक सुनिश्चित अनुशासन के अंतर्गत क्रमबद्ध रूप से चल रही हैं। ग्रह-उपग्रह एक-दूसरे के बंधन में हैं और उसकी गतिविधियों से प्रभावित होते हैं। अनभ्यस्त उथल-पुथल चलती है, तो उससे समूचा वातावरण प्रभावित होता है। पृथ्वी को अंतरिक्षीय घातक किरणों से बचाने के लिए कई परत थोड़ी ऊँचाई पर स्थित हैं। उन परतों में मनुष्य जब छेद करने पर उतारू होता है, तो उसका स्वाभाविक परिणाम यह होता है कि सुरक्षा ढाल टूटने या झीनी पड़ने पर ऐसे परिणाम खड़े कर दे, जिसके कारण लेने के देने पड़ने लगें।

पृथ्वी पर कई बार हिमयुग आए हैं। सर्वत्र बरफ ही बरफ छाई है। इतना अधिक शीत न सह पाने वाले प्राणी उसी में अपना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दम तोड़ गए, फिर दस-पंद्रह फुट तक हिम सतह जम जाने पर खाद्य संकट भी आता है और भूखों मरने की दूसरी विभीषिका खड़ी हो जाती है। ऊँचे स्थान पर जो प्राणी किसी प्रकार बचे रहते हैं, वे हजारों वर्षों का हिमयुग समाप्त होने पर नए सिरे से वंश वृद्धि करते और नई दुनिया बसाते हैं।

हिमयुग वातावरण के विपर्यय से आते हैं। उनका आगमन भी भयावह है और बिदाई भी रोमांचकारी। जब तापमान बढ़ता है, बरफ पिघलती है, तो समुद्र की सतह ऊँची उठ जाती है। महाद्वीप टूट-फूटकर कहीं से कहीं जा पहुँचते हैं। समुद्र में से कुछ भूखंड ऊपर निकलते हैं और कुछ ऊपर वाले उसके गर्भ में समा जाते हैं। हिमयुग को एक प्रकार से खंड-प्रलय ही माना जाता है।

अपने क्रम से जब हिमयुग आए, तब उसे विधि विधान कह सकते हैं, पर मनुष्य वातावरण को छेड़कर उसे बहुत जल्दी भी बुला सकता है। ध्रुवों का संतुलन बिगाड़ सकता है। उस पर जमी बर्फ पिघल पड़ने और समुद्री तूफान आने का संकट बुला सकता है। पर्यावरण की छेड़छाड़ करने से इस प्रकार के अनेक संकट आ सकते हैं। मनुष्य आज उद्धत बालक की तरह कुछ ऐसी ही छेड़छाड़ कर प्रलय को आमंत्रित कर रहा है।

इसी संदर्भ में पिछले दिनों अमेरिका के न्यूयार्क स्थित "लेमंड डी० जियोलॉजिकल ऑब्जरवेटरी पेलीसीड्स" में एक सम्मेलन आयोजित हुआ जिससे संसार भर के मूर्द्धन्य भू-वैज्ञानिकों, पर्यावरणविदों, मौसम विज्ञानियों आदि ने भाग लिया। इस सम्मेलन में बहुचर्चित विषय, "मिलटिन मिलेन कोविच" की हिमयुग श्रृंखला का विस्तृत वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया, जिसमें वैज्ञानिक मिलेन कोविच ने कहा है कि पृथ्वी पर पड़ने वाले सूर्य के कुल प्रकाश में प्रतिवर्ष ०.१ प्रतिशत की कमी होती जाती है। इसी कारण प्रति एक लाख वर्ष बाद इस धरती पर हिमयुग आ जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस तथ्य की पुष्टि करते हुए अनुसंधानकर्ताओं ने कहा है कि फ्रांस में नार्मन डी समुद्र तट पर नौ करोड़ वर्ष पूर्व की ऐसी चट्टानें मिली हैं, जिनमें प्रत्येक २० हजार वर्ष की एक परत स्पष्ट दीखती है। इसी प्रकार पैन्सिलवानिया राज्य के न्यूयार्क बेसिन में २० करोड़ वर्ष पुराने पहाड़ों के पर्यवेक्षण से भी यह तथ्य उजागर हुआ है कि, एक लाख एक हजार वर्षों में हिमयुग का आवर्तन होता है। इसमें ९६ हजार से २३ हजार वर्षों में अलग-अलग प्रकार की परतें पाई गई हैं, जो इस बात की द्योतक हैं कि किन्हीं कारणोंवश प्रकृति-संतुलन गड़बड़ाया होगा और पृथ्वी सामान्य से तीन गुना बरफ से ढक गई होगी। कुछ इसी तरह के लक्षण इन दिनों भी प्रकट हो रहे हैं।

इस संबंध में मिनिसोटा विश्वविद्यालय के अनुसंधानकर्ता वैज्ञानिकों का कहना है कि धरती के गर्भ में छिपे प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन एवं पर्यावरण के साथ की गई खिलवाड़ के कारण पृथ्वी के चुंबकीय ध्रुवों में परिवर्तन होने लगा है। उत्तरी ध्रुव में दक्षिण ध्रुव की प्रकृति विकसित हो रही है तथा दक्षिण में उत्तरी ध्रुव की। ध्रुव विपर्यय की इस घटना को अप्रत्याशित मानकर इसकी उपेक्षा करना मनुष्य जाति को बहुत महँगा पड़ सकता है। ध्रुव विपर्यय के कारण मनुष्य सहित सभी जीवधारियों को स्थान परिवर्तन के लिए विवश होना पड़ेगा, अन्यथा बदली हुई परिस्थिति के अनुरूप स्वयं में अनुकूलन न ला पाने के कारण मृत्युवरण ही उनके लिए एक मात्र विकल्प होगा। इस प्रक्रिया से बैक्टीरिया जैसे छोटे प्राणियों से लेकर पशु-पक्षी एवं मनुष्य सभी को गुजरना पड़ेगा। ध्रुवों के बदल जाने पर अंतरिक्ष से आने वाली ब्रह्मांडीय किरणें उनकी ओर विक्षेपित होंगी, फलस्वरूप जलवायु भी प्रभावित-परिवर्तित हो जाएगा और प्रागैतिहासिक काल में जिस तरह बड़ी संख्या में जीवधारियों का विलुप्तीकरण हुआ था, मौसम परिवर्तन के कारण उसकी पुनरावृत्ति हो सकती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वातावरण में क्लोरो फ्लुओरोकार्बन एवं कार्बन डाइ-ऑक्साइड जैसी जहरीली गैसों की बढ़ती मात्रा को देखते हुए वैज्ञानिकों ने यह आशंका व्यक्त की है कि आगामी दस वर्षों में जलवायु प्रलयंकारी स्वरूप धारण कर सकता है। सामाजिक अपराधों, मानसिक विकृतियों के अतिरिक्त हृदय रोग, त्वचा के कैंसर एवं मधुमेह जैसी बीमारियों की अप्रत्याशित वृद्धि के मूल में उनने पर्यावरण में भरी विषाक्तता को ही प्रमुख माना है। इस संबंध में हवाई उपमहाद्वीप स्थित मोनालोआ वेधशाला के वैज्ञानिकों ने गंभीरतापूर्वक अध्ययन किया है। आँकड़े प्रस्तुत करते हुए उनने बताया है कि, इन दिनों वातावरण में प्रतिवर्ष एक पी० पी० एम० की दर से कार्बन डाइ-ऑक्साइड भरती जा रही है। इस मात्रा में ३० प्रतिशत की अभिवृद्धि पृथ्वी के तापक्रम को एक से चार डिग्री सेंटीग्रेट तक बढ़ा देती है। इस तरह तापमान में यह बढ़ोत्तरी प्रतिवर्ष "ग्रीन हाउस प्रभाव" को जन्म देती है। औद्योगिक चिमनियों एवं वाहनों से निकलने वाला धुआँ इसमें घृताहुति का काम करता है।

तापमान की इस अभिवृद्धि का सर्वाधिक प्रभाव ध्रुवीय बरफ पर पड़ेगा। 'आइस कैप' के पिघलने से समुद्र की सतह ऊँची उठेगी और तटवर्ती प्रदेशों को जलमग्न कर देगी। मुंबई, कलकत्ता, न्यूयार्क, टोकियो, साउथहैंपटन (ब्रिटेन), सैन फ्रांसिस्को तथा केलिफोर्निया जैसे महानगर समुद्र के गर्भ में विलीन हो जाएँगे। ध्रुवीय असंतुलन भू-चुंबकत्व पर भी अपना प्रभाव डालेगा। वायुमंडल में जमी ज्वालामुखीय धूल अभी भी इतनी ज्यादा है कि सौर ऊष्मा को पृथ्वी तक पहुँचने नहीं देती, जो कि जीवधारियों की जीवनी शक्ति के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है।

अनुसंधानकर्ता विशेषज्ञों के अनुसार पिछले चालीस वर्षों से सूरज क्रमशः सिकुड़ता जा रहा है। इसके फैलने का क्रम २००० से आरंभ हो गया है। सिकुड़ने-फैलने का यह सूर्यचक्र ७६ वर्ष का होता है। एक ओर जहाँ सूर्य के सिकुड़ने से पृथ्वी ठंडी होती जा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रही है, वहीं दूसरी तरफ मानवीय कृत्यों से वातावरण गरम होता जा रहा है। यह विरोधाभास तब प्रलय के रूप में फट सकता है, जब सूर्य के अधिक व्यापक रूप में फैलने का क्रम आरंभ होगा। वायुमंडल का बढ़ता तापमान तथा पृथ्वी का गरम होना—दोनों मिलकर भयावह विभीषिकाओं को जन्म दे सकते हैं।

वैज्ञानिक कहते हैं कि वातावरण में जो व्यतिक्रम आ रहा है, उससे योरोप, अमेरिका और रूस अब की अपेक्षा अधिक गरम व सूखे हो जाएँगे। वहाँ बरफ गिरनी बंद हो जाएगी लेकिन उत्तर-पूर्व अफ्रीका, भारत, मध्यपूर्व एशिया, मेक्सिको तथा पश्चिम आस्ट्रेलिया अधिक आर्द्र व गीले हो जाएँगे। इसके साथ ही साथ समूचे विश्व में समुद्र तल ५-२० मीटर ऊँचा उठ जाएगा। ग्लेशियर पिघलने से नदियों में बाढ़ आ जाएगी। मौसम में आमूलचूल परिवर्तन हो जाने से उपजाऊ भूमि बंजर हो जाएगी एवं जहाँ अभी बरफ है, वहाँ रेगिस्तान नजर आएँगे। संसार की कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था चरमरा जाएगी और यह संब परिवर्तन मात्र २ डिग्री सेंटीग्रेड तापमान बढ़ जाने पर ही दृष्टिगोचर होने लगेंगे।

मौसम बदलने का मोटा अर्थ सरदी, गरमी, वर्षा का साधारण गतिचक्र समझा जाता है, पर वैज्ञानिक भाषा में पृथ्वी पर छाए वातावरण में उथल-पुथल होने के अर्थ में इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। मनुष्य की गतिविधियाँ इन दिनों ऐसी चल रही हैं कि उसे तात्कालिक लाभ किसी भी मूल्य पर मिले, इस उद्देश्य के लिए की गई वातावरण के साथ खिलवाड़ उसी के लिए भयावह संकट की भूमिका बनेगी। महाकाल की प्रत्यावर्तन प्रक्रिया उसे दंडित करे, इससे पूर्व ही वह अपनी चाल बदल ले, इसी में उसका, सारी मानवजाति का कल्याण है।

❐ ❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वैज्ञानिक प्रगति बनाम प्राकृतिक असंतुलन

विगत एक-दो शताब्दियों में भौतिक विज्ञान की क्रमिक उन्नति हुई है। विशेषतः पिछले ५० वर्षों में प्रकृति के रहस्यों को खोज निकालने में आश्चर्यजनक सफलता हस्तगत हुई है। उस उत्साह में जो कदम वैज्ञानिकों, राजनेताओं और अर्थशास्त्रियों के तालमेल से उठे, उन्हें प्रारंभिक दिनों में अत्यंत उत्साहवर्द्धक माना गया था और समझा गया था कि इस आधार पर प्रगति के नए द्वार खुलने जा रहे हैं। किंतु दूरदर्शी विवेकशीलता का समन्वय न होने से उस प्रगति की ऐसी खामियाँ सामने आ रही हैं, जिनसे प्रतीत होता है कि उपलब्धियों का प्रयोग करने की दिशा में कहीं कोई भारी चूक हो गई है, अन्यथा चंद दिनों में ही इतने संकट क्यों आ खड़े होते, जिनका समाधान समझ से बाहर होता चला जा रहा है। विज्ञान का प्रथम चरण औद्योगिकीकरण की दिशा में उठा। कम लागत में, अधिक मात्रा में, अधिक साफ-सुथरी चीजें बनाते समय सोचा यह गया था कि सर्वसाधारण को सस्ते मोल में सुविधाएँ उपलब्ध होंगी और निर्माताओं को अधिक लाभ कमाने का अवसर मिलेगा। इस मान्यता पर उन दिनों आम सहमति थी। उत्साह भी पूरा था। धन का विनियोग भी खुले हाथों हुआ, उत्पादन भी वैसा ही साफ-सुथरा और सुंदर सामने आया, जैसा कि सोचा गया था, किंतु उतावली में उठाए गए कदम नई समस्याएँ अविलंब उत्पन्न करने लगे। उलझनें ऐसी हैं, जो सुलझने में नहीं आ रहीं और लगता है आरंभ करते समय भविष्य में उत्पन्न होने वाली समस्याओं पर उचित विचार नहीं किया गया। बड़ी मशीनों में थोड़े आदमी बहुत उत्पादन करते हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि जिन उत्पादनों में बहुसंख्यक श्रमिकों की आवश्यकता होती थी, वह थोड़े ही लोगों द्वारा विनिर्मित होने लगा। फलतः बेकारी बेतहाशा बढ़ी और खाली बैठे लोगों ने उचित-अनुचित उपद्रव खड़े करने आरंभ किए। आंदोलनों ने,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपराधों ने गति पकड़ी और सार्वजनिक शांति में विक्षेप पड़ना आरंभ हुआ।

बड़ी मशीनों ने अपने-देशों की खपत को ध्यान में न रखते हुए अत्यधिक माल बनाया। इसे खपाने के लिए मंडियों की आवश्यकता पड़ी। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए नए किस्म का आर्थिक उपनिवेशवाद खड़ा हुआ। राजनैतिक उपनिवेशवाद तो समर्थों की आपसी प्रतिद्वंद्विता के कारण हलका पड़ा, पर उसके स्थान पर नया आर्थिक उपनिवेशवाद खड़ा हुआ। इसके लिए शीत युद्धों का आश्रय लिया गया और कृत्रिम अभाव का सृजन किया गया। फलतः देशों की स्वाभाविक सुख-शांति में भारी व्यवधान खड़ा हो गया।

बड़े कारखानों से उत्पन्न होने वाला कचरा एक समस्या बना। कुछ को नदियों में बहाया गया, कुछ हवा में उड़ा, कुछ ने जमीन घेरी। चूँकि यह कचरा विषैला होता है इसलिए उसमें जलाशयों की विषाक्तता बढ़ी। साँस लेने की हवा में जहर घुला और ईंधन के लिए, फर्नीचर के लिए और आवश्यकताओं के लिए सर्वप्रथम पेड़ों पर हाथ साफ हुआ।

यह विषाक्तता कितनी अधिक हानि पहुँचा रही है, इसका अनुमान बढ़ती हुई बीमारियों की व्यथा और उनके इलाज पर होने वाले बढ़ते खर्च से लगाया जा सकता है।

बड़ी मशीनों ने अधिक मात्रा में ईंधन की माँग की। इसके लिए खनिज तेल और कोयले का सहारा लिया गया। यह भंडार जमीन में एक सीमित मात्रा में ही है। गणितज्ञों ने बताया है कि, जिस अनुपात में यह खर्च हो रहा है, वही गति रही तो पचास वर्ष के भीतर तेल और कोयले का भंडार चुक जाएगा। बिजली उत्पादन के लिए भी ईंधन चाहिए। उसके बिना बिजली भी न बन सकेगी। अणु भट्ठियों के संबंध में भी यही संकट है। यूरेनियम, प्लूटोनियम जैसे पदार्थ भी थोड़ी ही मात्रा में है। इसलिए अणु भट्ठियाँ भी अधिक दिन काम न दे सकेंगी। इनसे निकलने वाला

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कचरा और भी भयावह है। उसे कहाँ पटका जाए ? यह प्रश्न अभी अनिर्णीत ही पड़ा है।

युद्ध के कारणों में भी वैज्ञानिक उत्पादनों को खपाने के लिए क्षेत्रों की आवश्यकता ही प्रमुख कारण है। फिर जो देश युद्ध सामग्री बनाते हैं, उसकी बिक्री तभी हो सकती है, जब युद्ध हों। अन्यथा वे कारखाने बंद होंगे, पूँजी जाम होगी। यही कारण हैं कि, युद्ध भले ही अणुबमों से हों या रासायनिक आयुधों से, पर युद्ध समय की आवश्यकता बन गए हैं।

☆ विज्ञान ने सुविधा ही नहीं, संकट भी दिए !

संसार की अधिकतर समस्याओं का एकमात्र कारण विज्ञान का वह चरण है, जिसने बड़ी मशीनें लगाने का निश्चय किया। अब तो यह साँप-छछूँदर जैसी गति बन गई है, जो न निगलते बनती है, न उगलते।

विज्ञान ने राजनेताओं को भड़काया है कि वे थोड़ा-सा प्रयास करके चक्रवर्ती बन सकते हैं, युद्ध की तैयारी में जनता को अधिकाधिक टैक्स देने पड़ रहे हैं, फलतः महँगाई बढ़ रही है और मध्यवर्ती व्यक्ति का जीवन दुर्लभ हो रहा है। फिर हथियारों के जो पहाड़ बीसियों देशों ने खड़े कर लिए हैं उनका क्या हो ? वे खाने-पहनने के काम तो आते नहीं, इस उत्पादन का उपयोग जनसंहार में ही होता है और उसका कष्ट मरने वालों से भी अधिक उन्हें भुगतना है, जो अनाथ-अपंग बनकर किसी प्रकार जीवित बच रहेंगे।

यदि विज्ञान ने सही कदम उठाया होता, बड़ी मशीनों का निर्माण न किया होता, तो निश्चय ही उपर्युक्त समस्याओं में से एक भी मुसीबत खड़ी न होती। नदियों में गिराया हुआ कचरा घुमा-फिराकर मनुष्य के ही पीने के काम आता है। जहरीली गैस जहाँ साँस द्वारा शरीर में जाती है, वहाँ अब तेजाबी वर्षा का क्रम चल पड़ा है। उसके सहारे जो खाद्य उपजेगा, वह भी जहरीला

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होगा। तीव्र विषों से कुछ ही समय में मृत्यु हो जाती है, पर जहरीले अन्न-जल में वायु के कारण बढ़ने वाली रुग्णता से मनुष्य को चित्र-विचित्र बीमारियों का शिकार बनना, तड़पते हुए अकाल मृत्यु मरना पड़ता है। बढ़ते हुए विज्ञान के चरण भले ही अमीरों की अमीरी बढ़ा सकें, पर सर्वसाधारण का उससे सब प्रकार अहित ही होगा।

विज्ञान ने एक और बौद्धिक एवं भावनात्मक संकट खड़ा किया है। चेतना को जड़ की उत्पत्ति बताया है। फलतः नैतिक आचरणों का कोई मूल्य नहीं रह गया। नास्तिकता **'ऋणं कृत्वा घृतं पिवेत्'** के सिद्धांत का प्रतिपादन करती है। उसने जहाँ मांसाहार का समर्थन किया है, वहाँ सामाजिक-नैतिक वर्जनाओं को व्यर्थ बताकर अपनी सुविधा को प्रधानता देने के लिए उकसाया है। इस दशा में त्याग, बलिदान, उदारता, पुण्य, परमार्थ का कोई महत्त्व नहीं रह जाता। जब मनुष्य चलता-फिरता पेड़-पौधा बताया गया, तो एक-दूसरे को लाभ या हानि पहुँचाने के लिए गणितीय सिद्धांत ही काम करेंगे। जब बूढ़े बैल को, न कमाने वाले बकरे को कसाई के यहाँ भेजा जा सकता है, तो वृद्धों को, बीमारों को, अपंगों को भी मौत के घाट उतार देने में क्या झिझक होनी चाहिए ? जब पशु-पक्षियों में नर-मादा भर का रिश्ता होता है, जब मनुष्य को जड़ पदार्थों की, पेड़-पौधों की, पशु-पक्षियों की श्रेणी में गिन लिया गया, तो फिर माँ, बहन, बेटी आदि के पवित्र रिश्ते भी बेकार हो जाते हैं। इस ओर प्रवृत्तियाँ अब बढ़ ही गई हैं। घर, मुहल्ले, पड़ोस, परिवार में ही व्यभिचार का प्रवाह बढ़ रहा है। विवाह व्यापार हो गया है। छोटे वर्गों में लड़की से पैसा वसूल किया जाता है। न देने या कम देने पर जला देने, निकाल देने आदि की घटनाएँ दिनों-दिन बढ़ती जाती हैं। यह परोक्ष रूप से भौतिकवादी चिंतन का ही प्रतिफल है। बच्चों का अपहरण और माँगी रकम न देने पर उनका कत्ल, यह अब अनहोनी घटना नहीं रही। कुछ समय पूर्व चोर-डाकू भी स्त्री-बच्चों पर हाथ नहीं उठाते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

थे, पर अब स्वर्ग-नरक, पाप-पुण्य, लोक-परलोक, आत्मा-परमात्मा की मान्यताओं को भौतिकवादी दर्शन ने समाप्त कर दिया, तो मनुष्य को और पशुओं को मारने-खाने में अंतर ही क्या रह गया ? नागरिकता और समाज व्यवस्था के नाम पर मनुष्य की पशुता को दबाया नहीं जा सकता। उसके लिए दार्शनिक निष्ठा की आवश्यकता होती है। विज्ञान की बौद्धिक छलाँगों ने जब उसे समाप्त कर दिया, तो मनुष्य को संयमी, सदाचारी बनाने का कोई ठोस आधार रह ही नहीं गया। आदर्शवाद की जब जड़ ही कट गई, तो दिखावटी ढिंढोरा पीटने भर से बात कुछ बनती नहीं है।

आर्थिक क्षेत्र में बेकारी, बीमारी, गरीबी, विषाक्तता और अगले दिनों ईंधन की समाप्ति से तथाकथित प्रगति का बंटाधार—यह विज्ञान के वे अनुदान हैं जिन्हें उसने सर्वसाधारण को उपहार में दिया है। महायुद्ध की विभीषिका को नंगी तलवार की तरह संसार की गरदन पर लटकाने का श्रेय जिन एटमी हथियारों को है, उन्हें विज्ञान की सबसे बड़ी उपलब्धि माना जाता है। शहरों की अंधाधुंध बढ़ोत्तरी और देहातों से भगदड़ का कारण भी यही वैज्ञानिक प्रगति है। इसी ने हजारों को लखपति-करोड़पति बनाया है और लाखों-करोड़ों को एक तरफ रूखा-सूखा खाने के लिए विवश किया है। डॉक्टर बढ़े हैं, पर उनके अनुपात में मरीजों की अत्यधिक वृद्धि हुई है। लोग जिंदा तो हैं, पर मुरदों से गई गुजरी परिस्थितियों में।

नैतिकता के आधार पर जब तक धर्म और अध्यात्म रहे, तब तक बाँध का पानी इस प्रकार नहीं छूटा था, जिसमें खेत-खलिहान सभी डूब जाएँ। बुद्धिवाद नये युग का दर्शन है। दूसरे शब्दों में इसे विज्ञान का दर्शन कह सकते हैं। इसमें सुविधा-संकलन करने के तर्कों की प्रमुखता है। फल यह हुआ है कि हम मछली निगलने वाले बगुले, अपने ही परिवार में कामोपभोग की छूट पाने वाले कुत्ते और अपनी बिरादरी को ही चीरफाड़कर रख देने वाले भेड़ियों की बिरादरी में सम्मिलित हो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गए हैं। हम अर्थप्रधान हैं, विलास और सुविधा के अतिरिक्त हमें और कुछ नहीं चाहिए। इन्हीं आकांक्षाओं की जब जरूरत होती है, समाजनिष्ठा जैसी चादर उढ़ा देते हैं। विज्ञान ने जब मनुष्य को चलता-फिरता पौधा कहा है, तो उसे क्यों न माना जाए ? धर्म जब अफीम की गोली और ईश्वर अंधविश्वास उसी मंच से घोषणापूर्वक कहा गया है, तो उस मान्यता से क्योंकर इनकार किया जाए ?

इन अभिशापों से उद्विग्न मनुष्य की जीने की भी कोई इच्छा नहीं है। इसलिए नशेबाजी का आश्रय लिया गया है। बच्चे, बूढ़े, नर-नारी, **'येन केन प्रकारेण'** उन्हीं का आश्रय ले रहे हैं। तंबाकू, चाय का फैशन पुराना हो गया; अब मझोले लोग शराब और बड़े लोग हेरोइन का सेवन करते हैं। जितनी देर उनमें डूबे रहते हैं उतनी देर गम गलत कर लेते हैं, अन्यथा विज्ञान का अभिशाप उन्हें दसों दिशाओं से नोंच-नोंचकर खाता है।

☆ प्रगति के नाम पर अवगति

कई बार प्रगति के नाम पर अवगति अपनाने की मूर्खता वे लोग भी अपनाते देखे गए हैं, जिन्हें आमतौर से समझदार माना और कहा जाता है। पिछले दिनों केंद्रित उद्योगों के सहारे प्रगति का स्वप्न देखा गया और ऐसे कारखाने बनाए गए, जहाँ थोड़े समय में, थोड़े व्यक्तियों द्वारा अधिक उत्पादन हो सके और अधिक सुविधा एवं अधिक लाभ मिल सके।

यह आकांक्षा थोड़े समय तक, थोड़े लोग, थोड़ी मात्रा में ही पूरी कर सके। उत्साह तभी तक रहा, जब तक कि असंतुलन के दुष्परिणाम सामने नहीं आए।

विशालकाय कारखाने जिस अनुपात से वस्तुएँ विनिर्मित करते हैं, उससे कहीं अधिक उनसे विष बनने का क्रम भी चलता है। चिमनियों से निकलने वाला जहरीला धुआँ वायुमंडल में ऐसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तत्त्वों को बढ़ाता है, जिससे न केवल साँस लेने वालों का स्वास्थ्य बिगड़ता है, वरन् मानसिक स्थिति पर भी बुरा असर पड़ता है।

द्रुतगामी वाहनों के लिए भी ऐसे ही ईंधन का प्रयोग किया जाता है, जो जलने पर कारखानों जैसी गैस उत्पन्न करता है। इसकी मात्रा बढ़ते जाने पर वैसा ही संकट उत्पन्न होता है, जैसा कि विषैले पानी में जलजीवों का निर्वाह संभव नहीं रहता। औद्योगीकरण के कारण बढ़ते प्रदूषण ने न केवल जनजीवन के लिए स्वास्थ्य संकट खड़ा किया है, वरन् भावी पीढ़ियों को अपंग-अविकसित स्तर का भी बनाना आरंभ कर दिया है।

कोढ़ में खाज की तरह अणु परीक्षणों द्वारा बढ़ता विकिरण भी, इस संकट को गहरा करता चला जा रहा है। वन-संपदा कटते जाने के कारण वह मार्ग भी अवरुद्ध होता है, जिसके सहारे इस प्रदूषण के संशोधन की आशा की जाती है। इस संदर्भ में विश्लेषणकर्ताओं ने तथ्यों को उजागर किया और जनसाधारण को सचेत किया है कि अंतरिक्ष में बढ़ती विषाक्तता को रोकने के लिए उत्पादनकर्ताओं को सहमत करना संभव न हो सके, तो उन्हें बाधित भी किया जाए।

हिरोशिमा व नागाशाकी पर आधी सदी पूर्व परमाणु बम का विस्फोट हुआ, परंतु वहाँ का वातावरण अब भी विषाक्त बना हुआ है। जो भी बच्चे वहाँ पैदा होते हैं, वे अधिकांशतः अपंग-अपाहिज तथा विक्षिप्त होते हैं।

अमेरिका के शहरी क्षेत्रों में सामान्य की तुलना में १० से २० करोड़ गुना सघन रेडियो तरंगें विद्यमान पाई गईं।

'एट हाईएस्ट रिस्क' की लेखिका श्रीमती क्रीस्टोफर नारवुड ने कहा है कि आज गर्भपातों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है। कुछ जो बच जाते हैं, वे भी अस्वस्थ व अविकसित ही होते हैं। अधिकांश विकलांग जन्मते हैं। इन सबके लिए उनने वातावरण की विषाक्तता को दोषी ठहराया है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"अमेरिकी ड्रग मेडिकल कॉर्पोरेशन" के भूतपूर्व मेडिकल डाइरेक्टर हेराल्ड गोर्जन ने बताया कि अमेरिका में ३० से ४० प्रतिशत बच्चे भ्रूण के रूप में ही दम तोड़ते हैं। जो पैदा होते हैं, उनमें से एक-तिहाई शारीरिक अथवा मानसिक रोगों से ग्रस्त होते हैं। उन्होंने इसका प्रमुख कारण रेडियो विकिरण से उत्पन्न विषाक्तता को बताया।

जापान के 'मिनीमाता' खाड़ी के निकट रहने वाली महिलाओं के जितने बच्चे पैदा हुए, उनमें से अधिकांश अपंग और अपाहिज थे। इसका कारण एक कंपनी द्वारा खाड़ी में मरक्यूरी के कूड़े-कचरे को डाला जाना पाया गया।

संसार भर में ऐसे रोगों की भरमार हो रही है, जिनका कुछ समय पूर्व तक कोई अस्तित्व नहीं था और नाम तक नहीं सुना गया था। इनके उपचारों पर नये अनुसंधान चलते रहते हैं, पर गुत्थी सुलझने के आसार नजर नहीं आते। इसी प्रकार मानसिक रोगों की एक प्रकार से बाढ़ आती दीखती है। हर दस आदमियों में से एक सनकी या अर्ध-विक्षिप्त की स्थिति में रहने लगा है। अनिद्रा, तनाव, आक्रोश एवं निराशाग्रस्त मनुष्य चाहते हुए भी कुछ कहने योग्य पुरुषार्थ नहीं कर पाते। वे कुछ न कुछ करते तो रहते हैं, पर होता ऐसा है जिससे कुछ बनने की तुलना में बिगाड़ अधिक होता रहे। इस दृष्टि से वे क्षेत्र अधिक घाटे में हैं, जो औद्योगीकरण के क्षेत्र में, अपनी हाँकते रहते हैं। इतनी हानि उत्पन्न करने के मूल्य पर यदि थोड़े लोगों की संपदा बढ़ती हो, तो उसका उपार्जन किसी भी प्रकार दूरदर्शितापूर्ण नहीं कहा जा सकता।

औद्योगीकरण से उत्पन्न प्रदूषण—अणु विस्फोटों के विकिरण के साथ-साथ मशीनी हलचलों, प्रसारणों का कोलाहल भी वातावरण में इतना बढ़ रहा है कि उससे मानवीय श्रवण शक्ति अनुपयुक्त दबाव अनुभव करती है और जनसाधारण के मानसिक संतुलन को बिगाड़ती देखी जाती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मानवीय श्रवण शक्ति की एक मर्यादा है। एक सीमा के ध्वनि दबाव ही कान सुन सकते हैं। अस्पष्ट ध्वनियों को समझने में मस्तिष्क पर दबाव पड़ता है, किंतु सहनशक्ति से अधिक का शोर तो मानसिक संतुलन ही गड़बड़ा देता है और अनेक प्रकार की हानियाँ पहुँचाता है।

तेज विमानों से निकली गैसें वायुमंडल की 'ओजोन' परत को क्षतिग्रस्त करती हैं। इसी कारण हानिकारक पराबैंगनी किरणों का आगमन धरती पर अधिक होने लगा है और समस्त मानव समाज के लिए एक विशेष प्रकार का खतरा उत्पन्न हो गया है। फ्रांस में एक प्रयोग के दौरान यह देखा गया कि कार्यालय में होने वाले शोर में २० डेसीबल की कमी से ६ प्रतिशत काम अधिक होने लगा है।

कोयला और तेल की भू-गर्भीय संपदा अगली एक शताब्दी पूरी होने से पूर्व ही, पूरी तरह चुक जाने का हिसाब जोड़ा जा चुका है। इस स्थिति में भी इस अदूरदर्शी प्रयासों और उद्योगों को रोकना पड़ेगा, जो इन दिनों तथाकथित प्रगति के नाम पर अति उत्साह के साथ अपनाया जा रहा है। अच्छा हो इस तथाकथित प्रगति का लोभ-संवरण समय रहते कर लिया जाए।

☆ मानवकृत विभीषिकाओं के मंडराते बादल

प्रगति का अर्थ मात्र उत्पादन बढ़ाने तथा सुविधा-साधन अधिक परिमाण में जुटा लेने से नहीं है, वरन् उस दूरदर्शिता से है जो दूरगामी परिणामों को ध्यान में रखती तथा तदनुरूप व्यवस्था बनाती है। इस कसौटी पर कस कर ही प्रगति का निर्धारण किया जा सकता है। पिछले दिनों वैज्ञानिक प्रगति और औद्योगीकरण की होड़ में इस तथ्य की भारी उपेक्षा हुई। तात्कालिक लाभ ही देखा और सोचा गया। समूचे वातावरण पर, उस अदूरदर्शी नीति का क्या प्रभाव पड़ेगा, यह न सोचे जाने का परिणाम प्रदूषण की भारी विषाक्तता के रूप में सामने आया, जिसके दुष्प्रभाव से वायु, जल,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एवं खाद्यान्नों की जीवनीशक्ति मारी गई। समूचा पर्यावरण-चक्र ही चरमरा उठा। उस विषाक्तता से समस्त जीव समुदाय के घुट-घुटकर मरने जैसी विभीषिका उत्पन्न होने जा रही है।

कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के एक दल ने चेतावनी दी है कि, "बढ़ते प्रदूषण की रोकथाम की अविलंब व्यवस्था न बनाई गई, तो मानवजाति को अकाल मृत्यु का सामना करना पड़ सकता है।" उनका मत है कि 'हानिरहित समझी जाने वाली कितनी ही गैसों का छिड़काव कीड़ों को मारने आदि के लिए धड़ल्ले से किया जाता है, पर वे उद्योगों से भी कहीं अधिक प्रदूषण पैदा करती हैं। त्वचा कैंसर जैसे रोगों को जन्म देने में उनकी प्रमुख भूमिका होती है। फ्लूरोकार्बन प्रोपेलेंट वायुमंडल की उच्चस्तरीय परतों में पहुँचकर सूर्य से पृथ्वी पर पहुँचने वाले अल्ट्रावायलेट किरणों को रोकने वाली ओजोन रक्षा कवच की परत को विनष्ट कर देता है। यूनाइटेड स्टेट्स नेशनल एकेडमी में शोधरत वैज्ञानिकों का अभिमत है कि "ओजोन की सतह में पाँच प्रतिशत गिरावट आ जाने से अकेले अमेरिका में प्रतिवर्ष ८,००० से अधिक व्यक्ति त्वचा कैंसर से ग्रस्त हो जाते हैं। उपर्युक्त विजातीय तत्त्व का प्रयोग यदि इसी प्रकार बढ़ता गया, तो अगले कुछ वर्षों में यह रोग महामारी का रूप ले सकता है।"

पेट्रोलियम, कोयला के बिना कोई उद्योग नहीं चलता। भारी परिमाण में उनके जलने से इतनी अधिक कार्बन डाईऑक्साइड पैदा होती है कि समस्त वातावरण गरम होता जा रहा है। ऐसा अनुमान है कि वायुमंडलीय रक्षाकवच के स्ट्रैटोस्फेयर परत का तापमान जिस द्रुतगति से बढ़ रहा है, यदि वह रुका नहीं, तो कुछ ही दशकों में इतनी गरमी बढ़ेगी कि हरीतिमा का दर्शन तक कठिन हो जाएगा। तब समस्त भू-मंडल का नक्शा ही बदल जाएगा। कुछ वर्षों पूर्व सहारा के दक्षिणी भाग में भयंकर सूखा पड़ा था, लाखों की जानें गई थीं। अमेरिका के पश्चिमी भाग में भीषण बाढ़ का आना, बंग्लादेश में आए तूफान में हजारों का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

काल-कवलित होना आदि घटनाएँ उस प्रदूषण का ही परिणाम हैं, जो क्रुद्ध प्रकृति की विभीषिका के रूप में दिखाई पड़ी थीं।

सुप्रसिद्ध इकोलॉजिस्ट रैचल-कार्सल ने 'साइलेंट स्प्रिंग' नामक पुस्तक लिखी है, जिसमें लेखक ने पेस्टीसाइड्स, डी० डी० टी० जैसे कीटनाशक दवाइयों के उपयोग से होने वाले प्रदूषण तथा उनसे उत्पन्न होने वाली बीमारियों का उल्लेख कर समस्त विश्व को, इनके खतरे से बचने की चेतावनी दी है। उनका कहना है कि प्रत्येक जीवधारी का अस्तित्व परस्पर एक-दूसरे से संबंधित तथा स्वस्थ वातावरण पर अवलंबित है। इसके प्रमाण में उन्होंने मिशीगन के ईस्ट लासिंग शहर का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए लिखा है कि—"एल्म-चिरावेल के पौधों को वीटल नामक कीड़ों से सुरक्षित रखने के लिए पूरे शहर में पौधों पर डी० डी० टी० का छिड़काव कराया गया। शरदकाल में इन पौधों की सभी पत्तियों को कीड़ों ने खाया। वसंत आते-आते उन कीड़ों को रॉबिन्स नामक एक जानवर ने अपना शिकार बनाया। फलतः एक सप्ताह के भीतर पूरे शहर में रॉबिन्स मरे पाए गए।"

सारे संसार में कीड़ों, मच्छरों को मारने का अभियान छिड़ा हुआ है। जिन कीटनाशक दवाओं, रसायनों का प्रयोग होता है, उनमें अनेक प्रकार के घातक विषैले तत्त्व मौजूद रहते हैं, यही विषैले पदार्थ पानी के साथ घुलकर मिट्टी में अवशोषित हो जाते हैं, जो वृक्ष-वनस्पतियों की खुराक बनते हैं। उनमें विषैली तत्त्व के रूप में एकत्रित रहते हैं। ऐसे पौधों, वनस्पतियों तथा उनके फलों का उपयोग जब मनुष्य करता है, तो वही विषाक्तता उसके भीतर भी पहुँच जाती है, जिससे प्रायः अधिकांश व्यक्ति अनभिज्ञ रहते हैं। वह विष धीरे-धीरे मनुष्य के स्वास्थ्य की, जीवनीशक्ति की जड़ें खोखली करता है तथा विभिन्न प्रकार के रोगों को जन्म देता है।

कार्सल का कहना है कि, "कीटनाशक दवाइयों का अंधाधुंध प्रयोग अदूरदर्शितापूर्ण है। कीड़ों से वृक्ष-वनस्पतियों तथा फसलों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की सुरक्षा के लिए बायलॉजिकल कंट्रोल की प्राकृतिक पद्धति प्रयुक्त होनी चाहिए। फंजाई, बैक्टीरिया जैसे कीड़े, जो पौधों के कीड़ों को बिना किसी प्रकार की क्षति पहुँचाए खा जाते हैं, का प्रयोग किया जाना चाहिए। पानी में घुले रसायनों की विषाक्तता सुदूर क्षेत्रों को भी कितना अधिक प्रभावित करती है, इसका एक प्रमाण पिछले दिनों मिला। एंटार्कटिक ध्रुव प्रदेश औद्योगिक क्षेत्रों से सैकड़ों हजारों मील दूर है, पर एक परीक्षण में वहाँ निवास करने वाले भालुओं तथा पेंगुइन पक्षियों के शरीरों में कीटाणुनाशक रासायनिक तत्त्वों का बाहुल्य पाया गया।

प्रदूषण, सभ्य मनुष्य द्वारा उत्पन्न की गई एक ऐसी विभीषिका है, जो सारे विश्व पर इन दिनों मंडरा रही है। कुछ वर्षों पूर्व जर्मनी के औद्योगिक नगर संहर एरिया से निकलने वाली प्रदूषित गैसों से नार्वे की पर्वत चोटियों पर बरफ की एक विचित्र भूरी परत जम गई, जिससे कितने ही नए प्रकार के रोग पैदा हुए। प्रायः समुद्री मार्ग से गुजरने वाले बड़े-बड़े तेल टैंकरों के फट जाने से पानी पूरी तरह तेल से घिर जाता है। ऐसी स्थिति में जीवधारियों का समुद्री पानी में जीवित रहना कठिन हो जाता है। जलचरों की कितनी ही प्रजातियाँ, उस विषाक्तता से सदा-सर्वदा के लिए नष्ट हो चुकी हैं तथा कितनी ही अपना अस्तित्व गँवाने वाली हैं। बड़े औद्योगिक शहरों के ऑटोमोबाइल्स द्वारा हजारों टन कार्बन मोनो-ऑक्साइड, हाइड्रोकार्बन तथा नाइट्रोजन ऑक्साइड हवा में छोड़े जाते हैं। विशेषज्ञों का मत है कि ये गैसें कुहरे तथा सूर्य के प्रकाश में उपस्थित आल्ट्रावायलेट किरणों से मिलकर एक खतरनाक गहरे रंग के दुर्गंधयुक्त बादलों अथवा स्वास्थ्य के लिए हानिकर कुहासों के रूप में वातावरण में फैलकर अगणित प्रकार के रोगों को जन्म देती हैं।

अत्यधिक कीटनाशक दवाओं के प्रयोग से, उत्पन्न होने वाला खतरा भारत के सिर पर भी मंडरा रहा है। नेशनल डेरी रिसर्च इन्स्टीट्यूट करनाल के वैज्ञानिक एन० रामाकृष्णन तथा एन० के०

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

राय ने दूध उद्योग के विभिन्न प्रमुख शहरों के मार्केट सैंपलों का परीक्षण किया। परीक्षण में उन्होंने मुंबई, कलकत्ता, करनाल के दूध सैंपलों में डी० डी० टी०, बी० एच० सी० की मात्रा बहुत अधिक पाई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने डी० डी० टी० तथा बी० एच० सी० की अधिकतम क्षम्य मात्रा क्रमशः १.२५ पी० पी० एम० तथा ५० पी० पी० एम० निर्धारित की है। दूध के सैंपल परीक्षणों में करनाल क्षेत्र के दूध में ५१ पी० पी० एम०, मुंबई में ७ पी० पी० एम० तथा कलकत्ता में ७ पी० पी० एम०, डी० डी० टी० तथा बी० एच० सी० की मात्रा का मिलना निश्चित है। यह इस बात का संकेत है कि जल, वायु तथा मिट्टी में इन रसायनों की एक बड़ी मात्रा घुलती जा रही है।

दैनिक पत्र 'इत्तफाक' के अनुसार बंग्ला देश में पिछले सात महीनों में गंदे जल तथा विषाक्त खाद्यान्न के सेवन से ५१ हजार व्यक्तियों की मृत्यु हो चुकी है। फरवरी के मध्य में वैरिसाल तथा पटु आवाली क्षेत्रांतर्गत हजारों व्यक्ति कॉलरा की महामारी में मारे गए। खोजबीन करने पर कारण गंदा जल तथा विषाक्त मछली का सेवन पाया गया। महामारी के उन्मूलन के लिए सरकार को सेना बुलानी पड़ी, तब कहीं जाकर स्थिति थोड़ी सुधरी।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सन् १९६० के दशक में सारे संसार से मलेरिया को खदेड़ भगाने का बीड़ा उठाया था, पर इतने वर्षों बाद भी उसे इस कार्य में सफलता नहीं मिल सकी। संसार में बढ़ता हुआ प्रदूषण मच्छरों के पोषण में सहायक सिद्ध हुआ है। मच्छरों को मारने के लिए डी० डी० टी० का अरबों टन छिड़काव कोई खास कारगर तो नहीं किंतु प्रदूषण को और बढ़ाने में सहायक ही सिद्ध हुआ। उससे लड़ने की प्रतिरोधक शक्ति मच्छरों ने स्वयं अर्जित कर ली है। क्लोरोक्वीन जैसी एंटीबायटिक तेज दवाओं से भी मलेरिया कीटाणु नहीं मरते। सामान्य समझे जाने वाले इस रोग से, प्रतिवर्ष लाखों व्यक्ति विश्व भर में मरते हैं। एशिया एवं योरोप की अपेक्षा अफ्रीका में इसका प्रकोप तो और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भी अधिक है। आँकड़ों के अनुसार अफ्रीका में प्रतिवर्ष १० करोड़ केस अंकित किए जाते हैं तथा प्रतिदिन तीन हजार बच्चे मरते हैं।

अनेक प्रकार के बढ़ते प्रदूषणों से प्रकृति का पर्यावरण चक्र लड़खड़ा गया है, जिसकी प्रतिक्रिया अनेक प्रकार के विक्षोभों-विभीषिकाओं के रूप में पिछले दशकों में झेलनी पड़ी है। वर्ष १९७० में वैज्ञानिकों के एक दल ने खोजबीन करने पर पाया कि समस्त विश्व में बरफ की मात्रा में १५ प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जिसका कारण बढ़ता प्रदूषण बताया गया। उसी आधार पर अनुमान लगाया गया कि यदि यह स्थिति बनी रही, तो अगले कुछ दशकों में ही एक हिमयुग की विभीषिका का सामना मनुष्यजाति को करना पड़ सकता है। ग्रीनलैंड में सौ वर्षों का ठंड का रिकॉर्ड टूटा—सर्वाधिक निम्न तापमान अंकित किया गया। पिछले कुछ वर्षों में मास्को, सेंट्रल अमेरिका, दक्षिण एशिया, चीन, आस्ट्रेलिया तथा उप-सहारा के अनेक क्षेत्रों में प्राकृतिक प्रकोप की भीषणता से करोड़ों व्यक्ति अकाल मृत्यु को प्राप्त हुए।

यू० एस० सेंट्रल इंटेलीजेन्स एजेन्सी के विशेषज्ञों का अभिमत है कि, "अगले दिनों प्रकृति की विभीषिकाएँ और भी उग्र होंगी, जिसमें विश्व की एक बड़ी आबादी को अकाल मृत्यु का सामना करना पड़ सकता है।" राष्ट्रसंघ की पर्यावरण समिति ने भी ऐसी ही संभावना व्यक्त करते हुए कहा है कि, "विगत वर्षों में उत्तरी भारत के मौसमी व्यतिरेक यह बताते हैं कि चार माह की ऋतु की मर्यादारेखा अब लगभग समाप्त होती जा रही है, यह समूचे वातावरण पर अपना दुष्प्रभाव छोड़ रही है। इसका एक मात्र कारण है कार्बन डाईऑक्साइड गैस का विशाल परिमाण में वातावरण में केंद्रित होते जाना।" समिति ने यह भी कहा है कि, "इक्कीसवीं सदी के मध्य तक यह मात्रा द्विगुणित हो उठेगी तथा क्लोरोफ्लूरोकार्बन, अमोनिया जैसी गैसें भी विपुल मात्रा में वातावरण में घुलकर मौसम के व्यतिरेकों को और भी बढ़ावा देंगी।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परमाणु परीक्षणों की अंधी दौड़ ने विकिरण की एक और भी सर्वाधिक खतरनाक कड़ी प्रदूषण में जोड़ दी है, जिससे प्रकृति असंतुलनों को और भी बढ़ावा मिला है। राष्ट्रसंघ की समिति ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि, "१९७० के दशक में संसार भर में विज्ञात ४६६ नाभिकीय परीक्षण किए गए, अविज्ञात परीक्षणों की संख्या भी इससे कम नहीं है।" सं० रा० अमेरिका, रूस, चीन, इंग्लैण्ड एवं फ्रांस जैसे विकसित राष्ट्र प्रतिवर्ष परमाणविक परीक्षण करतें हैं। भारत, पाकिस्तान, कोरिया, जर्मनी आदि जैसे देश भी इस क्षेत्र में पीछे नहीं हैं।" उनकी विषाक्तता को अंतरिक्ष पीता तो जा रहा है, पर उसी अनुपात में मानवजाति पर भी प्राकृतिक प्रकोपों के रूप में कहर बरसाएगा।

बे-लगाम प्रगति की सरपट दौड़ निश्चित ही मनुष्यजाति को मृत्यु के खंदक में ले जा पटकेगी। अविछिन्न रूप से सभी प्रकृति चक्र से जुड़े हुए हैं। कोई अप्रभावित रहे, ऐसा संभव नहीं है। जीवित रहने अथवा मरने का उपक्रम सभी का एक साथ बनेगा। विचारशीलता की माँग है कि उस सरपट दौड़ पर अंकुश लगाया जाए। वह दूरदर्शी रीति-नीति अपनायी जाए, जिसमें सबका दूरवर्ती स्थायी लाभ जुड़ा हो।

❐ ❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"अप्राकृतिक जीवन"

इकोसिस्टम में तेजी से बढ़ रहे असंतुलन तथा पर्यावरण में आ रहे विघटन की समस्या के लिए वैज्ञानिकों ने प्रारंभ में पारिस्थितिकी, भौगोलिक एवं जलवायु आदि में बिखराव को ही कारण माना था। उसी के अनुसार पर्यावरण संरक्षण के प्रयास आदि भी प्रारंभ किए गए, पर उन्हें अब स्वीकार करना पड़ रहा है कि एकांगी प्रयासों से काम चलने वाला नहीं। स्थूल के साथ सूक्ष्म वातावरण के परिशोधन की व्यवस्था पर भी समुचित ध्यान देना होगा।

मनुष्य के अलावा अन्य सभी जीव-जंतु, वनस्पति प्राकृतिक जीवन जीते हुए पर्यावरण के साथ एक निश्चित व्यवस्था तथा अनुशासन में रहते हैं। देखा गया है कि स्थान विशेष की जलवायु, प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता आदि के अनुरूप ही रहन-सहन, खानपान एवं भिन्न-भिन्न संस्कृतियों आदि का वहाँ के समाज में समावेश और विकास होता रहा है, पर टी० वी०, फिल्म तथा संचार के अन्य माध्यमों के विकास होने के कारण मनुष्य दूसरी सभ्यताओं के अंधानुकरण की ओर प्रवृत्त होकर, अप्राकृतिक जीवनक्रम अपनाने लगा है। कहा जा सकता है कि मनुष्य ही एकमात्र प्राणी है, जो अप्राकृतिक जीवन को अपनाकर अपने परिकर को, पर्यावरण को और जड़ जीव-जगत् को सबसे अधिक प्रभावित करता है तथा वहाँ के वातावरण में अव्यवस्था तथा अनिश्चितता का माहौल खड़ा कर देता है।

इस संसार में जितने भी पंथ, सभ्यता, धर्म हैं, ज्यादातर सभी में ईश्वर तथा प्रकृति को पर्यायवाची या परस्पर पूरक माना गया है। सभी धर्मों में स्थान विशेष की आवश्यकता के अनुरूप ही रहन-सहन, खानपान तथा संस्कृति को स्थान दिया गया है।

कहने का यह तात्पर्य नहीं है कि नए निर्धारण, प्रयोग किए ही न जावें, पर उससे हमारे पर्यावरण में संतुलन बिगड़ने न पाए,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इतना ध्यान रखना आवश्यक है। राष्ट्रपिता गांधी जी ने हमारे यहाँ के पर्यावरण और देशवासियों के रहन-सहन के संबंध को समझकर कहा था कि, "हमारे गाँव के इलाकों और शहरी आबादी के लिए भी संतोषपूर्ण वातावरण विनिर्मित करना—सर्वांगीण प्रगति प्राप्त करने के लिए अत्यंत ही आवश्यक है।" उनके अनुसार शहरों में दीख पड़ने वाली भौतिक प्रगति का कारण, औद्योगीकरण के साथ गाँवों का शोषण है। इस प्रकार के दौर में हम अपने गाँवों के रहन-सहन, पारंपरिक उद्योग (क्राफ्ट्स) हस्तकला के साथ अति मेधावी मानव-मशीन को जंग लगाते हुए, विकृत करते जा रहे हैं। इससे हमारी जनसंख्या का एक बड़ा भाग बेरोजगारी के चंगुल में फँसता जा रहा है और वे लोग घृणास्पद गरीबी तथा अकर्मण्यता में फँसकर पूरे पर्यावरण को क्षतिग्रस्त बना रहे हैं। बेरोजगारी के कारण लोग प्रकृतिप्रदत्त मूल्यवान् तथा दुर्लभ संसाधनों का बैठे-बिठाए ही अविवेकपूर्ण दोहन करने लगते हैं।

वे चाहते थे कि ग्राम्य जीवन के रहन-सहन खान-पान को विकृत करने का प्रयास न हो तथा मानवी बुद्धि अपनी प्रतिभा का नियोजन हस्तकला उद्योग को बढ़ावा देने में तथा स्वदेशी निर्मित सामग्री के उपयोग में लगावें। गांधी जी शहरीकरण को एक ऐसी विपदा मानते थे, जिसकी नींव में केवल अपने लिए साधन-सुविधा युक्त तथा ऐय्याश जीवन की प्राप्ति ही एकमात्र लक्ष्य होता है तथा उसके दुष्प्रभाव में परिकर का ही नहीं, पूरे प्रदेश, देश और संसार का पर्यावरण बिगड़ता है।

☆ फैशन का प्रदूषण भोजन को विषाक्त बना रहा

शास्त्रों में कहा गया है, "जैसा खाएँ अन्न वैसा बने मन।" और जैसा मन होता है, इसके अनुसार ही मानव के विचार, व्यवहार तथा क्रियाकलाप आदि अभिव्यक्त होते हैं। हम पहले ही कह आए हैं कि मानव के द्वारा किया जाने वाला प्रत्येक कर्म, व्यवहार तथा विचार निरंतर पर्यावरण पर प्रभाव डालता रहता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इन दिनों फैशन का भूत, भोजन को विषाक्त बना रहा है, जिसके फलस्वरूप मानव जीवन और पर्यावरण भी दूषित, विकृत होते जा रहे हैं। अमेरिका में अधिकतर खाद्य पदार्थ पैक बंद डिब्बों या एयर टाइड बोतलों में मिलते हैं। अधिक देर तक खराब न होने और धूलि आदि का प्रभाव न पड़ने तथा लाने-ले जाने की सुविधा की दृष्टि से ऐसा किया जाता है। सुंदर और सुसज्जित कलेवर का भोजन शायद आँखों को अच्छा लगने से मन को भी भाता हो; जो हो अमेरिका में अधिकांश खाद्य पदार्थ सुंदर पैकिंग किए हुए बंद कलेवरों में मिलते हैं।

इन पदार्थों में बहुत-से मिठाई मिश्रित भी होते हैं। शक्कर का वजन घटाने और मिठास बढ़ाने की दृष्टि से वहाँ चीनी का सत समझे जाने वाले सेक्रीन जैसे पदार्थ मिलाए जाने का रिवाज है। कैमिस्टों की भाषा में उन्हें 'साइक्लेमेट्स' कहते हैं। आम लोग भले ही उसे चीनी का सत समझें, वस्तुतः वह एक विषैला पदार्थ होता है, जो थोड़ा-थोड़ा पेट में पहुँचते रहने पर भी अंततः स्वास्थ्य के लिए संकट उत्पन्न करने का कारण बनता है। अमेरिकी सरकार ने खोजबीन के बाद ऐसे १७२ प्रकार के खाद्य पदार्थों पर कानूनी बंदिश लगाई है, जिनमें यह नकली मिठास—साइक्लेमेट्स मिले रहते थे। इन प्रतिबंधित पदार्थों में दो करोड़ पौंड मीठा विष मिलाया जाता है। इसे १५ करोड़ व्यक्ति खाते थे और इन्हें बनाने वाली कंपनियाँ सात अरब डालर का मुनाफा कमाती थीं। इतनी बड़ी कमाई के कारण, वे उस नकली मिठास का गुणगान खूब करती थीं। असली शक्कर से भी इसे अच्छा बताती थी और विज्ञापनबाजी का ऐसा जाल फैलाती थी, जिससे आम जनता इसे ही वरदान समझे और इसके मुकाबले असली शक्कर का छूना भी अपनी बेइज्जती समझे। इतना मुनाफा जिन्हें होता हो, वे यदि जनता को भ्रम-जंजाल में फंसाने के लिए, विज्ञापनबाजी द्वारा तिल को पहाड़ बना दें, तो इसमें आश्चर्य ही क्या ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह कानूनी बंदिश की पकड़ में आया हुआ नकली मिठास—साइक्लेमेट्स 'आखिर है क्या ?' यह जानना मजेदार है। आरंभ में कारखाने के गरमी उत्पन्न करने वाले बायलरों में उसके जल्दी खराब न होने की सुरक्षा के लिए इस रसायन को पोतने के काम में लाया जाता था। सन् १९३७ में शिकागो विश्वविद्यालय के एक छात्र ने संयोगवश इसे चख लिया। उससे पूर्व यह गंदा और विषैला पदार्थ चखने की किसी की इच्छा भी नहीं हुई थी। छात्र की जीभ से यह पदार्थ जरा-सा छुआ था कि, उसकी तेज मिठास दिन भर मुँह में बनी रही। इसके बाद लोग इस पर टूट पड़े और पिछले कई वर्षों में अमेरिका ही नहीं, अन्य देशों में भी इसका भरपूर प्रयोग होता रहा।

इसके सेवन से उत्पन्न होने वाली शिकायतों की ओर डॉक्टरों का ध्यान गया, तो इसकी जाँच-पड़ताल आरंभ हुई। 'साइंस न्यूज' पत्रिका में एक शोधपूर्ण लेख में सिद्ध किया कि इस मीठे जहर से पेट का सत्यानाश होता है और रक्त इतना विषैला हो जाता है कि उस पर तेज 'ऐंटीबायोटिक' दवाओं तक का कोई असर नहीं होता। कृषि विभाग की शोध रिपोर्ट में छपा है कि इसकी एक प्रतिशत शरीर में उपस्थिति होने से कैंसर होने की आशंका उत्पन्न हो जाती है। चूहे, मुर्गी, खरगोश आदि छोटे जीवों पर लगातार प्रयोग करने के बाद, जो निष्कर्ष निकले उन्हें देखते हुए स्वास्थ्य विज्ञानियों ने इसे 'अखाद्य' घोषित करने की प्रबल माँग की। फलस्वरूप कानून बना और प्रतिबंध लगाया गया। अब 'साइक्लेमेट्स' को रासायनिक शब्दकोश में विषैला पदार्थ छापा जाने लगा है। इससे पूर्व वह साधारण खाद्य पदार्थ था।

मीठा जहर तो दुर्भाग्यवश पकड़ और चपेट में आ गया। ऐसे-ऐसे ढेरों पदार्थ अभी और इसी स्तर की हानि पहुँचा रहे हैं, जिन्हें सभ्यता के नाम पर—सुंदर, संगठित, मजेदार बनाने के नाम पर धड़ल्ले के साथ प्रयोग किया जा रहा है। डबल रोटी, बिस्कुट, केक आदि का प्रचलन दिन-दिन बढ़ रहा है। चौके, चूल्हे के झंझट

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से बचने के लिए लोग सुंदर पैकिंगों में मिलने वाले इन्हीं पदार्थों से दैनिक भूख बुझाने के लिए निर्भर होते जा रहे हैं। इनमें खमीर पैदा करने के लिए सोडा बाई कार्ब सरीखे रासायनिक तत्त्व मिलाए जाते हैं। इनमें अंडा, मक्खन, दूध के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले सस्ते रासायनिक पदार्थ भी खूब प्रयोग में लाए जा रहे हैं। एक डबल रोटी बनाने वाली अमेरिकन कंपनी के निर्माण की जाँच करने पर पता चला कि वह पौष्टिक खाद्य डालने की अपेक्षा सस्ते 'एमलसी फायर' मिलाती है, जिससे देखने, खाने में तो वह निर्माण भी भला लगता है, पर गुणों में बिल्कुल भिन्नता रहती है। अमेरिका के 'हाउस से प्रोप्रियेशन कमेटी' की रिपोर्ट है कि, खाद्य पदार्थों में इन दिनों लगभग ५०० रासायनिक तत्त्व मिलाए जाते हैं। इनमें से अधिकांश ऐसे होते हैं, जिनकी प्रतिक्रिया को ठीक तरह जाँचा नहीं गया है। इन प्रामाणिक रसायनों का खाद्य पदार्थों में ज़ैसा बेहिसाब सम्मिश्रण हो रहा है, उसे देखते हुए लगता है कि भोज्य पदार्थों में यह प्रदूषण सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए चुनौती बनकर रहेगा और मानव-जीवन के लिए खतरा उत्पन्न करेगा।

'बच्चों के लिए पौष्टिक खुराक' के नाम पर विज्ञापित पदार्थों में आमतौर से 'मोनो सोडियम ग्लोटायेट' मिलाया जाता रहा है और उसे आरंभ से ही हानिरहित समझा जाता रहा है। अब परीक्षणों ने प्रमाणित किया है कि यह मानसिक संतुलन बिगाड़ने वाला भयावह पदार्थ है। परीक्षण किए गए कितने ही जानवर उससे पागल हो गए। अब इस सम्मिश्रण का उत्पादन करने वाली कंपनियों को उपर्युक्त निर्माण बंद करना पड़ा है।

पेय पदार्थों में मिलाया जाने वाला नारंगी रंग का सत रसायन इसी प्रकार हानिकारक ठहराया और बंद किया गया, जबकि पहले उसे आकर्षक, सुगंधित, पौष्टिक, मजेदार आदि न जाने क्या-क्या कहा जाता था ?

नारवे के डॉक्टर एलैप्सटीन ने बीमार भेड़ों की जिगर की खराबी जानते हुए पता लगाया है कि उनमें 'नाइट्रेट्स' की मात्रा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बढ़ जाने से यह बीमारी फैली। इस खोज से यह भी पता चला कि सामान्य भोजन में रहने वाले साइक्लोहैनाइलामीन तत्त्व जब 'नाइट्रेट्स' में मिल जाते हैं, तो 'नाइट्रोसेमीन' नाम का एक नया तत्त्व पैदा करते हैं, जो मानवशरीर में घातक प्रतिक्रिया पैदा करते हैं और कैंसर तक की संभावना बन जाती है। इन दिनों ग्राद्य पदार्थों के डिब्बों और बोतलों को सुरक्षित रखने के लिए प्रचुर मात्रा में नाइट्रेट्स प्रयोग किया जाता है। यह प्रयोग चुपके-चुपके क्या अनिष्ट पैदा कर रहा होगा, इसे समय ही बताएगा।

अन्न को सुरक्षित रखने—उसे कीड़ों से बचाने के लिए खेतों तथा गोदामों में बेंजोल, निकिल, डी० डी० टी०, हाइक्सीकिनीलोन कार्बोक्सी—मीथाइल, आरसोनेट, स्टिलवेस्ट्रील आदि रसायन प्रयुक्त होते हैं। यह कीड़ों को ही नहीं मारते, भोजन के साथ पेट में पहुँचकर मनुष्य को भी मारते हैं। चूँकि मनुष्य कीड़ों से बड़ा है इसलिए उसकी मौत भी होती है, पर धीरे-धीरे, अंतर सिर्फ इतना ही है।

'छिपे बधिक' नामक पुस्तक में यूथमूनी ने सभ्यता के नाम पर प्रयुक्त होने वाले इन रसायनों से हो रहे प्रदूषण का खतरा संसार के सामने प्रस्तुत किया है और लिखा है कि यदि समय रहते चेता न गया, तो नवीनता की चमक-दमक के पीछे अंधी होकर दौड़ने वाली दुनिया को अपने हाथों विषपान करके मरने वाली मूर्खता अपनाने का दंड भुगतना पड़ेगा।

गरीब देशों के पिछड़े हुए लोगों को गंदगी पसंद, अवैज्ञानिक और खाद्य पदार्थों में जीवन तत्त्वों की तालिका न जानने जैसी नासमझियों के कारण उपहासास्पद समझा जाता था। उनकी मूर्खता के लिए तिरस्कृत किया जाता था, पर इन सभ्यताभिमानियों को क्या कहा जाए, जो दूसरी किस्म का अंधविश्वास अपनाकर उन पिछड़े हुए लोगों से भी कहीं अधिक आत्मघात करने पर तुले हुए हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विटामिनों और मिनिरलों की पुष्टाई की दवाएँ और खुराकों की जहाँ आँधी-तूफान जैसी बाढ़ आ रही हो, वहाँ भी यदि स्वास्थ्य संकट खड़ा रहे, तो समझना चाहिए कि कोई बड़ी और भयंकर भूल हो रही है। सुविधाओं और जानकारियों की दृष्टि से संसार का अग्रणी माना जाने वाले अमेरिका में यदि हर साल पाँच लाख व्यक्ति कैंसर जैसे भयानक रोग से तड़प-तड़पकर मरें, तो समझना चाहिए कि भूल छोटी नहीं बड़ी ही है।

सभ्यता की चकाचौंध फैशन, ठाठबाट तक रहे, तो सह्य है, पर जब उसकी पहुँच खाद्य पदार्थों तक जा पहुँचे, तब तो ईश्वर ही रक्षक है। धीरे-धीरे भूल को पहचानने की दिशा में लोगों का दिमाग लौटा है और देखभाल आरंभ की है, तो पता चलता जाता है कि रसायनों का अंधाधुंध प्रयोग जिस गति से खाद्य पदार्थों में होने लगा है, उससे हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए संकट भरी विभीषिका ही उत्पन्न होती और बढ़ती चली जा रही है। सरकारें भी सतर्क होने लगीं हैं। प्रतिबंधों की बात सोची जा रही है। कई योरोपीय देशों ने डिब्बों में बंद फलों को निषिद्ध ठहराया है।

राष्ट्रपति जॉनसन ने एक बार जनता को चेतावनी देते हुए कहा था—'खाद्य पदार्थों को सुंदर और सुगंधित बनाने का फैशन जनता के पेट में ऐसी चीजें पहुँचा रहा है, जो न खाई जाने योग्य हैं और जिनके कारण स्वास्थ्य संकट बढ़ेगा। अच्छा यह है कि स्वाभाविक और सादगी की ओर मुड़ें और भोजन की कृत्रिमता से परहेज करें।'

भूत-प्रेतों का अंधविश्वास अब पुराना हो चला—उसमें समझदार लोग नहीं फँसते, पर अब नए किस्म के अंधविश्वास ऐसे चल पड़े हैं, जो तथाकथित सुशिक्षित और सभ्य लोगों पर आसानी से सवार होते हैं। विज्ञान के नाम पर जो भी बात कही जाती है, उसे आँख बन्द करके अपनाने लगना—इसे अंधविश्वास ही कहा जा सकता है। दवादारू, टॉनिक, पौष्टिक आहार के नाम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर लोग ऐसी चीजें खाते चले आ रहे हैं, जो स्वास्थ्य संवर्द्धन में रत्तीभर भी सहायता नहीं करती, वरन् जादू जैसी क्षणिक चमक दिखाकर शरीरों को एक प्रकार से ऐसा अशक्त बना देती हैं, जो पीछे बिना दवाओं के सहारे खड़ा ही न रह सके। दुर्बलों को सबलता मिलने का आश्वासन देकर निकम्मी कौड़ी मोल की चीजों के बदले अशर्फियाँ वसूल की जाती हैं। झाड़फूँक करने वाले भूत-प्रेतों के बहाने, भोले लोगों को ठगा करते थे। अब दवाएँ, टॉनिक और पौष्टिक आहार बनाने वाली कम्पनियाँ न केवल रद्दी चीजें भेजकर लोगों को मूँड़ती हैं, वरन् ऐसी चीजें भी उनमें मिला देती हैं, जो सुंदरता, स्वाद, सुगंध तो पैदा करती हैं, पर साथ ही अपने विषैलेपन से सार्वजनिक स्वास्थ्य को हानि भी कम नहीं पहुँचाती।

प्रकृति की ओर वापस लौटना ही श्रेयस्कर है। सरल और स्वाभाविक भोजन सस्ता होते हुए भी कृत्रिम और कीमती, भड़कीले खाद्यों से कहीं अधिक उत्तम है। आहार-विहार के संयम से आरोग्य की जितनी सुरक्षा हो सकती है, उतनी हजारों रुपये की दवाओं से भी संभव नहीं। यह तथ्य जितनी जल्दी हम स्वीकार कर सकें, उतना ही उत्तम है।

☆ खाद्य पदार्थों में मिलावट की समस्या

हमारे दैनिक प्रयोग में आने वाली वस्तुओं का आजकल शुद्ध रूप में मिलना दूभर हो गया है। बाजार में कुछ भी वस्तु हम खरीदने जाएँ खूब जाँच-पड़ताल कर उसे खरीदें, लेकिन फिर भी विश्वास नहीं होता कि खरीदी गई वस्तु शुद्ध ही होगी। मिलावट की समस्या इस कदर व्यापक बन गई है कि वस्तु की शुद्धता के विषय में हम लोगों के मन में अविश्वास और संदेह की जड़ें बहुत अंदर तक जम गई हैं और ठीक भी है कि शुद्ध रूप में कोई वस्तु प्राप्त करना बहुत कठिन हो गया है। यह ऐसा छूत का रोग है कि, शहरी क्षेत्र से बढ़ता हुआ, हमारे ग्रामीण क्षेत्रों तक में भी फैल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गया है और अपनी जड़ें फैला रहा है। यद्यपि शहरों में मिलावट का रोग अधिक व्यापक और गहराई से व्याप्त है, तथापि हमारे ग्रामीण अंचल इससे बचे हुए नहीं हैं। शिक्षित-अशिक्षित, शहरी-ग्रामीण सभी अपनी उत्पादित वस्तुओं में अपने ढंग से मिलावट करते हैं।

घी, दूध, मसाले, आटा, अनाज, दवाइयाँ तथा अन्य बहुत-सी वस्तुएँ बाजार से किसी भाग्यशाली को ही शुद्ध रूप में मिल पाती होंगी। घी के नाम पर वनस्पति, मक्खन की जगह 'मार्गरीन', आटे में सेलखड़ी का पाउडर, पिसी हुई हल्दी में पीली मिट्टी, काली मिर्च में पपीते के बीज, कटी हुई सुपारी में कटे हुए छुहारे की गुठलियाँ, मिलाकर सरलता से बेची जा रही हैं। दूध में अरारोट या सपरेटा का पाउडर, पानी खूब मिलाया जा रहा है। मावे में उबले हुए आलू, शकरकंद या सपरेटा का खोवा बहुत चल रहा है। बीड़ी, सिगरेटों में रखी जाने वाली तंबाकू में गधे, घोड़े की लीद मिलाने के समाचार भी कई बार पढ़े गए हैं। बहुत-सी दवाओं के नाम पर पंसारियों की दूकान में सड़ी-गली जड़ी-बूटियों का खाद, द्राक्षासव के नाम पर गुड़ का सीरा खूब चलता है। अनाज में कंकर, खराब अनाज, बूरे में पाउडर, शरबत में सेक्रीन खूब चलती है। यह एक प्रसिद्ध कहावत हो गई है कि "आजकल जहर भी शुद्ध नहीं मिलता।" चाँदी, सोना, ताँबा, पीतल कोई भी धातु अपने शुद्ध रूप में नहीं मिल पाती। प्रत्येक वस्तु में मिलावट आज एक सामान्य बात हो गई है। मिलावट के साथ-साथ असली वस्तु के स्थान पर नकली वस्तुएँ खूब चल रही हैं, जिसकी पहचान भी नहीं हो सकती।

पिछले कुछ दस वर्षों में हमारे यहाँ मिलावट की मात्रा काफी बढ़ी है। कई वस्तुओं में २५-३० प्रतिशत से लेकर ७५-८० प्रतिशत से भी अधिक मिलावट होती है। हमारे लिए यह बात कितने दुर्भाग्य की है कि जहाँ एक ओर वस्तुओं की कीमतें तेजी से बढ़ रही हैं, आसमान को चूम रही हैं, वहीं मिलावट की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मात्रा भी बहुत बढ़ गई है। जन-जीवन की निर्वाह की सामग्री ही बड़ी कठिनाई से मिल पाए और वह भी प्रदूषित, मिलावटी हो, तब उस समाज की शारीरिक-मानसिक स्थिति का क्या हाल होगा, इसकी कल्पना सहज ही सामान्य बुद्धि का व्यक्ति कर सकता है। सचमुच ऐसे समाज का शारीरिक, मानसिक, नैतिक स्वास्थ्य दूषित होगा और इसके फलस्वरूप उसकी प्रगति के द्वार ही अवरुद्ध हो जाएँगे। यह ध्रुव सत्य है कि मिलावटी वस्तुओं के उपभोग से मनुष्य का स्वास्थ्य नष्ट होता है। स्वास्थ्य नष्ट होने के साथ-साथ जीवन की सभी संभावनाओं के मार्ग बंद हो जाते हैं। शरीर से रुग्ण, जीर्ण-शीर्ण मनुष्य क्या कर सकता है ? क्या सोच सकता है ?

क्या मिलावटी वस्तुओं का प्रभाव जनजीवन के स्वास्थ्य पर कम पड़ता है, जब असंख्यों को रोगी बनना पड़ता है ? रोग के साथ-साथ ही उसकी चिकित्सा पर होने वाला व्यय भी कुछ कम नहीं होता। कई बहुमूल्य जीवन फिर भी नहीं बच पाते और नष्ट हो जाते हैं। मिलावटी वस्तुओं के उपभोग से सचमुच ही व्यापक स्तर पर फैलने वाली भयंकर बीमारियों का एक मुख्य कारण अशुद्ध खाद्य का प्रयोग करना भी है। क्या मिलावट करने वाले यह नहीं सोचते कि उनके कारण कितनों को ही अकाल मौत का सामना करना पड़ता है ? क्या वे परोक्ष रूप से जनजीवन की सामूहिक हत्या के प्रयत्न नहीं करते, वस्तुओं में मिलावट करके ? सभा में बोलते हुए भूतपूर्व स्वास्थ्य मंत्री श्री डी० पी० करमकर ने एक बार कहा था—"एक हत्यारा भी खाद्य पदार्थों में मिलावट करने वालों से अधिक ईमानदार है। वह अपने पाप के प्रति सच्चा होता है और उसे सीधे-सीधे इसका परिणाम भी दंड के रूप में भुगतना ही पड़ता है, किंतु खाद्य पदार्थों को मिलावट के द्वारा प्रदूषित करने वाला तो वस्तुओं को विषाक्त करके अनेक व्यक्तियों की हत्या करके भी समाज में सच्चा, धार्मिक बना बैठा रहता है और दंड से साफ बच जाता है। किसी भी रूप में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिलावट करने वालों को क्षमा नहीं किया जाना चाहिए। हत्यारों की तरह ही उन्हें भी अपराधी मानकर दंड देना अनिवार्य है, क्योंकि वे अदृश्य रूप से अनेकों की जानें ले लेते हैं।"

क्या मिलावट करने वाले इस बात पर विचार करेंगे कि उनके द्वारा अज्ञात रूप से कितने जीवन नष्ट होते हैं। कितनों को रुग्ण जीवन बिताना पड़ता है ? जीवन निर्वाह के लिए बेचारा मनुष्य न जाने कितनी मेहनत-मजदूरी, नौकरी-चाकरी करता है और फिर भी तंग रहता है। जब तंगी की हालत में भी बाजार में से जैसे-तैसे निर्वाह की वस्तुएँ खरीदकर लाता है। उसका उपभोग करके जब स्वास्थ्य, धन, समय, श्रम, नष्ट होते देखता है, तो उसकी दीन स्थिति क्या होती है; इसका भुक्तभोगी लोग सहज ही अनुमान लगा सकते हैं। इन मिलावटी प्रदूषित और विषाक्त वस्तुओं का सेवन करके कोई स्वस्थ-सशक्त रह सकता है ? कदापि नहीं। फिर कल्पना कीजिए उस समाज की, उस राष्ट्र की, जहाँ खाद्य पदार्थों में मिलावट की समस्या व्यापक स्तर पर फैली हो ? क्या वह देश, वह समाज उन्नति कर सकेगा, शक्तिशाली बन सकेगा, समृद्ध हो सकेगा सबका, एक ही उत्तर है, नहीं।

क्या मिलावट करके हम अपना ही नाश नहीं करते ? यह सत्य है कि समाज के साथ ही व्यक्ति के जीवन का उत्कर्ष-अपकर्ष जुड़ा हुआ है। जिस समाज को हम अपने ही हाथों मिलावटी वस्तुओं का विष देकर रुग्ण, क्षीण, कमजोर बनाते हैं, उसे नष्ट करते हैं, क्या उसके साथ-साथ एक दिन हमारा नाश भी नहीं हो जाएगा ? समाज के नष्ट होने के साथ ही हमें भी नष्ट होना पड़ेगा।

एक बार एक भारतीय सज्जन इंग्लैंड गए थे। एक स्थान पर दूध लेते समय वे पूछ बैठे "इसमें पानी तो नहीं मिला है" दुकानदार आश्चर्यचकित होकर बोला—"क्या आपके यहाँ दूध में पानी मिलाया जाता है ?" उन सज्जन ने कोई उत्तर नहीं दिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सचमुच बहुत-से देशों में पर्याप्त मूल्य ले लिया जाता है, लेकिन मिलावट करना एक बहुत ही हेय कर्म समझा जाता है। इसके मानी यह नहीं कि अन्य देशों में ऐसा होता ही नहीं है, फिर भी बहुत-सी जातियों में इस अनैतिक कार्य को बहुत घृणित समझा जाता है। हमें भी राष्ट्र के लिए, समाज के लिए, जन जीवन की समृद्धि के लिए, अपने नैतिक असूलों के लिए क्षुद्र स्वार्थ की तिलांजलि देकर खाद्य पदार्थों में मिलावट के द्वारा प्रदूषण करने के पाप से बचना चाहिए। देशव्यापी स्तर पर फैले हुए इस पाप-प्रवृत्ति को दूर करना चाहिए। यदि इस संबंध में हम सफल हो सके, तो राष्ट्र के विकास, समाज के उत्थान, जनजीवन की समृद्धि में एक बहुत बड़ा काम हो सकेगा।

☆ खोखली पाश्चात्य सभ्यता ही प्रदूषित कर रही है संस्कृति को

"दूर के ढोल सुहावने" वाली बात प्रायः सही सिद्ध होती रही है। चंद्रमा कितना सुंदर लगता है, कविगण उसका बखान करते नहीं थकते, पर उस तक पहुँचने वालों ने उसकी कुरूपता का भयानक वर्णन किया है। गड्ढे, टीले वाली जमीन, कहीं अतिशय गरमी, कहीं ठंडक, न हवा, न पानी। सुरक्षा उपकरणों के बिना वहाँ कोई एक क्षण भी नहीं ठहर सकता। सर्प कितना सुंदर लगता है। धूप में इसकी चाल, चमक, आकृति देखते ही बनती है। बच्चे जिन्हें उसकी असलियत नहीं मालूम, वे उसे पकड़ने दौड़ते हैं। गलती से उनमें से कोई पकड़ बैठे, तो वह खिलौना क्षण भर में डस लेगा और प्राणों का अंत कर देगा। प्राचीनकाल में ऐसी विष कन्याएँ होती थीं, जिनका रूप-यौवन देखते ही मनुष्य मोहित हो जाता था, किंतु उनके संग में आते ही प्राणघातक रोगों में फँस जाता था। ऐसी ही विषकन्या आजकल पाश्चात्य सभ्यता के रूप में देखी जा सकती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अमेरिका, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड जैसे देशों की, खाली भूमि पर कब्जा कर लेने के उपरांत, गोरे लोगों को वहाँ प्रकृति संपदा का आधिपत्य करने का अवसर मिला और देखते-देखते थोड़े ही दिनों में माला-माल हो गए। विज्ञान के विकास का भी यही युग था। अधिक कमाई करने वाले यंत्रों का निर्माण उसी पैसे से हुआ। उपनिवेशों में माल खपाने का अवसर मिला। इस प्रकार कुछ ही शताब्दियों में छप्पर फाड़कर दौलत उन पर बरसी।

इस उपलब्ध संपन्नता का उपयोग कहाँ हो, इसके लिए संकीर्ण मनोवृत्ति को सुविधा-संपादन और विलासिता के बढ़ते हुए साधन—यह दो ही काम दृष्टिगोचर हुए। वे भारत के अनुयायी थोड़े ही थे, जो अपनी बुद्धि-वैभव से संसार के कोने-कोने में बिखरकर वहाँ के निवासियों को सुविकसित और सुसंस्कृत बनाने का प्रयास करते और इसके लिए स्वयं कष्ट सहते।

पाश्चात्य देशों के हाथ में पहुँची विपुल संपदा ने जहाँ शिक्षा, चिकित्सा जैसे उपयोगी साधन बढ़ाए, वहाँ विलासिता की सामग्री जुटाने में भी कमी न रखी। यह लंबे समय का इतिहास नहीं है। अभी दो शताब्दियाँ मुश्किल से बीती हैं कि वे क्षेत्र विलासिता की चरम सीमा को छूने लगे। उनकी रुचि के व्यंजन, पकवान और स्वच्छंद यौनाचार, आकर्षक सज-धज उन क्षेत्रों के सर्वसाधारण को उपलब्ध हो गई। वाहन के लिए मोटर, परस्पर वार्ता के लिए टेलीफोन, घर बैठे सिनेमा देखने लिए टेलीविजन जैसे अनेकानेक उपकरण हर किसी को उपलब्ध हुए। अंधाधुंध आमदनी का आखिर उपयोग भी और किन कामों में होता है ?

यह उमंग भरी लहर थोड़े ही दिनों में अपना प्रभाव दिखाने लगी। परिवार टूटे। विलास की स्वच्छंदता में पति-पत्नी का साथ रहना ही पर्याप्त नहीं था। न अभिभावकों को संतान से कुछ आशा और न संतान के लिए अभिभावकों का कोई बड़ा त्याग। बूढ़ों के लिए संपन्न देशों में मवेशीखाने बन गये और बच्चों के लिए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनाथालय। संतान और अभिभावक के बीच रहने वाली आत्मीयता ही एक प्रकार से समाप्त हो गई।

यौन स्वेच्छाचार में हर किसी को नवीनता की ललक रहने लगी। फलतः तलाकों का एक खिलवाड़ जैसा प्रचलन हो गया। विवाह एक चिह्नपूजा है, जिसे करने के उपरांत दोनों साझीदारों में से कोई नहीं जानता कि यह समझौता कितने दिन चल सकता है और कितने दिन बाद वह टूट जाएगा। उठती उम्र की लड़कियों को पुरानी मित्रता छोड़कर उनके साथ नया संबंध जोड़ने के लिए फुसलाने वाले अनेकों होते हैं और वे लड़कियाँ भी देखती हैं कि अधिक लाभदायक सौदा कौन-सा है ? स्त्री की भाँति पुरुष भी इसी फिराक में रहते हैं। नया सो सुहावना के फेर में आज विवाह—कल तलाक का मखौल बनता रहता है, पर कुछ ही साल में स्थिति उलट जाती है। स्त्रियों की ढलती आयु आते ही उन्हें अपने लिए घोंसला ढूँढ़ना पड़ता है। उन्हें कोई मुश्किल में ही कुछ दिन अपनी डाल पर बैठने देता है। दोनों ओर से जब मजबूरियाँ सामने आ जाती हैं, तभी कुछ ऐसा भरोसा बनता है कि, शायद टिकाऊपन बना रहे। दांपत्य जीवन में हर घड़ी उसी तरह चौकन्ना रहना पड़ता है, मानों किसी ठग-जालसाज के साथ दिन गुजारने पड़ रहे हों। संतान और अभिभावकों का रिश्ता तभी तक है, जब तक पंख नहीं उगते। लड़के हों या लड़कियाँ, जब कुछ कमाने लायक हो जाते हैं, अपना अलग घोंसला बनाते हैं, ऐसी दशा में मुसीबतों के समय कोई किसी से आशा व अपेक्षा नहीं करता। आजीविका को ही सब कुछ मानकर चलना पड़ता है। ऐसी दशा में व्यक्तिगत जीवन में अनिश्चितता और उद्विग्नता की मनःस्थिति बनती है और वातावरण तनावग्रस्त बन जाता है। इस तनाव को हलका करने के लिए नशेबाजी ही एक मात्र अवलंबन रह जाती है। सिगरेट, शराब और मादक औषधियाँ दोनों ही जीवन की आवश्यकता बन जाती हैं। आधी रात नाटक, कैब्रे देखने में बीत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाती है, शेष आधा समय नींद की नशीली गोलियाँ लेकर झपकियाँ लेते हुए बितानी पड़ती है। भोजन के लिए आधी पारियाँ होटलों में बितानी पड़ती हैं। घर पर खाने वाले या तो बहुत गरीब या बहुत अमीर होते हैं।

अब नौजवानों का एक नया शौक बना है—किसी की भी जान लेना, पिस्तौल तानकर जेब खाली करा लेना या दो-तीन का गिरोह बनाकर किसी अकेले या दुकेले की गरदन मरोड़ देना। यह धंधा अच्छी आमदनी का भी है और अपनी चतुरता का रौब दिखाने का भी। नई पीढ़ी के आवारा लोगों के लिए दादागीरी सुलभ-सी बनती जा रही है और अच्छेखासे नफ़े की भी। जो लड़के माँ-बाप से पटरी नहीं बैठाते और पढ़ाई में मन न लगने के कारण अधकचरे रह जाते हैं, उन्हें बड़े लोगों जैसा काम तो मिलता नहीं। हलकी नौकरी में शानदार ढंग से गुजारा कैसे चले, इस समस्या का हल उन्हीं की बिरादरी के आवारा लोग आसानी से सिखा देते हैं। गिरोह बनते देर नहीं लगती है। पहले कमजोर लोगों पर हाथ साफ करते हैं, बाद में जिनकी भारी जेब देखते हैं, उनका पीछा करते हैं।

वे भले आदमी जिनका पैसों से वास्ता है और लफंगों की करतूतें सुनते रहते हैं, उन्हें हर समय भयभीत और चौकन्ना रहना पड़ता है। आगे-पीछे, दाँयें-बाँयें देखकर चलते हैं, कहीं कोई दादा तो पीछे नहीं लग रहा है। इन गिरोहों में लड़कियाँ आसानी से साझीदार हो जाती हैं। वे सेक्स प्रलोभन से किसी को इधर से उधर ले जाती है और गिरोह के दूसरे लोग मौका देखते ही शिकार दबोच लेते हैं। ऐसी घटनाएँ जिन्होंने सुन रखी है, वे फूँक-फूँककर पैर रखते हैं, उन्हें हर घड़ी खैर मनाते, जान बचाते हुए जहाँ जाना है, वहाँ पहुँचते हैं। घर पहुँचते ही भीतर से ताला बंद कर लेते हैं और किसी के आवाज देने पर, तब तक नहीं खोलते जब तक कि आवाज को पहचानी हुई और विश्वस्त होने की संभावना न हो जाए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अखबारों में चोरी-डकैती और बलात्कार घटनाएँ बड़े अक्षरों में छपती रहती हैं, जिसे पढ़कर कमजोर तबियत के लोग सोचने लगते हैं कि मानो वह सभी मुसीबत उन्हीं के लिए रची गई हैं और कल नहीं तो परसों उन्हीं के सिर पर गिरेगी। वही खबरें महत्त्वाकांक्षी, लोलुप लोगों के विचारों को अनाचार और अप्राकृतिक जीवन के लिए प्रेरित करने वाले प्रदूषित तत्त्व के रूप में काम करती हैं। यह स्थिति अपने देश के बड़े शहरों में भी देखी जा सकती है और छोटे गाँव में भी।

ऐसी स्थिति में प्रगति भौतिक दृष्टि से कितनी ही क्यों न हो गई हो, ये व्यक्ति आदिम युग में जीते हुए कहे जाएँगे। जहाँ गति व मति का समुचित समन्वय नहीं होता, वहाँ यही स्थिति होती है। अच्छा हो सभ्यता के विकास के साथ संस्कृति का भी विकास हो। अंत में सुसंस्कारिता पनपे। तब ही वास्तविक प्रगति मानी जा सकती है। आज की खोखली पाश्चात्य सभ्यता हम सब के लिए एक सबक है।

❐ ❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युद्ध और पर्यावरण

सृष्टि की प्रत्येक वस्तु का उपयोग दो रूपों में किया जा सकता है—सृजनात्मक अथवा विनाशात्मक। सृजनात्मक प्रवृत्ति जहाँ व्यक्ति एवं समाज की सुख-शांति एवं पर्यावरण में सुव्यवस्था बनाए रखने में योगदान देती है, वहीं विध्वंसात्मक प्रवृत्ति पर्यावरण को छिन्न-भिन्न कर देती है एवं व्यक्ति को उच्छृंखल, उद्दंड एवं अपराधी बनाती है। शरीर बल, बुद्धि बल एवं संपत्ति अपने में बड़े समर्थ एवं शक्तिशाली हैं, किंतु इनकी महत्ता एवं उपयोगिता सदुपयोग पर ही आधारित है। महत्ता तो है, किंतु तभी है, जबकि दुःखी, पीड़ित, अक्षम व्यक्तियों, प्राणी तथा वनस्पति जगत् का सहयोग-सहायता की जाए, यदि व्यक्तिगत स्वार्थ, संकीर्णता के पोषण और अनीति, अनाचार बरतने में ही इस शक्ति का अपव्यय हुआ, तो इसकी गरिमा कहाँ रही ? बुद्धिबल के संदर्भ में भी यही बात लागू होती है, रचनात्मक दिशा में सदुपयोग के कारण ही बुद्धि की पूजा, प्रतिष्ठा भारतीय संस्कृति में पंच देवों में गणेश के रूप में हुई।

संपत्ति, व्यक्तिगत और सामाजिक सुख-साधनों के विकास में कितना योगदान देती है, इससे हर कोई परिचित है, किंतु वहीं इसका दुरुपयोग मनुष्य को व्यसनी, उच्छृंखल अपराधी बना देता है। शक्ति किसी प्रकार की क्यों न हो, उसकी महत्ता तभी है, जब उसको सृजनात्मक कार्यों में लगाया जाए। विध्वंसकारी शक्ति का उपयोग तो अनेकानेक समस्याएँ ही खड़ा करता है।

सामर्थ्य तो किसी चीज की गहराई में है, इस तथ्य को सभी जानते हैं। मनुष्य देखने में एक चलता-फिरता, श्रम करने वाला शरीर दिखाई पड़ता है। बहिरंग कलेवर से अंतरंग में प्रवेश किया जाए, तो उसके अंदर बौद्धिक क्षमता से लेकर भाव-संवेदनाओं की संपदा छिपी पड़ी है। उसे जगाया जाए, तो सामान्य दिखाई पड़ने वाले मनुष्य का महात्मा, महापुरुष बनने की पूरी-पूरी संभावना है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

न केवल मनुष्य और प्राणियों के अंतरंग में परमात्मा ने ये विशेषताएँ छिपाई है, वरन् जड़ पदार्थों के अंतराल में भी शक्ति का भंडार छिपा रखा है। पदार्थ के छोटे-से-छोटे कण परमाणु के नाभिक में शक्ति का सागर लहरा रहा है। विध्वंस में इसका उपयोग होने पर यह पर्यावरण को कैसे प्रदूषित करता है ? इसका प्रमाण परमाणु के नाभिकीय विखंडन में देखा जाता है।

☆ परमाणु शक्ति—आत्मरक्षा या विनाश

१ मार्च सन् १९५४ को प्रातः छह बजकर बारह मिनट पर प्रशांत महासागर के निकट अमेरिका ने एक परमाणु परीक्षण किया। नाभिकीय विखंडन के फलस्वरूप निकटवर्ती एक सुनसान द्वीप छोटे-छोटे टुकड़ों में बिखर गया। विस्फोट से निकलने वाली रेडियोधर्मी किरणों ने सैकड़ों मील के क्षेत्र के जीव-जंतु एवं फसलों को प्रभावित किया। परीक्षण स्थल से सत्तर मील दूर स्थित 'मार्शल द्वीप एवं बिकनी' के इलाके में छह मिनट बाद विस्फोट की आवाज सुनाई पड़ी। दो घंटे के उपरांत सफेद बरफ जैसी राख उक्त इलाके में गिरने लगी। फलस्वरूप अनेक व्यक्तियों की आँख की रोशनी सदा के लिए नष्ट हो गई। कितनों को चर्मरोग, शारीरिक जलन जैसी बीमारियाँ हो गईं। एक परीक्षण में पाया गया कि उनमें अधिकांश अर्ध-विक्षिप्त हो गए थे।

इन विनाशकारी परिणामों को देखते हुए भी विश्व के अनेक राष्ट्रों में विध्वंसात्मक शस्त्रों के निर्माण की होड़ चल रही है। उसे देखकर लगता है कि बुद्धिमान् कहा जाने वाला मनुष्य कहीं पागल तो नहीं होता जा रहा है। शक्ति संचय के लोभ में एक से एक विनाशक बमों का नित्य निर्माण होता चला जा रहा है। इस शृंखला में एक और विघातक कड़ी जुड़ी है—उद्जन बमों तथा लेसर बमों के निर्माण के रूप में। यद्यपि अभी इन बमों का प्रयोग किसी राष्ट्र विशेष के विरुद्ध में नहीं हुआ है, फिर भी इनका परीक्षण मात्र ही पर्यावरण में इतने घातक प्रभाव उत्पन्न कर रहा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है कि, उसे देखकर कहा जा सकता है कि न केवल मनुष्य बल्कि सारे प्राणी समूह के अस्तित्व को समाप्त करने के लिए ये परीक्षण पर्याप्त होंगे। एक मध्यम आकार का उद्‌जन बम एक लाख वर्ग मील क्षेत्र तक प्रदूषण का प्रभाव फैलाता है। लंबे समय तक उसके परीक्षण वायुमंडल की ऑक्सीजन, नाइट्रोजन एवं जल से संयुक्त होकर नाइट्रिक अम्ल बनाते हैं। वायुमंडल में उपस्थित अम्ल की मात्रा आँखों एवं त्वचा में जलन उत्पन्न करती हैं। विस्फोट से उस क्षेत्र की फसलें पूर्णतः नष्ट हो जाती है। नाभिकीय विखंडन से निकले न्यूट्रॉन कण वायुमंडलीय नाइट्रोजन से मिलकर एक ऐसे रेडियो-सक्रिय समस्थानिक (आइसोटोप) का निर्माण करती है, जो हजारों वर्ष तक जीव-जंतुओं एवं वनस्पतियों पर अपना घातक प्रभाव पहुँचाते हैं। कार्बन-०४ नामक आइसोटोप पौधों के माध्यम से अवशोषित होकर फल-फूलों में बना रहता है, जिसका उपयोग मनुष्य तथा अन्य प्राणी करते हैं और रेडियो-सक्रियता की विषाक्तता की चपेट में आते रहते हैं।

रेडियो-सक्रियता तत्त्वों का एक ऐसा गुण है, जो ऊर्जा को उसी प्रकार विकसित कर देता है, जैसे जलता कोयला राख में बदलते समय उष्मा को करता है। एक सर्वेक्षण के अनुसार सन् १९५६ तक सुपर बमों के परीक्षण-विस्फोट से वायुमंडल की स्ट्रेटोस्फीयर परत में स्ट्रांशियम पदार्थ की चालीस पौंड मात्रा थी। यह मात्रा अमेरिका, रूस और इंग्लैंड में किए गए परीक्षणों के कारण हुई थी। तब से आज तक परमाणु परीक्षणों की होड़ तो और भी तेज हुई है। वायुमंडल की विषाक्तता का अनुमान उपरोक्त आधार पर लगाया जा सकता है। यह स्ट्रांशियम पौधों के कैल्सियम को नष्ट करके उनका स्थान ग्रहण कर लेते हैं।

वैज्ञानिकों ने यह संभावना व्यक्त की कि वायुमंडल की सारी स्ट्रांशियम पृथ्वी के गर्भ तक पहुँच जाए, तो अधिकांश व्यक्तियों को कैंसर होने की संभावना होगी। आनुवंशिकी विशेषज्ञों का विचार है कि उक्त परिवर्तन की प्रक्रिया से मानव के आकार-प्रकार में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भारी परिवर्तन होगा। राष्ट्रीय अकादमी के वैज्ञानिकों ने एक विचारगोष्ठी में चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि परमाणु परीक्षणों का उत्साह चलता रहा, तो परमाणु विस्फोट से प्रभावित पौधे क्रिप्टन-८५ गैस की इतनी मात्रा निकाल देंगे, जो उत्तरी गोलार्द्ध के मध्य अक्षांश को पूर्णरूपेण सक्रिय बना दे, जिसका प्रभाव जीव-जंतुओं, वनस्पतियों के महाविनाश के रूप में परिलक्षित होगा।

अमेरिका की अणु-अनुसंधान संस्था के समीप ही एक फार्म में बहुत-सी भेड़ें पाली गईं थीं। आए दिन के प्रयोगों से उत्पन्न रेडियो-धूलि के फलस्वरूप उनमें से ६००० भेड़ें मर गईं। जब उसकी जाँच की गई, तो पता चला यह सब रेडियोधर्मी कणों के विषैले प्रभाव के कारण था। उत्तरी व दक्षिणी ध्रुवों में पाए जाने वाले पेंगुइन पक्षियों में भी यह कण पाए गए, तभी से वहाँ के वैज्ञानिकों की अणुधूलि के बारे में चिंता बढ़ी।

अणु-बम विस्फोट किए जाते हैं, तब उसमें से बम में प्रयुक्त विभिन्न विषैले तत्त्वों के धुएँ का बादल छा जाता है। यह धुआँ कुछ देर में वायुमंडल में घुल-मिल जाता है, पीछे धुएँ के विषैले परमाणु जमीन, वृक्ष-वनस्पति और विभिन्न जीव-जंतुओं के शरीरों में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों तरह से पहुँच जाते हैं, इन्हीं विषैले परमाणुओं को अणु-धूलि कहते हैं और आज सारा संसार इस अणु-धूलि के दुष्प्रभाव से इतना अधिक चिंतित है, जितना मशीनों के धुएँ, बढ़ती हुई जनसंख्या आदि के कारण भी नहीं।

संसार के सभी विचारशील लोगों और वैज्ञानिकों में भी मानव जाति के कल्याण की करुणा जाग्रत् हुई और निश्चित रूप से उन्होंने बताना प्रारंभ किया कि अणु-बमों का प्रयोग ही घातक नहीं, वरन् उनके परीक्षण भी कम विनाशक नहीं। यदि मानव जाति के अस्तित्व को बनाए रखना है, तो न केवल संसार में विज्ञान की विघातक प्रगति को रोका जाए, वरन् मानवता का पोषण करने वाले भावों, संस्थाओं और आयोजनों का तीव्रगति से प्रसार भी किया जाए। हमें इतने भर से ही संतुष्ट नहीं हो जाना चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अब तक जो विस्फोट हो चुके हैं, उनके दुष्प्रभाव से बचने का एहतियात भी बरतना आवश्यक है। सावधानी न रखी गई, तो उसका कुफल मानव जाति पर व्यापक महामारियों के प्रकोप, राजरोग जैसे तपेदिक, कैंसर, यकृत के रोग और स्नायविक दुर्बलता के रूप में भोगना पड़ेगा। आने वाली पीढ़ी इस दुष्प्रभाव के कारण कानी-कूबड़ी, बौनी और मानसिक दृष्टि से पूरी नहीं तो अर्द्ध-विक्षिप्त अवश्य होगी।

बम विस्फोट के कारण जो विषैले तत्त्वों का धुआँ उठता है, उसमें स्ट्रांशियम-६० वृक्ष-वनस्पतियों पर सबसे अधिक असर डालता है। एक बार के विस्फोट के बाद यह २७ वर्ष तक वायुमंडल में बना रहता है, जबकि आयोडीन-१३१ एक सप्ताह और दूसरे तत्त्व भी इससे कुछ ही दिन बाद घुल जाते हैं, पर यह मात्रा रहती पृथ्वी में ही है, इसमें संदेह नहीं। यह विषैला तत्त्व शाक-फल, अन्न, दूध आदि के द्वारा सीधे और पशुओं के शरीर से होकर भी हमारे अंदर पहुँच रहा है। छोटे बच्चों के पोषण के लिए आवश्यक तत्त्वों में कैल्शियम सबसे पहला है; यह कैल्शियम भी अधिकांश दूध और फलों से ही मिलता है। यों दूध शक्तिवर्द्धक खाद्य है, पर उसमें पहले भी स्ट्रांशियम पाया जाता है। वृक्ष-वनस्पतियों के माध्यम से पशुओं के दूध में और उस दूध के पीने से बच्चों के शरीर में स्ट्रांशियम की मात्रा बढ़ेगी, तो भावी पीढ़ी का क्या बनेगा ? इस चिंता से भारत के अणुशक्ति विभाग ने यह जानकारियाँ दीं, जिनका व्यवहार अणुसक्रियता के प्रभाव से अधिक से अधिक बचाने में सहायक हो।

यह प्रभाव दूध में ही नहीं हैं, प्रत्येक खाद्य में है। इसलिए वैज्ञानिकों के अनुसार प्रत्येक फल और साग को अच्छी तरह धोकर और उनका छिलका उतारकर ही खाना चाहिए। आलू में यह प्रभाव अधिकांश छिलके पर ही रहता है, इसलिए सब्जियों में आलू की मात्रा बढ़ाकर ली जाए, पर इसे अच्छी तरह धो लेना तथा छिलका उतारकर ग्रहण करना आवश्यक है। यदि यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्ट्रांशियम शरीर में चला जाता है, तो कैंसर जैसे भयंकर रोग हो जाने का खतरा बना रहेगा।

दूध को स्ट्रांशियम के प्रभाव से बचाने के लिए वैज्ञानिक एक यंत्र भी बना रहे हैं, पर फिलहाल के लिए उनकी यह चेतावनी नोट करने की है कि यदि बच्चों को अणुसक्रियता के दोष से बचाना है, तो माताएँ उन्हें ऊपरी दूध पिलाने की अपेक्षा अपने स्तनों का ही दूध पिलाना आरंभ कर दें। खुरदरे छिलके वाले फल जैसे अनन्नास, अमरूद, अंजीर पर यह धूलि अधिक जमा होती है, चिकने फलों पर कम। इसलिए खुरदरे फल कम मात्रा में लिए जाएँ, लेना ही हो तो छिलका अवश्य उतारा जाए।

संयुक्त राष्ट्र संघ की संरक्षकता में चाय पर जब इस रेडियोसक्रियता का अध्ययन किया गया, तो पता चला कि यह सबसे अधिक शीघ्र प्रभावित होने वाली पत्ती है। चाय स्ट्रांशियम के प्रभाव को शीघ्र ग्रहण कर लेती है। दुर्भाग्य से चाय भारत में सबसे अधिक उत्पन्न होती है और उसका प्रयोग भी दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है। चाय के प्रयोग को जितना बन पड़े, कम किया ही जाना चाहिए।

इस सब आहार संबंधी सावधानियों, संयम और भरपूर परिश्रम के द्वारा शरीर की जीवनशक्ति को स्थिर और शुद्ध बनाए रखा जा सकता है और रखना पड़ेगा, पर वातावरण के प्रभाव को किस तरह रोकना संभव होगा, यह प्रश्न जटिल और अधिक गंभीर है।

'आकाश बदल रहा है' शीर्षक से 'प्लेनट्रुथ' पत्रिका ने वैज्ञानिकों की चेतावनी इस तरह छापी है—"अणुसक्रियता बढ़ जाने से अगले दिनों में सारे संसार का तापमान २ डिग्री सेंटीग्रेड बढ़ जाएगा, उससे आज के बरफ से जमें ध्रुव प्रदेश पिघल पड़ेंगे। समुद्र ऊँचा हो जाएगा। बंदरगाह डूब जाएँगे और जल प्रलय-जैसी स्थिति पैदा हो जाएगी।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रथम परमाणु बम बनाने वाले डॉ० जॉन गॉफमैन का इस संबंध में विचार है कि जनता को परमाणु विकिरण से जितना खतरा है, उसका अनुमान ५० गुना कम लगाया जाता है। उन्होंने बताया है कि भावी पीढ़ियों को परमाणु विकिरण से आनुवंशिक खतरे अधिक हैं। जैसे-जैसे धरातल के नीचे किए जा रहे परमाणु विस्फोटों की संख्या बढ़ती जा रही है, यह खतरा और भी अधिक बढ़ रहा है। डॉ० गॉफमैन के अनुसार परमाणु विकिरण से बच्चे, बड़ों की अपेक्षा अधिक मात्रा में प्रभावित होते हैं। बचपन में ही इस विकिरण के शिकार बालकों को बड़े होकर कैंसर होने का खतरा ज्यादा रहता है।

यदि युद्ध न हो तो भी अणु ऊर्जा उत्पन्न करने में जो विकिरण उत्पन्न होता है तथा भट्ठियों की जो राख बचती है, दोनों ही खतरनाक हैं। वे धीरे-धीरे वायुमंडल में ऐसा विकिरण उत्पन्न करेंगी, जो वस्तुओं और प्राणियों को बुरी तरह प्रभावित करेगा। ऐसी दशा में खाद्य पदार्थों की उपयोगिता घटती और उनसे उत्पन्न रुग्णता क्रमशः बढ़ती ही रहेगी। अणु संस्थानों से प्रयोगोपरांत निकले हुए कचरे को कहाँ डाला जाए, यह एक विकट प्रश्न है। जलने के बाद भी उसमें भयानक रेडियेशन कायम रहता है और उसे जहाँ भी रखा जाए, वहीं संकट उत्पन्न करता है।*

अमेरिका के कोलंबिया विश्वविद्यालय की प्रयोगशाला द्वारा किए गए परीक्षणों से पता चला है कि, आज दुनिया के प्रत्येक व्यक्ति के शरीर में विकिरणकारी स्ट्रांशियम-६० पाया जाता है। अब धीरे-धीरे इसकी मात्रा बढ़ती जा रही है। जिस समय अणविक प्रायोगिक विस्फोट होता है, उस समय स्ट्रांशियम के सूक्ष्म कण ११ किलोमीटर ऊपर उछल जाते हैं, जो धीरे-धीरे जमीन पर गिरते हैं। भूमि से ये पेड़-पौधों, जानवरों तथा मनुष्यों में पहुँच जाते हैं। डॉक्टर जॉन लोरेस क्रुप के निर्देशन में किए गए

* बरमूडा फार्मूला

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परीक्षणों का जो निष्कर्ष निकला है, उसके अनुसार सन् १९४५ से पहले किसी भी व्यक्ति में स्ट्रांशियम ९० नहीं था, परंतु अब यह प्रत्येक व्यक्ति में पाया जाता है। अमेरिका के बच्चों में यह सबसे अधिक पाया जाता है। यदि युद्ध नहीं भी हो, तो भी केवल बमों के अनवरत परीक्षण प्रयास से ही स्ट्रांशियम ९० की मात्रा बढ़ती जाएगी, जिससे मानव जाति का विनाश हो जाएगा।

परीक्षणों के अनुसार—स्ट्रांशियम ९० हड्डियों को गलाता है तथा असाध्य बीमारियाँ उत्पन्न करता है। मानवशरीर में यह अधिकतर दूध के माध्यम से पहुँचता है। वैज्ञानिकों का कथन है कि यदि सन् २१०० तक परीक्षणों का यही क्रम बराबर चलता रहा, तो पूरे विश्व में प्रत्येक मानव के शरीर में स्ट्रांशियम की घातक मात्रा का पाँचवाँ भाग पहुँच जाएगा। वर्तमान स्थिति तो यही बताती है कि, विश्व में आणविक बिजलीघरों की संख्या तेजी से बढ़ती जा रही है। अकेले सं० रा० अमेरिका में ही अणु-बिजलीघर और अणु-भट्ठियों की संख्या लगभग एक हजार से भी ऊपर है। बिजली का उत्पादन वहाँ आणविक प्रक्रिया से होता है।

अणु-बिजलीघरों ने पेट्रोलियम और कोयले जैसे खनिज ईंधनों की कमी की पूर्ति करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। जहाँ विश्व को इस साधन का लाभ, ऊर्जा विकल्प के रूप में मिला है, वहीं एक समस्या भी विभीषिका बनकर आ खड़ी है, जिससे समस्त मानव जाति के अस्तित्व को ही खतरा पैदा हो गया है। रेडियोधर्मी कचरे को भंडारित रखना खतरनाक होने के साथ-साथ बहुत खर्चीला भी है। अमेरिकी बिजली कंपनियों को इस कचरे के रख-रखाव में इतना खर्च करना पड़ रहा है कि उनका दिवाला निकलने वाला है। आणविक विद्युत् उत्पादन के क्षेत्र में अमेरिका सबसे आगे है और कचरे की समस्या भी उसी के सामने प्रमुख रूप से है। वह इस दूषित पदार्थ को तृतीय विश्व के निर्धन देशों की जमीन के अंदर या सीलबंद डिब्बों में किसी गहरे समुद्र में मीलों नीचे दफनाने का प्रयास कर रहा है। यदि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अणु-परमाणु विखंडन किसी भी प्रयोजन या प्रयोग हेतु हो, किए जाने पर घातक विकिरणों का खतरा होता ही है, तो अणु विखंडन की शक्ति के सृजनात्मक उपभोग की ओर इशारा करना या उनकी वकालत करना कहाँ तक युक्तियुक्त होगा ?

अमेरिका प्रशांत महासागर में बेक और पामीरा नामक महाद्वीपों में रेडियोधर्मी कचरे को किसी तरह रफा-दफा करने की योजना बना रहा है। इन कचरा-कब्रों का इस्तेमाल अमेरिका, जापान, दक्षिण कोरिया और ताइवान के नाभिकीय रिएक्टरों से बचे कचरे को गाड़ने के लिए किया जाएगा। इस योजना के क्रियान्वयन पर जापानी नागरिकों और हिरोशिमावासियों ने गहरा विरोध प्रकट किया है। योरोप के देशों एवं अमेरिका में भी, इसके खिलाफ आंदोलन छिड़ गया है। नाभिकीय कचरे को सीलबंद डिब्बों तथा उन डिब्बों को कंक्रीट के खोल में बंद कर गहरे समुद्र में उतार देना भी निरापद नहीं है। रेडियोधर्मिता वहाँ से फूटकर—मछलियों और समुद्री जल में समा जाएगी और उस माध्यम से मानव शरीर तक पहुँच जाएगी।

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की गवर्नमेंट का अनुमान है कि केवल अमेरिका में प्रतिवर्ष एक लाख घन फुट से अधिक उच्च व निम्न स्तर का 'न्यूक्लियर वेस्ट' निकलता है, जो 'न्यूक्लियर पावर-स्टेशन' न्यूक्लियर वैपन परीक्षण एवं चिकित्सकीय अनुसंधानों के कारण 'बाई-प्रोडक्ट' के रूप में बनता है और अत्यधिक विषैला भी होता है।

अब तक जो आणविक प्रयोग-परीक्षण चल रहे थे, उनके 'न्यूक्लियर वेस्ट' को ऐसे स्थानों पर डाल दिया जाता था, जहाँ से विकिरण का प्रभाव मानवीय समाज एवं स्वास्थ्य को नुकसान न पहुँचाए। वे स्थान अब भर चुके हैं और साथ ही कचरे की मात्रा प्रतिवर्ष अधिकाधिक बढ़ती जा रही है और कुछ सालों में ही इसकी मात्रा प्रतिवर्ष साढ़े छह लाख घनफुट हो जाने की संभावना है, इसलिए 'नासा' ने बोइंग कंपनी से कहा है कि, इस 'न्यूक्लियर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वेस्ट' को अपने सूर्यमंडल में या किसी अन्य सूर्यमंडल अथवा अनंत दूरी की किसी नीहारिका में छोड़ देने के लिए अध्ययन और अनुसंधान किया जाए।

☆ पर्यावरण के लिए नया खतरा—विषाणु बम

निस्संदेह इसे बुद्धि-कौशल का चमत्कार ही कहना चाहिए कि मनुष्य अपने आदिम पूर्वजों की तुलना में कई गुना बेहतर स्थिति में पहुँच सका है और विज्ञान के सहारे नित्य नवीन जीवन-साधनों का आविष्कार करता जा रहा है। इन चमत्कारी उपलब्धियों को देखते हुए, यह मानने में संकोच नहीं किया जा सकता कि मनुष्य परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ संतान है, किंतु इस श्रेष्ठता पर तब प्रश्न चिन्ह लग जाता है, जब मानवीय बुद्धि अपने कौशल का उपयोग विनाशकारी प्रयोजनों में करती दिखाई देती है। इस विनाशकारी उपयोग को चित्रित करते हुए एक विद्वान् ने लिखा है कि "आदिकाल में कभी आदमी ने पहली बार एक पत्थर उठाकर अपने साथी पर वार किया और उसका सर फूट गया। शस्त्र की भाँति प्रयुक्त हुआ वही पत्थर युगों की यात्रा करते हुए सन् १९४५ में परमाणु बम बन गया है और अब उसका संशोधित संस्करण विषाणु बमों के रूप में सामने आया है।"

विषाणु ऐसे छोटे कीटाणु होते हैं, जिन्हें सामान्य सूक्ष्मदर्शी से नहीं देखा जा सकता। इनकी मारक क्षमता अद्‌भुत है। इनसे फैलने वाली बीमारियाँ पोलियो, ट्रेकोमा, निमोनिया, कैंसर, रैबीज, कामनकोल्ड, इनकेसेफ्लैटिस मनुष्य को घुट-घुटकर मरने को बाध्य करती हैं। ऐसे ही विषाणुओं से विषाणु बम का निर्माण होता है। जहाँ भी ये बम छोड़े जाएँगे उस वातावरण में विषाणु फैल जाएँगे तथा उपर्युक्त बीमारियों को जन्म देंगे। उस वातावरण के संपर्क में आने वाले, इन बीमारियों से ग्रस्त हो जाएँगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विषाणु बम व्यय की दृष्टि से कुछ सस्ते हैं और केवल जीवित व्यक्तियों और प्राणियों को ही अपना ग्रास बनाते हैं। ऐसे विषाणु बमों का भी निर्माण हो चुका है, जो केवल मनुष्यों को मारें और अन्य प्राणियों को जीवित छोड़ दें। अब तक जो विषाणु बम तैयार हुए हैं, उनके विस्फोट से होने वाली कुछ अन्य बीमारियाँ इस प्रकार हैं—

'क्लासट्रीडियम वोडुलिनम' नामक विषाणु ऐसा ही है, जिसको विषाणु बम द्वारा अभीष्ट क्षेत्र में प्रसारित कर दिया जाता है। यह खाद्यान्नों को विषाक्त बना देता है। इसकी विषाक्तता सर्वाधिक विषाक्त पदार्थ फ्लोरोसोडियम ऐसीटेट से एक अरब पचास गुना तथा पोटेशियम सायनाइड से तीन अरब गुना अधिक है। पोटेशियम सायनाइड के विषय में इतना ही जानना पर्याप्त होगा कि शुद्ध अवस्था में इसका छोटे से छोटा अणु भी जीभ पर रखते ही तत्काल मृत्यु हो जाती है। जीभ पर रखने वाले को इसका स्वाद बता पाने का भी, समय नहीं मिल पाता। इस विष से तीन अरब गुना क्लासट्रीडियम वोडुलिनम कितना भयंकर होगा, इसका अनुमान लगा सकना भी कठिन है। ऐसा अनुमान है कि वोडुलिनम विष की एक औंस मात्रा बीस करोड़ व्यक्तियों को मारने में सक्षम है। इसके अतिरिक्त मेलियोडेसिस, सीटाकासिस, ऑक्सीडियो-माइकोसिस नामक बीमारियों को फैलाने वाले विषाणु बम भी आविष्कृत कर लिए गए हैं। इस बम की विनाशलीला भी कम घातक नहीं है। जहाँ कहीं भी इनका विस्फोट किया जाएगा, वहाँ के निवासी तुरंत १०७, १०८ डिग्री तापक्रम वाले बुखार में जलने लगेंगे। उनमें से कम ही जीवित बचेंगे, अधिकांश की जीवन लीला समाप्त हो जाएगी।

रासायनिक शस्त्रों के आविष्कार में एक कड़ी और जुड़ी है—विषैली गैसों की। अब से कुछ वर्ष पूर्व तक 'फासजीन' और 'मस्टर्ड' गैस सबसे विषैली मानी जाती थी। लेकिन हाल ही में मस्टर्ड गैस से लगभग ७५ गुना अधिक विषैली गैस वी० एक्स०

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गैस खोज ली गई है। इस गैस के हल्के से झोंके ने अमेरिका के एक चरागाह में चर रही पाँच हजार भेड़ों को क्षण भर में नष्ट कर दिया। नाइट्रोमस्टर्ड गैस का विस्फोट करने पर उस क्षेत्र के निवासियों की तुरंत मृत्यु तो नहीं होती, परंतु मरने से पूर्व तक असह्य यंत्रणा होती है। इस गैस के फैलते ही उस क्षेत्र सहित आसपास के मीलों क्षेत्र में रहने वाले मनुष्यों की आखें तथा छाती में असह्य जलन होने लगती है। आँखें तथा फेफड़ों में दर्दनाक फफोले पड़ जाते हैं तथा घंटों तक उनके कारण होने वाले दर्द से तड़पते हुए लोग चल बसते हैं।

सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि इन गैसों का तब तक पता नहीं चलता है, जब तक शरीर पर उनकी प्रतिक्रिया न दिखाई पड़ने लगे। फलस्वरूप उनसे बचाव के लिए पूर्व कोई तैयारी नहीं की जा सकती।

घातक रासायनिक पदार्थों की शृंखला में आर्गेनोफास्फोरस श्रेणी के 'वाइनरी कंपाउंड्स' जैसे आविष्कार की एक और कड़ी जुड़ी है, जिसे सामान्यतः 'नर्व गैस' कहते हैं। अब तक विनिर्मित समस्त विषैले रसायनों में यह सर्वाधिक कष्ट देने वाली गैस है। यह स्नायु संस्थान को सेकंड से भी कम समय में संज्ञाशून्य कर देती है। आर्गेनो फास्फोरस श्रेणी में अनेक प्रकार की जहरीली गैसें आविष्कृत हो चुकी हैं। ये गैसें नाक अथवा त्वचा के रोमकूपों द्वारा अवशोषित करली जाती हैं और सेकंड के अल्पांश में 'नर्व सिस्टम' को लड़खड़ा देती हैं। स्नायु संस्थान जिस एंजाइम के माध्यम से कार्य करता है, उसे ये गैसें निष्क्रिय बना देती हैं। इस गैस की एंजाइम से क्रिया होने पर 'एसीटिल कोलिन' नामक जैविक पदार्थ एकत्रित होने लगता है, जिसके कारण फेफड़ों में श्लेष्मा भरने लगता है और साँस लेना कठिन हो जाता है। शरीर में ऐंठन होती है और कुछ ही सेकंड बाद दम तोड़ देता है।

रूस ने इससे भी अधिक घातक सोमैन नामक रसायन तैयार किया है, जो अधिक समय तक सक्रिय रहता और अपना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रभाव व्यापक क्षेत्र तक दिखाता है। उसे वी० आर० ५५ नामक युद्ध सामग्री के नाम से जाना जाता है। अनुमान है कि सन् १९५३ से १९५७ के बीच अमेरिका ने ५०००० टन सारिन और १९६१ से १९६७ के बीच ५००० टन वी० एक्स नामक विषैले रसायनों का निर्माण किया था। रूस ने इससे भी अधिक परिमाण में सोमैन नामक रसायन का उत्पादन उस अवधि में किया था। अब तक तो उनकी मात्रा कई गुनी अधिक बढ़ चुकी होगी।

स्टेट्समैन २७ नवंबर १९७९ अंक में प्रकाशित एक विवरण के अनुसार, अमेरिकी सेना ने ७,८०,००० डालर की एक ऐसी योजना बनाई थी, जिसके अंतर्गत और भी अधिक मारक रसायनों का निर्माण किया जाना था। इसका नाम तो अभी अविज्ञात है, किंतु इसकी मारक क्षमता का एक दर्दनाक प्रयोग विगत दिनों अमेरिका द्वारा किया गया। होक्सवर्ग की जेल में बंदी बनाए गए काले व्यक्तियों पर रासायनिक गैस की ०.१ औंस से भी कम मात्रा छोड़ी गई। उनमें से ६० प्रतिशत तो तत्काल शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से अपंग हो गए। परीक्षणकर्ताओं ने घोषित किया कि यह अभिशाप जीवनपर्यंत के लिए उनके साथ जुड़ गया है।

इस आविष्कार से यह संभावना बन चली है कि अगले दिनों विपक्षियों को मारना आवश्यक नहीं होगा। उनके शरीर और मस्तिष्क को सदा के लिए अक्षम बना देना पर्याप्त होगा। इस विभीषिका की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए एक विचारक का कहना है कि "यदि इनका प्रयोग युद्धों में किया गया, तो सभी सैनिकों के साथ अपंगता का शाप सदा के लिए जुड़ जाएगा। रसायन से फैलने वाली विषाक्तता से जीव-जंतुओं का अस्तित्व भी सुरक्षित नहीं रहेगा।

जेनेटिक इंजीनियरिंग के उत्साहवर्धक प्रयोगों की चर्चा इन दिनों सर्वत्र है। इसके घातक पक्ष ने मानवीय अस्तित्व को समाप्त करने की एक नई संभावना और भी जोड़ दी है। अमेरिका से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'नेचर' में डॉ० जॉन कार्बन तथा बैरी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

टैक्सरिन नामक सूक्ष्म जैविकी विशेषज्ञ लिखते हैं कि "इस यांत्रिकी प्रक्रिया द्वारा मानव विनाश की संभावना भी प्रशस्त की जा सकती है। व्याधिग्रस्त जीवन से प्रत्यारोपित जीवाणुओं को किसी भी क्षेत्र अथवा राष्ट्र के विरुद्ध वातावरण में छोड़कर महामारी फैलाई जा सकती है, तब प्रभावित क्षेत्र के मनुष्य, जीव-जंतु घुट-घुटकर मर जाएँगे और वह क्षेत्र इस योग्य नहीं रहेगा कि मनुष्य निवास कर सके। कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि अमेजान की घाटी में पाए जाने वाले विचित्र जीवाणु और विषाणु किसी अविज्ञात प्रयोग और परीक्षण के ही परिणाम हैं।

मनुष्य के जीवन-व्यापार में सर्वाधिक सहायक मौसम में भी हेरफेर की बात सोची जा रही है, ताकि अल्प समय में प्रकृति का यह शस्त्र अधिक व्यापक और विनाशक दृश्य प्रस्तुत कर सके। कभी कृत्रिम वर्षा से सूखाग्रस्त क्षेत्र में राहत पहुँचाने की बात सोची जा रही थी, पर यह प्रयास अब शिथिल हो गया। अब तो जलवायु पर नियंत्रण करके शत्रु पक्ष को क्षति पहुँचाने की विधि खोजी जा रही है। बादलों में पानी की लघु आकार की असंख्य बूँदें होती हैं। उन पर यदि सिल्वर आयोडाइड अथवा शुष्क कार्बन डाइऑक्साइड छिड़क दी जाए, तो वे बरफ के कणों में बदल जाती हैं। इस विधि का प्रयोग करके, किसी भी स्थान में भारी वर्षा एवं बाढ़ की स्थिति लाई जा सकती है। रसायनों के छिड़काव की प्रक्रिया वायुयान अथवा राकेट द्वारा संपन्न की जा सकती है। एक राष्ट्र दूसरे के विरुद्ध इस विधि द्वारा विप्लव उत्पन्न कर सकता है।

वातावरण को असंतुलित करने, विषाक्त बनाने के कृत्रिम प्रयोग कई राष्ट्रों द्वारा किए जा रहे हैं। विज्ञानवेत्ता जानते हैं कि पृथ्वी के वातावरण के 'आयनोस्फीयर' में ओजोन परत रक्षा कवच का काम करती है। सूर्य से तथा अंतरिक्ष के अन्य ग्रहों से आने वाली अल्ट्रावायलेट तथा अन्य अनेकों ऐसी किरणें हैं, जो पृथ्वी के वातावरण तथा संबद्ध जीव-जंतुओं पर घातक प्रभाव डालती हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इनको रोकने में ओजोन परत की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। ओजोन परत में ओजोन की मात्रा कम हो जाने पर अंतरिक्ष से आने वाली घातक किरणें पृथ्वी के वातावरण में पहुँच जाती तथा अपना हानिकारक प्रभाव दिखाती हैं। विगत दो दशकों में हुए युद्धों में कई प्रगतिशील कहे जाने वाले देशों ने प्रतिपक्षी देशों पर इस प्रकार के प्रयोग भी किए हैं। पर्यवेक्षकों का कहना है कि वियतनाम का वायुमंडल इतना विषाक्त हो चुका है कि वहाँ रहकर निरोग नहीं रहा जा सकता। विशेषज्ञों ने इसका कारण ओजोन की मात्रा का कम होना बताया है। एक गुप्त रिपोर्ट के अनुसार उक्त क्षेत्र में ओजोन परत को नष्ट करने के लिए प्रयोग किए गए हैं। नाइट्रोजन ऑक्साइड, हाइड्रोपराक्साइड जैसे यौगिकों के छिड़काव के प्रमाण भी उस स्थान पर पाए गए हैं। सन् १६७१ में प्रकाशित पैंटागन पेपर्स की रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका ने वियतनाम के विरुद्ध इस प्रकार का प्रयोग किया था। दूसरा उल्लेख अमेरिकी सिनेट की १६ मई १६७४ की रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका ने हिंदचीन के क्षेत्र में व्यापक स्तर पर सिल्वर आयोडाइड के छिड़काव का प्रयोग किया था। जिसके फलस्वरूप भीषण वर्षा हुई और ओले पड़े।

अपनी ही जाति को विनष्ट करने के लिए सन्नद्ध खड़ी मानवीय बुद्धि को इसके बाद भी क्या श्रेष्ठ और गौरवास्पद कहा जा सकता है ? निस्संदेह वैज्ञानिक उपकरण जो मनुष्य की प्रगति में योगदान देने आए हैं, मानवीय कौशल के परिणाम हैं। इसके लिए मनुष्य को बधाई दी जानी चाहिए, किंतु इसके साथ ही एक प्रश्न उठ खड़ा होता है कि मनुष्य ने अपने अस्तित्व के लिए जो संकट खड़ा कर लिया है, उसे क्या कहा जाए ?

निश्चय ही इसे मानवीय दुर्बुद्धि कहना चाहिए, इसी ने आज की सर्वनाशी विभीषिका उत्पन्न की है। उसका समाधान एक ही प्रकार संभव है कि अपनी खोदी खाई स्वयं ही पाटी जाए। संकीर्ण स्वार्थपरता के कुचक्र में फँसकर मनुष्य ने मरण और मारण के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनुष्ठान को अपनाने का उपक्रम किया है। उदारता और दूरदर्शिता का दृष्टिकोण अपनाकर ही उस रास्ते पर चला जा सकता है, जिसमें छुटपुट मतभेदों को न्याय और सौजन्य का अवलंबन लेकर निपटाया जा सके और युद्ध के स्थान पर सहयोग का आश्रय लेकर वर्तमान साधनों से ही सुख-शांति का जीवन जिया जा सके। सम्मिलित प्रयासों का सिलसिला विज्ञान के क्षेत्र में विधेयात्मक रूप में ही अपनाया जा सके तो ऊर्जा भट्ठी से लेकर अनेकानेक शांतिपूर्वक प्रयासों में सुनियोजित हो सकता है।

सभी बुद्धिजीवियों को मिल-बैठकर अब यह विचार करना ही होगा कि मानवजाति का अंतिम लक्ष्य क्या है; विकास अथवा विनाश। एकाकी रूप में महाद्वीप या राष्ट्रीय स्तर पर समृद्ध होने और शेष सारे संसार को नष्ट कर देने की कल्पना शेखचिल्ली के समान ही कही जाएगी। यह मानकर चलना ही होगा कि हम इस सुविधा पर अकेले नहीं, 'सब एक साथ हैं, मरेंगे तो सब एक साथ, जिएँगे तो भी एक ही साथ'। आवागमन की द्रुत सुविधाओं ने आज विश्व को 'जेट एज' में पहुँचा दिया है। यहाँ की व्याधि कुछ ही पलों में हजारों मील दूर समुद्र पार भी पहुँच सकती है। ऐसे में कैसे यह कल्पना की जाए कि हम उस विभीषिका से स्वयं को बचाए रखेंगे। इस चिंतन को थोड़ा परिष्कृत किया जाए एवं आदिम मानव के स्तर पर नहीं, विकसित मानव के स्तर पर विश्व सभ्यता के अभ्युदय की चर्चा ही नहीं, क्रियान्वयन भी हो; तभी महाप्रलय की आसन्न विभीषिका से मानवता को बचाया जा सकेगा।

☆ कितना खतरनाक है—ध्वंस का प्रयोग ?

लगता है मनुष्य को सबसे अधिक द्वेष, घृणा एवं बैर अपने ही सजातीयों से है, तभी तो वह परमाणु शक्ति का उपयोग सजातीय सृजनात्मक कार्यों में न करके, एक से बढ़कर एक भयानक यंत्रों के निर्माण में कर रहा है। परमाणु बमों के प्रयोग से आक्रमणकारी राष्ट्र को भी कुछ हाथ नहीं लगता। यह प्राणियों को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तो मारता ही है, संपत्ति, मकान आदि को भी नष्ट कर देता है। यह बात लंबे समय से वैज्ञानिकों के मस्तिष्क में घूम रही थी कि इस प्रकार के बमों का निर्माण किया जाना चाहिए, जो मनुष्य को तो मारे किंतु संपत्ति को क्षति न पहुँचाए। न्यूट्रॉन बमों के निर्माण से यह प्रयास भी सफल रहा। इस प्रकार के बम मनुष्य को तो मारेंगे, किंतु जमीन, मकान, यंत्र आदि को किसी प्रकार की क्षति नहीं पहुँचेगी। इसके विस्फोट से ताप-तरंगें कम निकलती हैं। जिससे मकानों एवं वस्तुओं पर हानिकारक प्रभाव नहीं पड़ता, किंतु न्यूट्रॉनों के अधिक संख्या में तेजी से निकलने से ऊर्जा का अस्सी प्रतिशत भाग निकलकर प्राणियों को मार डालता है।

न्यूट्रॉन बम विस्फोट के बाद किस प्रकार मनुष्य को तड़प-तड़पकर मरने के लिए बाध्य करता है, उसे समझने के लिए इसके प्रभाव को तीन क्षेत्रों में बाँटा जा सकता है। एक क्षेत्र तो वह है, जहाँ विस्फोट किया जाता है, इसके अंतर्गत रहने वाले सारे जीव-जंतु तत्काल मर जाएँगे। दूसरे इसके निकटवर्ती क्षेत्रों के लोग कुछ घंटों से लेकर कुछ दिनों में मृत्यु की गोद में पहुँच जाएँगे, तीसरा क्षेत्र विकिरण का है, इसमें विकिरण के प्रभावों से एक-दो वर्षों के अंदर कैंसर, टी० बी० जैसी बीमारियों से ७० प्रतिशत व्यक्तियों की मृत्यु हो जाएगी। जो बचेंगे, उनमें अधिकांश विक्षिप्त, विकलांग स्थिति में मौत के बाकी दिन किसी प्रकार पूरे करेंगे।

यदि सृजनात्मक दिशा में इस महाशक्ति का उपयोग नहीं किया गया, तो विघातक परिणाम सामने प्रस्तुत होंगे। सारी मानव सभ्यता विनाश के कगार पर खड़ी है। पता नहीं कि कब कोई सिरफिरा राष्ट्र इसका प्रयोग करने पर उतारू हो जाए और कुछ ही मिनटों में सारे विश्व में महाप्रलय का दृश्य उपस्थित कर दे।

ध्वंस का प्रयोग कितना खतरनाक होता है, यह इतिहास के पन्ने उलटने पर पता चलता है। छोटे-छोटे व्यक्तियों ने रक्त की नदियाँ बहा दीं। जयसिंह के विश्वासघात ने राष्ट्र को सदियों तक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुलामी की जंजीर पहनाए रखीं। एकाकी सिकंदर ने शक्ति एवं संपत्ति के संचय के लिए कितना रक्तपात किया ? हिटलर ने द्वितीय विश्व युद्ध खड़ा करके लाखों व्यक्तियों को मृत्यु के मुँह में ढकेल दिया। रावण, कंस के अत्याचारों ने महाविनाश जैसा दृश्य प्रस्तुत किया। जहाँ इन व्यक्तियों के ध्वंसात्मक कार्यों ने इतनी अधिक क्षति पहुँचाई, वहीं छोटे-छोटे व्यक्तियों के सृजनात्मक कार्यों ने मानवीय संस्कृति को समुन्नत बनाने में कितना योगदान दिया, इसे सभी जानते हैं।

☆ क्या मानवी प्रतिभा ध्वंस में ही लगनी चाहिए ?

मनुष्य को परमात्मा ने अपना श्रेष्ठ प्रतिनिधि बनाकर इस सृष्टि पर भेजा है, स्वाभाविक ही है कि उसे अनेकानेक विभूतियों और शक्तियों के अनुदान दिए। यह मनुष्य के ऊपर निर्भर है कि, वह अपनी शक्ति का सृजनात्मक उपयोग करता है कि विध्वंस के लिए।

दुर्भाग्य से इन दिनों मानवीय प्रतिभा सृजन की अपेक्षा विध्वंस के उपाय रचने में ही अधिक संलग्न है। उदाहरण के लिए युद्धों को ही लें। युद्ध और महायुद्धों में कितने लोग अकाल मृत्यु के गाल में जा समाते हैं और कितनी संपत्ति का विनाश होता है, यह मुद्दतों से देखा और सुना जाता रहा है। जिन नगरों, बाँधों और पुलों को अगणित मनुष्यों ने अपने स्वेद-सरोवर से बनाया, जिनके निर्माण में प्रचुर साधन-उपादान झोंके गए थे, जो जनसाधारण की आशा और आकांक्षाओं के केंद्र थे और जिनके बारे में समझा जाता था कि उनकी छाया में अनेक व्यक्ति चिरकाल तक सुखद आश्रय प्राप्त करते हुए, चैन के दिन गुजार सकेंगे, पर वह सारी आशा उस समय धूमिल हो गई या हो जाती है जब युद्ध हुए अथवा होते हैं। एक-एक टोकरी बारूद के कचरे से बनाए गए बम निर्दिष्ट संस्थानों पर गिरते ही देखते-देखते उसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धूलिसात् ही कर देते हैं और असंख्य मनुष्य काल-कवलित हो जाते हैं।

युद्धों से होने वाले विनाश का केवल इतने मात्र से अनुमान नहीं लगाया जा सकता। इन दिनों युद्ध में अपना पक्ष अधिकाधिक प्रबल सिद्ध करने के लिए विभिन्न देशों में जो उपाय किए जा रहे हैं, उन्हें देखकर लगता है कि मनुष्य अपना आत्मघात करने के लिए जैसे चौकन्ना बैठा है। युद्ध अभ्यास में इस समय पूरे संसार में करीब दो करोड़ आदमी लगे हैं। इनका एक ही काम है, अस्त्र-शस्त्रों के चलाने, नये हथियार बनाने, मनुष्यों की हत्या और संपत्ति को नष्ट करने के नये-नये उपाय रचना। यही इनका कला-कौशल है। इनके व्यक्तित्व की सारी विशेषताएँ जैसे इसी प्रयोजन के लिए समर्पित हैं। इसके अतिरिक्त कोई सात करोड़ व्यक्ति शस्त्रास्त्रों के निर्माण और सेना संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने में लगे हुए हैं। वे मूर्द्धन्य मस्तिष्क इन लोगों से अलग हैं, जो अपने बुद्धि-कौशल से ऐसी शोधें करने, ऐसी विधियाँ निर्मित करने में लगे हुए हैं, जिनकी सहायता से अधिकाधिक विनाश संभव हो सके। धन-जन की अधिकाधिक हानि के लिए, शक्तिशाली, प्रभावपूर्ण और सस्ते उपाय ढूँढ़ निकालना ही, उनकी प्रतिभा की सफलता और सार्थकता समझी जाती है।

आइए देखें, इन दिनों युद्ध में किस प्रकार के विनाशकारी उपाय रचे जा रहे हैं। इन दिनों जीवाणु युद्ध, मौसम युद्ध जैसे उपाय तो खोज ही लिए गए हैं। इन उपायों के द्वारा किसी भी देश को बिना प्रकट युद्ध किये हानि पहुँचाई जा सकती है। युद्ध के ये तरीके जब प्रयोग में लाए जाएँ, तो पता ही नहीं चल पाएगा कि, कौन-सा देश यह सब कर रहा है ? प्रथम तो यही निश्चय नहीं हो पाता कि इन प्राकृतिक विपदाओं के पीछे, किसी देश का हाथ है अथवा ये अपने स्वाभाविक क्रम से उत्पन्न हुई हैं ? जीवाणु युद्ध और मौसम युद्ध के अलावा समुद्र की जलधाराओं को प्रभावित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करके भी प्रतिपक्षी देश को हानि पहुँचाने के उपाय खोज लिए गए हैं।

पृथ्वी के दो तिहाई भाग में फैले हुए समुद्र में विभिन्न तापक्रम की कई जलधाराएँ प्रवाहित होती हैं। मोटे तौर पर इन्हें ठंडी और गर्म जलधाराओं के रूप में ही जाना जाता है। इन धाराओं के कारण समुद्र के तापक्रम पर तथा उससे आसपास के भू-भागों के मौसम पर प्रभाव पड़ता है। कारण कि सागर के तापमान का प्रभाव वायु के दबाव और वेग पर, मौसम में नमी पर और बादलों के बनने पर भी पड़ता है। ऐसे स्थानों पर जहाँ बरफ की अधिकता है, गर्म धाराओं को प्रवाहित कर वहाँ बरफ पिघलाया जा सकता है और उसके द्वारा संबंधित क्षेत्रों में जलप्लावन की स्थिति बनाई जा सकती है। हिमखंडों को पिघलाकर, समुद्र तल में अंतर पैदा कर, तटवर्ती क्षेत्रों को पानी में डुबोया जा सकता है।

वायुमंडल की संरचना में साधारण-सा परिवर्तन कर उस क्षेत्र के निवासियों के लिए जीवन संकट उत्पन्न करने के उपाय भी खोज लिए गए हैं। उदाहरण के लिए वायुमंडल में यदि कार्बन डाइ-ऑक्साइड की मात्रा काफी ज्यादा बढ़ा दी जाए, तो उस क्षेत्र के निवासियों का बचना लगभग असंभव ही हो जाए। हालांकि औद्योगीकरण के कारण शहरों और महानगरों में कारखानों की चिमनियों और रेल-मोटरों से निकलने वाले धुएँ के कारण वहाँ के वायुमंडल में काफी मात्रा में कार्बन डाइ-ऑक्साइड गैस घुल गई है। इस कारण उत्पन्न होने वाले वायु-प्रदूषण की चर्चा आमतौर पर कही, सुनी और लिखी जाती है। वायु प्रदूषण के कारण होने वाली जन स्वास्थ्य की हानि से थोड़े-बहुत प्रायः सभी लोग परिचिंत हैं। लेकिन युद्ध विज्ञानियों ने ऐसे उपाय खोज लिए हैं, जिनके कारण वायुमंडल में कार्बन डाइ-ऑक्साइड अत्यधिक मात्रा में बढ़ाई जा सके।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसी प्रकार प्रतिपक्षी देशों में, चुंबकीय असंतुलन पैदा करके, अयन-मंडल की ओजोन परतों में छेद करके, सूर्य की रेडियोधर्मी, पराबैंगनी विकिरण पृथ्वी के विभिन्न क्षेत्रों में मनचाहे केंद्रों पर केंद्रित की जा सकती है। इस प्रकार की विधियाँ खोजकर युद्ध विज्ञानियों ने किसी भी क्षेत्र में बिना धूम-धड़ाका किए जन-जीवन का नामोनिशान मिटा देने के सरंजाम जुटा लिए हैं।

कृत्रिम वर्षा के लिए विकसित की गई वैज्ञानिक विधियों का भी युद्धप्रयोजनों के लिए उपयोग करने की संभावनाएँ हैं। बादलों में बरफ का अथवा सिलवर आयोडाइड का छिड़काव करके किसी दुश्मन देश की ओर उड़ने वाले बादलों को अपने देश की सीमा में अथवा मित्र देशों में अथवा उसी देश की सीमा पर रोककर बरसात कराई जा सकती है और शत्रु राष्ट्र में सूखे की स्थिति उत्पन्न की जा सकती है। इतना ही नहीं, दूसरे देश के क्षेत्रों में भूकंप लाने व विनाशकारी समुद्री तूफान पैदा करने के वैज्ञानिक तरीके खोज लिए गए हैं।

कृत्रिम भूकंप लाने के कई सफल प्रयोग पिछले दिनों रूस और अमेरिका के युद्ध विज्ञानियों ने किए। सर्वविदित है कि अपनी यह पृथ्वी आरंभ में सूर्य की तरह ही आग की एक जलती हुई पिंड थी। धीरे-धीरे यह ठंडी होती गई और इस पर जीवन का अवतरण तथा अस्तित्व संभव हो सका। चूँकि पृथ्वी धीरे-धीरे तप्त पिंड से ठंडी होती गई, इसलिए उसकी कई परतें बनीं। पृथ्वी की ऊपर वाली परत को 'भूकवच' कहते हैं। इसमें मिट्टी, पत्थर, कोयला, धातु आदि चीजें हैं। धरती की यह ऊपरी परत केवल ४० मील मोटी है। इस परत के नीचे तरल परत है। इसका नाम भूरस है। इस भूरस के ऊपर धरती तैरती रहती है। धरती की ऊपरी परत का दबाव घटने-बढ़ने के कारण जब इस तरल परत में कोई खलल पैदा होता है, तब भूकंप आते हैं।

वैज्ञानिकों ने इस तरल-परत से भी नीचे वाली परत जिसका नाम शिलावरण है और जो ७०० मील मोटी है, को प्रभावित करने के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उपाय खोज लिए हैं। नियंत्रित भूमिगत परमाणु परीक्षणों द्वारा भूकवच के नीचे वाली तरल परत को प्रभावित कर कृत्रिम भूकंप आसानी से पैदा किए जा सकते हैं। इसी प्रकार नियंत्रित परमाणु विस्फोटों से भी, बड़ी-बड़ी समुद्री लहरें पैदा की जा सकती हैं और तटीय क्षेत्रों के लिए विनाशकारी जल-प्रलय पैदा किया जा सकता है। इस प्रकार की समुद्री लहरें उत्पन्न करने के प्रयोग द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान ही किए जाने लगे थे। उस समय योजना बेहद खर्चीली होने के कारण यह विचार त्याग दिया गया, किंतु अब इस योजना पर अन्वेषण और शोधों द्वारा कृत्रिम भूकंप तथा समुद्री लहरें पैदा करना बेहद आसान और बहुत सस्ता हो गया है।

मानवी प्रतिभा और पुरुषार्थ के ध्वंस में लगने की तस्वीर का यह एक पक्ष है, जो आँखों से दिखाई देता है और इसके प्रत्यक्ष परिणाम भी देखे जा सकते हैं। किंतु स्थिति के और भी पहलू हैं, जिसमें प्रत्यक्ष परिणाम भले ही न दिखाई दें, पर वह अपनी बिभीषिका के संहारी परिणाम तो प्रस्तुत करती ही रहती है। उदाहरण के लिए नशा को ही लें। नशेबाजी और मादक पदार्थों के उत्पादन, खपत तथा सेवन में भी उतनी ही जनशक्ति और धनशक्ति लगी हुई है, जितनी कि युद्ध उपकरणों के उत्पादन, विकास और अभ्यास में। नशे से मनुष्य की औसत जीवनी शक्ति के साथ औसत आयु भी अल्प हुई है।

युद्ध के समान ही नशेबाजी भी मनुष्य की आयु और स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। संभवतः दुनिया की आधी आबादी अनेक तरह के नशों और मादक द्रव्यों का सेवन करती है। उनसे कितनी हानि होती है, कितने लोगों का जीवनकाल कितना घटता है ? यह अभी तक जाँचा, देखा नहीं गया; पर यह स्पष्ट है कि नशों के कारण युद्ध से कम नहीं, अधिक ही विनाश उत्पन्न होता है। नशीले चीजों को तैयार करने, बनाने और खपाने में जो श्रम एवं धन लगता है, उस पूँजी की यदि युद्धपूँजी और युद्धश्रम से तुलना की जाए, तो प्रतीत होगा कि नशा आगे है युद्ध पीछे। बारूद जल जाती है, युद्ध उपकरण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नष्ट हो जाते हैं और अपने साथ मानवीय जीवन तथा धन को भी नष्ट कर देते हैं। उनका कोई उत्पादक परिणाम नहीं होता। नशे के उपकरण भी इस्तेमाल के साथ ही नष्ट हो जाते हैं, उनका प्रभाव होता है, तो वह भी अशुभ ही, जीवन और धन दोनों का नाश होता है। इस प्रकार युद्ध और नशों को, विनाश करने वाले तत्त्वों को, एक ही वर्ग में रखा जा सकता है।

युद्ध और नशों की ही भाँति कला, साहित्य, संगीत आदि क्षेत्रों में भी सृजन कम, विकृत, वीभत्स प्रवृत्तियाँ ही ज्यादा चलती हैं। ये प्रवृत्तियाँ नैतिकता को नष्ट-भ्रष्ट कर मनुष्य जीवन को नहीं, तो मानवता को अवश्य ही नष्ट करती हैं। इस स्थिति में यही कहा जाएगा कि मानवी क्षमता का अधिकांश भाग ध्वंस में लगे हुए हैं। क्या ध्वंस में लगी हुई इस मानवीय क्षमता को मोड़ा नहीं जा सकता ? उसे सृजन की दिशा नहीं दी जा सकती ? क्या विनाश और विध्वंस इतना आकर्षक है कि, उसका प्रलोभन छोड़ा नहीं जा सकता ? क्या विकास इतना निरर्थक है कि उसके लिए कुछ सोचा-समझा नहीं जाना चाहिए ? क्या उसकी आवश्यकता भी अनुभव नहीं की जानी चाहिए ? आदि ऐसे प्रश्न हैं, जिन पर विचार किया जाना चाहिए और अपनी रीति-नीति का पुनर्निर्धारण करना चाहिए।

❐ ❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जनसंख्या और पर्यावरण

पृथ्वी पर सीमित संख्या में ही प्राणियों को निर्वाह देने की क्षमता है। वह असीम प्राणियों को पोषण नहीं दे सकती। बढ़ता हुआ जन-समुदाय पृथ्वी और पर्यावरण दोनों के लिए ही अगणित संकट खड़े कर रहा है। खाद्य उत्पादन के लिए भूमि कम पड़ती जा रही है। आवास के लिए बहुमंजिलें मकान बन रहे हैं, फिर भी खेती के अतिरिक्त अन्य कार्यों के लिए भी भूमि की बड़ी मात्रा में आवश्यकता पड़ रही है। जंगल बुरी तरह कट रहे हैं। उससे घिरी हुई जमीन को खाली कर लेने की आवश्यकता कानूनी रोकथाम के होते हुए भी किसी न किसी तरह पूरी हो रही है। वन कटते जा रहे हैं। फलस्वरूप वायु, जल और मृदा प्रदूषण की रोकथाम का रास्ता बंद हो रहा है। जमीन में जड़ों की पकड़ न रहने से हर साल बाढ़ें आती हैं, भूमि कटती है, रेगिस्तान बनते हैं। नदियों की गहराई कम होते जाने से पानी का संकट सामने आता है। फर्नीचर, मकान और जलावन तक के लिए लकड़ी मुश्किल हो रही है। वन कटने की अनेक हानियों को जानते हुए भी आवास के लिए, खाद्य के लिए, सड़कों, स्कूलों और बाँधों के लिए जमीन तो चाहिए। यह सब जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणाम ही तो हैं। इन्हीं में एक अनर्थ और जुड़ जाता है, शहरों की आबादी का बढ़ना। बढ़ते हुए शहर घिचपिच की गंदगी, वायु और जल प्रदूषण के कारण नरक तुल्य बनते जा रहे हैं।

☆ जनसंख्या वृद्धि—स्वयं में एक संकट

पर्यवेक्षक और समीक्षक अनेक संकटों में आबादी वृद्धि की भी गणना करते है और कहते हैं कि यदि जन्म-दर ऐसी ही बनी रही, तो अतिशय बढ़े हुए खरगोशों और चूहों की तरह मनुष्य को भी जल में डूबकर सहमरण की तैयारी करनी पड़ेगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नृतत्ववेत्ता बताते हैं कि वर्तमान में शिशु जन्म दर प्रति मिनट तीन है। इस हिसाब से एक सप्ताह में उनकी संख्या २११,६८० तक बढ़ जाती है। इससे अंदाज लगाया जा सकता है कि आबादी किस तूफानी गति से वृद्धि कर रही है। इस सदी के प्रारंभ से लेकर अब तक उसमें किस रफ्तार से बढ़ोत्तरी हुई, उसकी एक बानगी द्रष्टव्य है।

सन् १६०१ की जनगणना में समस्त विश्व में २३८ करोड़ मनुष्य रहते थे। वे सन् १६११ में २५२ करोड़ हो गए और आबादी वृद्धि का औसत १३ प्रतिशत रहा। सन् १६२१ में यह आबादी लगभग उतनी ही रही। जर्मन युद्ध ने तथा उन्हीं दिनों फैली महामारियों ने संख्या बढ़ने नहीं दी। सन् १६३१ में शांति का समय आते ही, यह संख्या २७८ करोड़ हो गई, वृद्धि का औसत २७ प्रति हजार बढ़ा है। सन् १६४१ में ३१८ करोड़ तक पहुँची और वृद्धि दर ३८ प्रति हजार पहुँची। आगे इस क्रम में और तेजी आई। सन् १६५१ में ३६० करोड़ हुई, वृद्धि दर ४२ प्रति हजार पहुँची। सन् १६६१ में संख्या ४३६ करोड़ दर ५८ प्रति हजार। सन् १६६६ में ५०० करोड़ संख्या और वृद्धि दर ६१ प्रति हजार। इसी सन् २००१ तक विश्व की जनसंख्या ६०० करोड़ से ऊपर पहुँच चुकी है। इसी चक्रवृद्धि क्रम से बढ़ती हुई गति से अनुमान है कि अगले दिनों में यह संख्या एक हजार करोड़ हो जाएगी; इसका अर्थ यह हुआ कि अब की अपेक्षा अगले बीस वर्ष में विश्व की जनसंख्या दूनी होगी। अगले दिनों विश्व की आबादी, कहाँ तक पहुँच जाएगी और उस जनसंकुलता का क्या परिणाम होगा, इसका पता लगाने के प्रयास भी हुए हैं।

कहा जा चुका है कि, पृथ्वी के पास सीमित प्राणियों के लिए ही स्थान और साधन उपलब्ध हैं, अन्य प्राणियों की तरह यह नियम मनुष्यों पर भी लागू होता है। मनुष्येतर प्राणियों के संबंध में देखा गया है कि, जब उनकी संख्या बढ़ने लगती है और सीमा रेखा को लाँघ जाती है, तो प्रकृति उनका सफाया करने लगती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह स्वाभाविक भी है। प्रकृति द्वारा उपलब्ध कराए जाने वाले सुविधा-साधन अधिक संख्या में प्राणियों के लिए कम पड़ने लगते हैं। कम साधन और अधिक उपभोक्ताओं के कारण निश्चित ही संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। शक्तिशाली दुर्बल को दबाता है और उसके हिस्से का भाग छीनता है। इस प्रकार के संघर्ष में, जो सशक्त होते हैं वही बचते हैं और दुर्बल मारे जाते हैं। संघर्ष की यह स्थिति अंततः पूरे वर्ग में जो सशक्त होते हैं, वही पूरे वर्ग को ही नष्ट करके रख देती है। नृतत्वशास्त्रियों को प्राचीनकाल में विद्यमान रहे ऐसे कई प्राणियों के अवशेष मिले हैं, जो उन दिनों काफी शक्तिशाली, विशालकाय थे, किंतु उनकी संख्या इतनी बढ़ गई कि प्रकृति के पास उपलब्ध साधनस्रोत कम पड़ने लगे, संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हुई और फलतः वह पूरा का पूरा प्राणी वर्ग ही अपना अस्तित्व नष्ट कर बैठा।

क्या मनुष्य के लिए भी प्रकृति यही न्याय-नीति बरतने वाली है ? उसके विधान में किसी से भी पक्षपात करने या किसी को भी छूट देने की गुंजाइश नहीं है, इसमें जरा भी संदेह नहीं है कि मनुष्य के लिए संघर्ष और अंततः विनाश का चक्र घूमने को तैयार बैठा है। इस आधार पर संसार भर के विचारशील और बुद्धिजीवी व्यक्ति लोगों को तरह-तरह से सीमित संतानोत्पादन के लिए समझाते, बड़े परिवारों की हानियाँ और जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणामों की विवेचना करते रहे हैं। इन बातों का कोई प्रभावशाली परिणाम उत्पन्न हुआ हो, ऐसा देखने में नहीं आता, आखिर प्रकृति को ही अपना कुल्हाड़ा तेज करने के लिए बाध्य होना पड़ रहा है।

इन दिनों संसार में हिंसा की आग बड़ी तेजी से फैल रही है। हत्या-मारपीट, उपद्रव, दंगे, लूटमार और अपराधों में बड़ी तेजी से बाढ़ आ रही है। मनोवैज्ञानिकों और प्रकृति विज्ञानियों की दृष्टि में इसका एक बड़ा कारण जनसंख्या का बहुत अधिक बढ़ जाना है। पिछले दिनों ब्रिटेन के दो प्रसिद्ध समाजशास्त्री क्लेअर रसेल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और डब्ल्यू० ए० रसेल ने कई मामलों का अध्ययन करने के बाद जो निष्कर्ष प्राप्त किए उनसे यही सिद्ध होता है कि इस तरह की घटनाओं के मूल में वस्तुतः प्रकृति-प्रेरणा ही काम कर रही है। इन दिनों छुटपुट कारणों से उत्पन्न हुए मनमुटाव भी भयंकर हिंसावृत्ति के रूप में उभरते हैं और उनकी चपेट में प्रतिद्वंद्वियों के निरीह बाल-बच्चे भी आ जाते हैं। धन के लालच में चोरी-ठगी की अपेक्षा सफाया करके निश्चिंततापूर्वक लाभान्वित होने की आपराधिक प्रवृत्तियाँ पिछले दिनों तेजी से बढ़ी हैं, क्योंकि हिंसावृत्ति, उग्र होती जा रही है। हिंसावृत्ति पर विभिन्न दृष्टियों से विचार और कई परीक्षण करने के बाद यही सिद्ध हुआ कि जनसंख्या का दबाव मनुष्य को उथला, असहिष्णु और असंतुलित बना देता है, इस प्रकार लोग जल्दी उत्तेजित हो जाते हैं तथा हत्या और हिंसा करने में जरा भी नहीं झिझकते।

जनसंख्या के दबाव का मनोवैज्ञानिक प्रभाव जाँचने के लिए किए गए प्रयोगों में देखा गया कि छोटे-छोटे जानवर जब, खुले और शांत वातावरण में रहते थे, तब उनकी प्रकृति बहुत शांत थी, किंतु जब उन्हें भी भीड़ में रखा गया, तो वे उत्तेजित और थके-माँदे रहने लगे तथा उनमें एक-दूसरे पर आक्रमण करने की प्रवृत्ति भी पनपती देखी गई। सर्वविदित है कि भीड़-भाड़ के कारण मल-मूत्र, पसीना तथा रद्दी चीजों की गंदगी भी बढ़ती है और शरीर से निकलने वाली ऊष्मा अपने निकटवर्ती वातावरण को प्रभावित करती है। मनःशास्त्रियों ने अनुसार, यह विकृतियाँ ही प्राणियों तथा मनुष्यों को उत्तेजित करती एवं उन्हें अशांत बनाती हैं। यही कारण है कि छोटे गाँवों की अपेक्षा कस्बों और शहरों में अधिक अपराध होते हैं।

अमेरिकी जनसंख्या अध्ययन ब्यूरो द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट में कहा गया था कि विश्व की जनसंख्या प्रतिवर्ष ९ करोड़ ५० लाख बढ़ रही है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईसा से आठ हजार वर्ष पूर्व सारे संसार में कुल लगभग २५ लाख लोग थे। उस समय न कोई अकाल का भय था, न महामारी का। पृथ्वी का वातावरण शुद्ध था। खाने को प्रकृति ही इतना दे देती थी कि कृषि आदि में व्यर्थ परिश्रम नहीं करना पड़ता था। लोग देशाटन और ज्ञानार्जन का आनंद लेते थे। जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ी, जटिलता बढ़ती गई और उसी अनुपात से स्वास्थ्य, आरोग्य, आजीविका, संरक्षण, खाद्य पदार्थ, निवास-स्थान, शिक्षा, सामाजिकता, अपराध आदि समस्याएँ भी बढ़ती गईं। आज तो जनसंख्या वृद्धि के कारण सारा संसार ही एक समस्या बन गया है।

☆ क्या धरती खिसक जाएगी

जनसंख्या की इस तीव्रता और अभिवृद्धि के दुष्परिणामों को स्पष्ट करते हुए, ऐलिनाय विश्वविद्यालय के भौतिकशास्त्री प्रोफेसर हीजबान फोस्टेक ने लिखा है—"२०२६ ई० में मनुष्य जाति का अंत हो जाएगा, क्योंकि उस समय विश्व जनसंख्या चरमसीमा तक पहुँच जाएगी।" केलीफोर्निया औद्योगिक संस्थान के डॉ० जेम्स बोनर के अनुसार विश्व की जनसंख्या, प्रति वर्ष जिस अनुपात से बढ़ रही है, यदि यह ऐसी ही बढ़ती रही, तो अगली शताब्दी में इतनी हो जाएगी कि प्रति व्यक्ति एक फुट पृथ्वी से अधिक न मिलेगी। इसका सोना, जागना, काम करना, खाना-पीना, टट्टी-पेशाब करना सब कुछ इतने में ही होगा। स्पष्ट है कि ऐसी स्थिति आने से पूर्व विस्फोट हो और मनुष्य, मनुष्य को ही खा जाये।

लंदन के प्रसिद्ध स्वास्थ्य विशेषज्ञ ने, ब्लैकपूल में, स्वास्थ्य कांग्रेस की रायल सोसायटी में एक निबंध पढ़ा, जिसमें उन्होंने बताया कि "सन् २०५० में संसार की दशा महाप्रलय जैसी हो जाएगी। उस समय अब की तीन अरब की जनसंख्या बढ़कर नौ अरब हो जाएगी।" भारतवर्ष में प्रति घंटा, ग्यारह सौ की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जनसंख्या वृद्धि होती है। प्रतिवर्ष एक करोड़ बीस लाख लोग बढ़ जाते हैं। केरल जैसे प्रांत में प्रतिदिन पंद्रह सौ नये शिशु जन्म लेते हैं।"

ऊपर उल्लेखित आँकड़ों से, जनसंख्या का प्रलयंकारी विस्फोट इन्हीं दिनों होने की बात कही गई है और बताया गया कि पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था। इसका क्या कारण है ? संतानें पहले भी जन्म लेती थीं, पर प्रकृति से जूझने के उतने समर्थ साधन हाथ में न होने से मृत्यु संख्या अधिक थी। दुर्भिक्षों, महामारियों तथा अन्य प्रकृति-प्रकोपों से असंख्य मनुष्य मरते थे। वासनात्मक प्रवृत्तियाँ उग्र न होने से संतान भी सीमित ही होती थी। विधुर और विधवाएँ निवृत्त जीवन जीते थे। अब किशोरावस्था आने से पूर्व ही मस्तिष्क गृहस्थ धर्म का उपभोग करने के लिए प्रशिक्षित हो जाता है। वासना भड़काने वाली फिल्में, पुस्तकें तथा तस्वीरें बेहिसाब बढ़ रही हैं। कानाफूसी में प्रायः वही चर्चाएँ रहती हैं, जो देखा-सुना जाता है, उसमें भावुकता भड़काने वाली प्रेरणाओं की भरमार होती है। इन परिस्थितियों में प्रजनन का अनुपात बढ़ना स्वाभाविक है। दूसरी ओर विज्ञान की प्रगति ने ऐसी व्यवस्था बना दी है कि भूखों मरने अथवा प्रकृति-प्रकोप से दम तोड़ने की संभावनाएँ कम ही रह गई हैं। बीमारियाँ सताती बहुत हैं, पर उन्होंने भी मारने का उत्साह ढीला कर दिया है। दूसरी ओर बढ़ी हुई जनसंख्या द्वारा नई पीढ़ियों का उत्पादन-चक्रवृद्धि दर से हो रहा है। १ के ३, ३ के ९, ९ के २७, २७ के ८१, ८१ के २४३, २४३ के ७२९, ७२९ के २१८७, २१८७ के ६५६१।

एक व्यक्ति की तीन संतानें होती चलें, तो सातवीं पीढ़ी पर ६५६१ बच्चे हो जाएँगे। यही क्रम आगे बढ़ता रहा, तो संख्या न जाने कहाँ से कहाँ पहुँचेगी ? इस क्रम में कुछ रोक-थाम भी होती है, पर बढ़ोत्तरी का अनुपात इतना तीव्र है कि निकट भविष्य में मनुष्यों के निवास, आहार के लिए जमीन खाली न बचेगी। पानी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की कमी पड़ेगी और शिक्षा, व्यवसाय, यातायात आदि के लिए जगह न रहेगी। ऐसी दशा में स्वभावतः वर्तमान धरती के अपर्याप्त होने पर नए स्थान तैयार करने होंगे।

इस बेतहाशा वृद्धि को देखकर ही माल्थस को चिंता हुई थी और उन्होंने जनसंख्या पर एक सुविख्यात शोध कार्य किया, जो आज सारे विश्व में माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत (माल्थस थ्योरी) के नाम से प्रसिद्ध है। माल्थस ने जनसंख्या वृद्धि की गंभीरता का दिग्दर्शन कराते हुए लिखा है—"जनसंख्या गुणोत्तर क्रम (ज्योमेट्रिकल प्रोग्रेशन) की दर से अर्थात् १ से २, २ से ४, ४ से ८, ८ से १६, १६ से ३२, ३२ से ६४, ६४ से १२८ के हिसाब से बढ़ती है, जबकि उत्पादन समांतर क्रम (अरिथमेटिक प्रोग्रेशन) अर्थात् १, २, ३, ४, ५, ६, ७ के हिसाब से बढ़ता है। इस हिसाब से पहले वर्ष १ व्यक्ति था, तब उसके लिए १ यूनिट अन्न की आवश्यकता थी, जो उसके उदर-पोषण के लिए पर्याप्त था। तीसरे वर्ष व्यक्ति हो गए ८ पर अन्न उत्पादन की यूनिट ३ ही रही। पाँच व्यक्तियों के लिए अन्न का जो दबाव पड़ेगा, उसके लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, वस्त्र, मकान और मनोरंजन आदि के साधनों में कटौती करके भरण-पोषण की समस्या पूरी करनी पड़ेगी। प्रत्येक अगले वर्ष यह जटिलता बढ़ती ही जाएगी। ७ वर्ष बाद जहाँ खाने के लिए जनसंख्या १२८ होगी, वहाँ उत्पादन कुल ७ ही यूनिट होगा। तात्पर्य यह है कि १२१ व्यक्ति बेरोजगारी, भुखमरी और निरक्षरता की समस्या से जन्मजात पीड़ित होंगे। उत्पादन का यह अनुपात अन्न के क्षेत्र में ही नहीं, वस्त्र आदि आत्मसुरक्षा और आत्मविकास के क्षेत्र में भी होगा। इस तरह संकट प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ेंगे। बेरोजगारी, भुखमरी, अशिक्षा और अनुशासनहीनता का यह स्वरूप आज स्पष्ट देखा जा सकता है।

संभवतः इन आँकड़ों के आधार पर ही, डॉ० आर० सेन (जो पहले भारत के खाद्य मंत्रालय के सचिव थे बाद में संयुक्त राष्ट्रीय खाद्य एवं कृषि संगठन के महानिदेशक नियुक्त हुए थे)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ने कहा था—"यह माना गया है कि संसार में तब तक स्थायी शांति और सुरक्षा कायम नहीं हो सकती, जब तक भुखमरी और अभाव को खत्म न कर दिया जाए। वस्तुतः व्यक्तियों का स्वास्थ्य और सुख ही नहीं, वरन् स्वतंत्र एवं लोकतंत्री समाज का अस्तित्व भी खतरे में है। अगले कुछ वर्ष मानवीय इतिहास में अत्यधिक नाजुक होंगे। या तो हम उत्पादकता बढ़ाने और जनसंख्या न बढ़ने देने के लिए सब संभव प्रयत्न कर लें अन्यथा हमें अभूतपूर्व रूप से विशाल विपत्ति का सामना करना होगा।"

यह कथन शेखचिल्ली के विवाह की कल्पना नहीं, वरन् एक सत्य है, जो हमें आगामी दिनों किसी भयंकर विस्फोट के लिए तैयार रहने को सावधान करता है। प्रकृति के कोष में सीमित सामग्री है। वह असीमित लोगों के पेट नहीं भर सकती। इसलिए उसने एक सिद्धांत बना लिया है कि जो भी जातियाँ दीवाली में आतिशबाजी के साँप की तरह बढ़ती हैं, उनको नष्ट किया जाना चाहिए। मक्खी और मछलियाँ संसार में सबसे अधिक बच्चे पैदा करती हैं। यदि प्रकृति भी उनका संहार तेजी से न करती, तो आज इन मक्खियों और मछलियों के रहने के लिए १० करोड़ ऐसी ही धरतियों की आवश्यकता पड़ती जैसी अपनी पृथ्वी है।

माल्थस ने इस शताब्दी के पूर्वार्द्ध में ही यह चेतावनी दे दी थी कि जनसंख्या वृद्धि की वर्तमान दर पर अविलंब रोक लगाई जानी चाहिए अन्यथा मानवता भयंकर प्राकृतिक दुष्परिणामों के लिए तैयार रहे। माल्थस ने बताया कि यदि मनुष्य जनसंख्या रोकने के लिए विवेक से काम नहीं लेगा, तो फिर प्रकृति अर्थात् स्वयं संभूत समस्याएँ स्वतः ही सर्वनाश पर उतारू हो जाएँगी, तब प्रकृति का 'संहारक सिद्धांत' प्रारंभ होगा। अच्छा तो यह है कि लोग संयमशील जीवन जिएँ, पर यदि वैसा संभव नहीं, तो जन्म निरोध के कृत्रिम साधन भी बुरे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नहीं—इतने पर भी यदि मनुष्य अपनी जिद पर अड़ा रहता है, तो उसे अभी से युद्ध पूर्व से युद्धाभ्यास की तरह विनाश के लिए तैयार हो जाना चाहिए।

लोंबोक इंडोनेशिया का एक द्वीप है। वहाँ सन् १९६६ में अकाल पड़ गया। वहाँ के निवासियों ने पौधों की छाल, घोंघे, घास, शैवाल आदि खाकर, जीवन रक्षा के बहुतेरे प्रयत्न किए, तथापि ६ माह में दस हजार आदमी विकराल भूख की ज्वाला में जलकर नष्ट हो गए। यह तब हुआ, जब समस्त पृथ्वी के संपर्क साधन बहु-विकसित हैं और एक देश को दूसरे देशों से संवेदना, सहायता मिल जाती है, पर जब हर कोई उसी समस्या से पीड़ित होगा, तो कोई किसी की सहायता नहीं करेगा। उलटे माल्थस सिद्धांत के अनुसार, तब लोग एक किलो मक्का का आटा प्राप्त करने के लिए दस आदमियों की हत्या करने में भी नहीं हिचकेंगे।

भूख की समस्या पर प्रकाश डालते हुए वर्ष १९६६ में विश्व राष्ट्र संघ (यू० एन० ओ०) के सेक्रेटरी जनरल यू थांट ने अपनी एक रिपोर्ट में बताया था कि भारतवर्ष में प्रतिवर्ष २ लाख बच्चे केवल इसलिए मर जाते हैं कि, उन्हें पोषण की प्रारंभिक सुविधाएँ ही नहीं उपलब्ध हो पातीं। अन्न का उत्पादन सीमित हो और खाने वालों की संख्या बढ़ रही हो, तो यह स्थिति और भी भयंकर रूप धारण कर सकती है।

अन्न में अकेले आदमी ही हकदार नहीं है, डकैत भी उसे लूटते हैं, यह डकैत हैं—चूहे। १९६६ की जनगणना के समय भारतवर्ष में १ अरब ६० करोड़ चूहे थे। प्रति चूहा प्रतिवर्ष दस पौंड भी अनाज चोरी करता हो, तो ८ अरब कुंटल के लगभग अनाज तो यही खाए बिना न मानेंगे, तब फिर स्वभावतः मनुष्य इन पर गुस्सा उतारेगा और जंगली जानवरों को खाना शुरू करेगा। यों भी जंगल समाप्त होते ही जीव वैसे ही अस्तित्वहीन हो जाएँगे, तब फिर आदमी, आदमी को खाएगा, चाहे वह प्रत्यक्ष हो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

या अप्रत्यक्ष। अराजकता के रूप में उसके प्रारंभिक चरण (१) भुखमरी, (२) बेरोजगारी, (३) आवास समस्या और (४) अराजकता के लक्षण अभी से उभरने लगे हैं। सूर्योदय से पूर्व की ऊषा, जिस तरह सूर्यागमन का बोध कराती है, उसी तरह ये समस्याएँ आगामी जनसंख्या विस्फोट के ही पूर्व अध्याय हैं, यदि मनुष्य अभी भी विवेक से काम नहीं लेता, तो फिर प्रकृति ही कब तक चुपचाप बैठेगी ?

☆ भविष्य का अन्न और आहार

जनसंख्या वृद्धि और वैज्ञानिक प्रगति के वर्तमान उत्साह पर अधिक नियंत्रण अगले दिनों न हो सकेगा। हाँ इतना प्रयत्न अवश्य किया जाएगा कि कम से कम सौ वर्ष तक मानवजाति को जीवित रहने के लिए मार्ग निकाल लिया जाए। इसके लिए अभी से प्रयास चल पड़े हैं और सन् दो हजार से सन् इक्कीस सौ तक की अवधि में जो किया जाना है, जो होना है, जो बनना है—आज उसकी रूपरेखा सबके सामने स्पष्ट रहे और उसे पूरा करने के लिए आवश्यक प्रयास समय रहते आरंभ कर दिए जाएँ।

अर्थशास्त्री आर्थर सी० क्लार्क और प्रो० वक्र मिस्टर फुलर ने अगली शताब्दी के लिए जो विश्व-योजना बनाई, उसमें जनसंख्या वृद्धि को प्रथम स्थान दिया गया है और उसके अनुरूप की उपलब्धि में वर्तमान तथा भावी वैज्ञानिक उपलब्धियों को पूरी तरह नियोजित करने का कार्यक्रम बनाया है। उनके कथनानुसार अगली शताब्दी में मांस का उत्पादन बंद हो जाएगा, क्योंकि वह बहुत महँगा है। एक पौंड मांस तैयार करने में प्रायः २० पौंड चारा खर्च होता है। इतनी वनस्पति खर्च करके, इतना कम मांस उत्पन्न करना, सरासर घाटे का सौदा है। इसके लिए उपजाऊ जमीन की इतनी शक्ति बरबाद नहीं की जा सकती। जो चारा, भूसा, इमारती लकड़ी अथवा कागज, गत्ता जैसी चीजें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बनाने के लिए काम आकर जरूरी आवश्यकताओं को पूरी करेगी, उन्हें जानवरों को खिलाना और फिर मांस उत्पन्न करना सरासर फजूलखर्ची है। गिनी-चुनी बहुत दूध देने वाली गायों के लिए जगह और खुराक बचाई जा सके, यही क्या कम है ? यह भी तब हो सकेगा, जब मनुष्यों को स्थान तथा खुराक संबंधी कटौती के लिए तैयार किया जा सके। दूध-दही तो सोयाबीन जैसी वनस्पतियाँ आसानी से बना दिया करेंगी। घी तो तेल की ही एक किस्म है। चिकनाई की जरूरत तेल से ही पूरी हो सकती है, फिर घी की क्या जरूरत ? तेल में प्रोटीन तथा बैक्टीरिया से कृत्रिम मांस आसानी से तैयार हो सकता है, फिर पशु-मांस के जंजाल में उलझने की लंबी और महँगी प्रक्रिया अपनाने की कोई आवश्यकता ही न रहेगी। फ्रांस ने कृत्रिम मांस बनाने में सफलता प्राप्त कर ली है। आगे तो यह विधि और भी सरल तथा समुन्नत हो जाएगी।

सड़कें बहुत जमीन घेरती हैं और वे जहाँ भी पक्की हो जाती हैं, वहाँ जमीन की उर्वरा शक्ति नष्ट कर देती हैं। इन दिनों सड़कों ने जितनी जमीन घेर रखी है और भविष्य में घेरने जा रही हैं, उस भूमि विनाश पर गंभीरता से विचार करना होगा। सड़कें या तो जमीन के नीचे चलेंगी या फिर सस्ते वायुयान, यातायात तथा परिवहन की आवश्यकता पूरी करेंगे। सड़कों से घिरी जमीन पर पौष्टिक किस्म की बड़ी फसलें देने वाली और साल में जल्दी-जल्दी कई बार पकने वाली घासें लगाई जाएँगी। वनस्पति को पूरा ही आहार प्रयोजन के लिए काम में लाना पड़ेगा, तभी आदमी का पेट भरेगा। इन दिनों अन्न खाने की जो आदत है, वह उस समय छोड़नी पड़ेगी। अनाज के पौधे का आकार-विस्तार जितना होता है, उसकी तुलना में बीज का अनुपात बहुत थोड़ा रहता है। फसलों का अधिकांश भाग भूसे के रूप में चला जाता है। अभी तो भूसे-चारे को पशु भी खा लेते हैं। आगे पशु रहेंगे ही नहीं, तो चारे की उपयोगिता भी नहीं रहेगी। ऐसी दशा में पूरी घास

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खाने की आदत डालनी पड़ेगी। आखिर अन्य शाकाहारी प्राणी भी तो घास खाकर ही रहते हैं, फिर मनुष्य को ही इसमें क्या ऐतराज होना चाहिए ? घास में प्रोटीन तथा दूसरे जीवनोपयोगी तत्त्व पर्याप्त मात्रा में मौजूद हैं। घास का चूरा आटे का काम दे सकता है। जरूरत के अनुसार उसमें दूसरी चीजें भी मिलाई जा सकती हैं, पर आटा बनेगा घास का ही। अनाज का प्रचलन भी अगले दिनों पशु-मांस की तरह ही बहिष्कृत करना पड़ेगा। नकली दही, घी, नकली मांस जब सभी खाद्य पदार्थ कृत्रिम बनने लगेंगे, तो अनाज का आटा खाने के लिए ही कोई क्यों आग्रह करेगा ? कुछ दिन में लोग घास का आटा खाने के लिए तैयार हो ही जाएँगे। न होंगे तो वैसा मजबूरी करा लेगी।

मनुष्यों को स्वच्छ साँस मिलती रहे, इसके लिए वृक्ष आवश्यक हैं। २५ वर्ग फुट जमीन में एक आदमी के साँस ले सकने को उपयुक्त वायु मिलती है। इसलिए खुली जगह में वृक्ष-उद्यानों का प्रबंध अधिक करना पड़ेगा। तब सड़कों का ही सफाया नहीं करना पड़ेगा, मकान भी कई-कई मंजिल ऊँचे बना करेंगे। एक मंजिल मकान नहीं बनेंगे। निवास-आवास में घिरने वाली जमीन तो बचानी ही पड़ेगी। वनस्पति उगाने के लिए यह आवश्यक होगा कि मकानों में उसे अधिक न घेरा जाए। यह समस्या अनेक मंजिल ऊँचे मकान बनने के प्रचलन से ही संभव हो सकेगी।

घास के आहार को अधिक पौष्टिक बनाने के लिए उसमें प्रोटीन के नये स्रोत सम्मिलित करने पड़ेंगे। एककोशीय यीस्ट-जीवाणु (बैक्टीरिया), कवक (फफूँद), शैवाल इनमें प्रमुख होंगे। प्रचलित तेल प्रधान वनस्पतियों में मूंगफली, सोयाबीन, नारियल और बिनौले का सम्मिश्रण खाद्य पदार्थों में मिला दिया जाए, तो घास का आटा प्रचलित गेहूँ के आटे से कहीं अधिक पौष्टिक और स्वादिष्ट बन जाएगा। गेहूँ में १०-१२ प्रतिशत, चावल में ८-६ प्रतिशत और मांस-मछली में २०-२२ प्रतिशत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रोटीन होता है। इस दकियानूसी आहार को हटाकर प्रोटीन के नये स्त्रोतों का उपयोग करने से सहज ही कहीं अधिक पौष्टिकता मिल जाएगी। यीस्ट में ५५ प्रतिशत, बैक्टीरिया में ८० प्रतिशत, फफूँद में ४० प्रतिशत और शैवालों में २५ प्रतिशत प्रोटीन होता है। ऐसी दशा में उनका उपयोग करने से समस्या का समाधान निकलेगा।

पेट्रोलियम के कारखानों से उप-उत्पादन के रूप में मिलने वाले सूक्ष्म जीवाणुओं से अच्छा प्रोटीन विनिर्मित करने में फ्रांसीसी विज्ञानी चेंपेटन ने आशाजनक सफलता प्राप्त की है। एककोशीय प्रोटीन मांस उत्पादन पर आने वाली लागत की तुलना में ढाई हजार गुना सस्ता पड़ता है और कम समय लेता है, ऐसी दशा में उसका आश्रय मनुष्य को लेना ही पड़ेगा। समुद्री वनस्पति क्लोरिला का जापान में खाद्य पदार्थ के रूप में उपयोग करने का प्रचलन है। इंग्लैंड घास से प्रोटीन बनाने में लगा हुआ है। सोयाबीन का दूध गो-दूध की आवश्यकता को पूरी कर सकेगा, यह विश्वास खाद्य-शोधकों में अभिनव आशा का संचार कर रहा है। एक किलो सोयाबीन में १० लीटर दूध बनने की संभावना में सस्तेपन का आकर्षण भी बहुत है। गुणों में तो उसे समान ही बताया जा रहा है।

भोजन पकाने की प्रणाली में भारी हेरफेर करना पड़ेगा। कच्चा राशन रखने, पकाने के लिए चौका-चूल्हा बनाने, पकी हुई वस्तुओं को सुरक्षित रखने के लिए जितने स्थान की अब जरूरत पड़ती है, भविष्य में उतनी जगह की बरबादी नहीं की जा सकेगी। अन्न, शाक आदि को उत्पन्न होते ही बड़े कारखानों में भोजन के रूप में तैयार किया जाएगा और उस सूखे सार तत्त्व को पैकिटों में बंद कर दिया जाएगा। चूँकि भोजन में नब्बे प्रतिशत पानी होता है, इसलिए सूखे सार भोजन में आवश्यकतानुसार पानी मिलाकर अँगीठी पर गरम कर लिया जाया करेगा। बस दस मिनट में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भोजन तैयार है, इससे स्थान की ही नहीं, बनाने और पकाने के समय की भी बचत होगी।

पहाड़ समतल बनाने पड़ेंगे। पथरीली जमीन जो कृषि योग्य नहीं बन सकेगी, वह निवास और कल-कारखानों के काम में ली जाएगी, शहर-गाँव उसी पर बसेंगे। पहाड़ों का चूरा करके इमारती ईंट, पत्थर, सीमेंट आदि बनेगा; ताकि इन कार्यों में उपजाऊ जमीन का एक इंच भी बरबाद न किया जाए। लकड़ी की जगह प्लास्टिक अथवा कृत्रिम धातुओं का उपयोग करके मकानों की आवश्यकता पूरी की जाएगी। अमेरिका के विज्ञान लेखक आइजक आसिमोव ने आँकड़ों सहित बताया है कि, "बढ़ती हुई आबादी के कारण अगले २० वर्षों में जो संकट उत्पन्न होंगे, उनमें जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं में कमी पड़ने का संकट मुख्य है। वायु, जल और आहार यह तीनों ही वस्तुएँ ऐसी हैं, जिनके आधार पर मनुष्य जीवित रहता है। बढ़ती हुई आबादी के लिए, अगले दिनों यह तीनों ही वस्तुएँ न तो शुद्ध मिलेंगी और न पर्याप्त मात्रा में। किसी भी तरह जनसंख्या वृद्धि के कारण उत्पन्न होने वाली समस्याओं का समाधान नहीं हो सकेगा, क्योंकि जनसंख्या के साथ कल-कारखाने बढ़ेंगे और उसी अनुपात में प्रदूषण भी।"

❐ ❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संस्कृति, विचार और पर्यावरण

विचार और कर्म में समन्वय और पवित्रता भारतीय संस्कृति की आधारशिला रही है। किन्हीं भी मनुष्य या समाज का परिचय उनकी संस्कृति से, उनके विचार और आचरण से ही प्राप्त होते हैं। सामान्य दृष्टि से देखने पर आचरण और नैतिकता का भौगोलिकता, भौतिक संपदा, पारिस्थितिकी और पर्यावरण से कोई सह-संबंध नहीं दीखता है, पर गंभीर पर्यवेक्षण करने पर यह ज्ञात होता है कि नैतिकता और सद्आचरण ही वह आधारशिला है, जो सही अर्थों में पर्यावरण संरक्षण के लिए कारगर सिद्ध हो सकती है। प्राणिमात्र के प्रति संवेदनशीलता, भावनात्मकता, कर्मनिष्ठा, सत्यनिष्ठा आदि वे गुण हैं, जो अपनाए जाने पर व्यक्ति विशेष में उत्साह, आनंद, सुख और शांति की अभिवृद्धि तो करते ही हैं, साथ ही पूरे वातावरण को उत्फुल्लता एवं दिव्यता से भर देते हैं। फ़िर एक नैतिक सच्चरित्र व्यक्ति जानकर कोई ऐसा कृत्य भी नहीं कर सकता, जिससे सहचर प्राणिवर्ग का अनिष्ट हो या भावी पीढ़ी के लिए समस्याएँ पैदा हो जाएँ।

वैचारिक और सांस्कृतिक प्रदूषण के चलते ही मनुष्य-मनुष्य के बीच और समुदाय-समुदाय के बीच की दूरियाँ बढ़ी हैं। सीमित स्वार्थपरता, संकीर्णता तथा अधिक से अधिक सुविधा-साधन बटोर लेने की प्रवृत्ति से जहाँ ऊर्जा स्रोतों का अत्यधिक दोहन, विलास के साधनों का अमर्यादित उपयोग, प्रलयंकर शस्त्रों का निर्माण तथा विभिन्न राष्ट्रों के बीच परस्पर प्रतिस्पर्धा में वृद्धि हुई है। मानव के इस एकांगी और स्वार्थी दृष्टिकोण और तदनुरूप क्रियाकलाप के कारण ही सृष्टि के स्वसंचालित इको बैलेंस की प्रक्रिया भी गड़बड़ा गई है। आणविक विकिरण जल, मृदा और वायु प्रदूषण जैसे संकट महाप्रलय की चुनौतियाँ लेकर सामने आ खड़े हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक ओर विज्ञान क्षेत्र के मनीषी-मूर्द्धन्यों के सामने यह समस्या है कि सिर पर आ पड़े पर्यावरण असंतुलन को कैसे रोका जाए और उसके कारण उत्पन्न हो रहे अनेकानेक विग्रहों, संकटों से कैसे उबरा जाए ? दूसरी ओर एक और भी प्रश्न उनके सामने है कि मनुष्य को अधिक सुखी-समुन्नत बना सकने का प्रयोजन पूरा करने के लिए किन नए शोध क्षेत्रों में प्रवेश किया जाए ? दोनों ही प्रश्न मानवीय बुद्धिमत्ता के समक्ष एक प्रश्नचिन्ह बनकर खड़े हैं और कहते हैं कि यदि सही समाधान नहीं निकला, तो प्रकृति-पर्यावरण अपना पोषणधर्मी रूप को त्यागकर महारुद्र बनेगा और प्रलय का तांडव नृत्य आरंभ करेगा। आखिर नियति यही होगी।

आज की सबसे बड़ी चुनौती है—दुरुपयोगी को रोकना और उपयोगी को अपनाना। उसका समाधान पाने हेतु समुद्र जितनी गहराई में उतरने तथा अंतरिक्ष को मथ डालने वाली मनीषा का समग्र मंथन करने पर एक ही निष्कर्ष निकलता है। वह है—"उत्कृष्ट आदर्शवादिता" को अपनाकर चला जाए; नियंता द्वारा निर्धारित इको सिस्टम के आधार पर हर स्तर का निर्णय किया जाए।

"आदर्शों के प्रति आस्था"। इसी से चिंतन के क्षेत्र में उत्कृष्टता और व्यवहारक्षेत्र में उदार सहकारिता जैसी सत्प्रवृत्तियाँ उत्पन्न हो सकेंगीं। "दूरदर्शी आदर्शवादिता" की कसौटी पर ही अद्यावधि प्रगति के उपयोग में हुई भूलों को सुधारना, पर्यावरण संरक्षण तथा जो उपलब्ध है, उसका सर्वहित में सदुपयोग कर सकना संभव हो सकता है।

☆ चिंतन और पर्यावरण—अन्योन्याश्रित

विगत शताब्दियों में विज्ञान और बुद्धिवाद ने असाधारण प्रगति की है। इनके सहारे बहुमुखी प्रगति की आशा की जानी चाहिए थी और सतगुणी वातावरण फिर से वापस लौटना चाहिए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

था, पर दुर्भाग्य से वह आशा पूरी नहीं हुई, वरन् स्थूल और सूक्ष्म पर्यावरण बुरी तरह से विकृत हुआ है। एक तरफ जहाँ जल, वायु, मृदा प्रदूषण की समस्या निरंतर विकराल होती जा रही है वहीं दूसरी तरफ असमानताएँ बढ़ी हैं। द्वेष-दुर्भाव में बढ़ोत्तरी हुई है। स्वार्थपरता अधिकाधिक सघन होती गई है। करुणा और शालीनता के स्रोत मानो सूखने ही लगे हैं। हर कोई अधिकारों के लिए अपनी माँग बढ़ाने में निरत है, कर्तव्यों की ओर से उपेक्षा की प्रवृत्ति ही बढ़ रही है। चिंतन, चरित्र और व्यवहार की दृष्टि से स्थिति दिन-दिन पतन-पराभव की ओर गिरते जाने का परिणाम यह हुआ है कि चेतनात्मक वातावरण का हर क्षेत्र प्रदूषण से भर गया है। वायु, जल, मिट्टी, आकाश आदि में बढ़ते जा रहे प्रदूषण इसके अतिरिक्त हैं। आशंका और अविश्वास बढ़ते-बढ़ते आगामी संभावित महायुद्ध की तैयारियों में जुट गए हैं। वैज्ञानिक आयुधों के ऐसे आविर्भाव हुए हैं, जो यदि चल पड़े तो इस सुंदर दुनिया का और उसकी प्राणि संपदा का अस्तित्व भी शेष रहने देंगे या नहीं, इसमें संदेह है। साधारणक्रम से भी विषाक्तता जिस तेजी बढ़ रही है, उसे देखते हुए लगता है कि कहीं दुनिया धीमी आत्महत्या की ओर तो नहीं बढ़ रही है। बढ़ती हुई नशेबाजी और अंधाधुंध जनसंख्या वृद्धि ऐसे दो उदाहरण हैं, जो प्रगति और शांति की संभावनाओं को धूमिल करके रख देते हैं। गरीब-अमीर के, नर और नारी के, जाति-पाँति के, अशिक्षित-शिक्षित के बढ़ते हुए अंतर भी निराशाजनक संभावनाओं के घटाटोप समेटकर ही सामने खड़े कर देते हैं। असंतोष, आशंका, उद्विग्नता और असहयोग की बढ़ती हुई मानसिकता हर किसी को तनावग्रस्त किए हुए हैं।

अवांछनीय वातावरण से न शरीर स्वस्थ रहता है, न मन संतुलित। देखा जाता है कि अधिकाधिक शरीर दुर्बलता और अस्वस्थता से ग्रस्त हैं। जिन्हें पूर्ण स्वस्थ कहा जा सके, उनके दर्शन दुर्लभ हो रहे हैं। ईर्ष्या, द्वेष से जलती हुई मानसिकता ने घर-घर में श्मशान जैसे वीभत्स दृश्य उपस्थित कर दिए हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सहयोग तो स्वार्थ भर के लिए शेष रह गया है। उस आत्मीयता की अभिवृद्धि हो ही नहीं रही है, जिसके कारण एक और एक मिलकर ग्यारह बनने की उक्ति सार्थक होती है।

पिछली दो-तीन शताब्दियों में प्रगति के नाम पर जो कुछ सुविधा-साधन बन पड़े हैं, उन्हें मोटी दृष्टि से देखने पर प्रतीत होता है कि धरती पर देवताओं ने नया स्वर्गलोक बसा लिया है। पाँच सौ वर्ष पुराने व्यक्ति कहीं जीवित हों और पुराने जमाने तथा आज के युग की वह आज तुलना करें, तो उन्हें इस प्रगतिशीलता पर आश्चर्यचकित होकर रहना पड़ेगा। किंतु ऊपर की सुसज्जा वाली परत उघाड़ते ही जो अनुभव होता है, उसे नरक से भी गया गुजरा कहा जा सकता है। दुष्ट चिंतन ने आचरण को भ्रष्ट करके रख दिया है। शालीनता का स्थान निष्ठुरता ने ग्रहण कर लिया है। वासना, तृष्णा और अहंता की कभी न पूरी होने वाली खाई को पाटने में लोग अहर्निश इस प्रकार लगे हैं मानो कुबेर के साधन और इंद्र के वैभव से उन्हें कम नहीं, अधिक ही चाहिए। इस व्यामोह के कुचक्र से मनुष्य इतने गहरे दलदल में धँसता ही चला गया है कि उबरने की बात सोचना तक संभव नहीं बन पड़ रहा है, फिर छुटकारा मिले भी तो कैसे ?

बाहर से बन-ठनकर निकलने की विडंबना में भीतर ही भीतर मनुष्य कितना खोखला हो गया है, इसे देखकर आश्चर्य होता है। परिणति सामने है। समृद्धि भले ही बढ़ी हो, पर मनुष्य भीतर से इतना खोखला होता चला गया है, मानों घुन समुदाय ने किसी खंभे को पूरी तरह जराजीर्ण करके रख दिया हो और वह अब-तब धराशायी होने की बाट जोह रहा हो।

वैभव का बाहुल्य और उद्विग्नता का विस्फोट, साथ-साथ कैसे चुपचाप बैठे रह सकते हैं ? यह लगता तो आश्चर्यजनक है, पर विश्लेषण इसी यथार्थता के निष्कर्ष पर पहुँचता है। परिस्थितियों पर और भी अधिक ऊहापोह करने पर पता चलता है

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कि हम सब किसी महाअशुभ के महागर्त्त में गिरने जा रहे हैं। वैभव का दुरुपयोग प्रयोक्ता के लिए ही नहीं, सर्वसाधारण के लिए भी विपत्ति लाता है। कला, समृद्धि, चतुरता, संपदा आदि के सभी पक्ष यदि नीतिमत्ता की राह छोड़ दें, तो फिर ईश्वर ही मालिक है।

मनःस्थिति के गड़बड़ा जाने पर परिस्थितियों की विपन्नता स्वाभाविक है। जिधर से भी परदा उठाया जाता है, उधर ही चमकीले खोखले की आड़ में एक विषैला सर्प बैठा दीखता है। प्रगतिशीलता ने मनुष्य को जिस स्तर का बना दिया है, उसे देखते हुए लगता है कि वर्जनाओं को उदरस्थ करने से पूर्व निकटवर्तियों और समीपस्थों का भक्षण कर जाने की नीति अब अपवाद नहीं रही, वरन् उसने सार्वजनिक प्रचलन की मान्यता प्राप्त कर ली है। इस बीच मानवीय गरिमा की सत्ता को ढूँढ़ निकालना सुनिश्चित हो रहा है। जहाँ यह दीखता भी है, वहाँ उपजने वाली आशा भीतरी छद्म को देखकर निराशा में बदल जाती है।

दुरुपयोग से तो अमृत भी विष बन जाता है। उसने वर्तमान प्रगति के पक्षधर दर्शन, कौशल, स्वभाव रुझान, प्रयास आदि को सहचर बना लिया है। ऐसी दशा में अनर्थ का ही पोषण हुआ है। विकृत मानसिकता ने तो विभिन्न परिस्थितियों को ही जन्म दिया है और विषधरों का एक अच्छा खासा समुदाय फन फैलाए हुए दसों दिशाओं में कोलाहल मचाता दीखता है। लगता है कि सब चलता रहा, तो आदिमकाल से अब तक संचित की गई मानवीय संस्कृति और प्रगति का अंत होकर रहेगा।

स्थिति से अवगत सभी विचारशील निश्चिंत हो उसके हल खोजते भी हैं और सुझाते भी हैं, पर कार्यान्वयन का अवसर आते ही, उसके लिए साहस का अंत हो गया प्रतीत होता है। अभ्यस्त विचार ही स्वभाव में सम्मिलित होकर, एक से एक बड़े कौतूहल और कुकृत्य कर दिखाते हैं। जो इस कुचक्र से बच रहे हों, उनकी गणना अपवाद रूप में उँगलियों पर करनी पड़ेगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

☆ अपसंस्कृति प्रसार बनाम सांस्कृतिक प्रदूषण

बाल-बुद्धि के लोग शारीरिक सौंदर्य और रूप का आकर्षण बढ़ाने के लिए तरह-तरह से वेष-विन्यास और रूप-सज्जा किया करते हैं। संभव है इससे उन्हें कुछ अधिक सफलता मिलती हो, किंतु इस प्रकार का भड़कीला वेष-विन्यास और बाहरी चमक मानसिक विकृति का ही परिचायक है और उससे मनुष्य के चरित्र का पतन ही हुआ है। विचित्र प्रकार की वेष-भूषा, विदेशियों की नकल अच्छे व्यक्तित्व का प्रतीक नहीं हो सकती। प्रत्येक देश, काल और परिस्थिति के अनुसार जहाँ संस्कृति, रीति-रिवाज और सामाजिक आचार-संहिता में एकता नहीं होती, वैसे ही अपने धर्म, अपनी संस्कृति के अनुरूप केश, वस्त्र और वेष-भूषा से मनुष्य के चरित्र और आत्मिक बल का अनुमान किया जाता है। इस दृष्टि से अपनी भी एक प्रणाली है, उसी में सीमित रहने में हमारा बड़प्पन, सादगी, शालीनता तथा सांस्कृतिक गौरव माना जा सकता है।

बालों से मनुष्य का व्यक्तित्व समझ में आता है। मनुष्य की उजड्डता, ओछापन और चरित्रहीनता की झलक भी बालों से मिलती है। छोटे-छोटे कटाए हुए बाल, मनुष्य की योग्यता प्रकट करते हैं। सुव्यवस्थित ढंग से रखे गए बाल यह व्यक्त करते हैं कि व्यक्ति का स्वभाव, आचरण सामान्य व्यक्तियों की अपेक्षा कुछ अधिक सुंदर होना चाहिए, किंतु बड़े-बड़े बाल, अस्त-व्यस्त और बिखरे हुए बालों से मनुष्य का ओछापन जाहिर होता है। इससे मस्तिष्क के ज्ञानतंतु दुर्बल पड़ जाते हैं। लंबे बाल यदि ठीक प्रकार तेल डालकर और सँवारकर न रखे जाएँ, तो सिर में मैल जमा हो जाता है और फोड़े-फुंसियाँ तथा गंजापन का रोग उत्पन्न हो सकता है। इस तरह केश केवल व्यक्तित्व की दृष्टि से ही महत्त्वपूर्ण नहीं है, बल्कि उनका स्वास्थ्य के साथ भी अटूट संबंध है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कुछ लोगों का यह भ्रम होता है कि, धार्मिक दृष्टि से लंबी जटाएँ रखना बड़प्पन का चिह्न है। लोग यह आदर्श साधु-संतों और साधकों से अनुकरण करते हैं। संभव है जब केशकर्तन प्रारंभ न हुआ हो, तो लोग ऐसा करते हों या साधनाओं की शोध में इन छोटी-छोटी बातों से समय बचाकर अधिक समय आध्यात्मिक शोधों में लगाने की आवश्यकता रही हो—तब लंबी जटाओं को कुछ महत्त्व दिया जाता रहा हो, पर अब जब न तो ऐसे साधु-संत और महात्मा रहे और न ही उनके कटाने में किसी परेशानी का सामना करना पड़ता हो, तो लंबे बाल रखने की कोई उपयोगिता समझ में नहीं आती। सिर में व्यर्थ का बोझ बनाए रखना, बुद्धिमानी की बात नहीं हो सकती। हल्के-छोटे बालों से सिर साफ और ज्ञानतंतु ताजे बने रहते हैं। इससे सात्त्विकता बनी रहती है। बड़े बाल तमोगुण का प्रतीक होते हैं। इसी प्रकार बालों को तरह-तरह से स्त्रियों के समान काढ़ना और विचित्र तरह की आकृति बनाना भी बुरा है।

वस्त्रों के बारे में भी ठीक ऐसी ही बात है। भारतीय संस्कृति की सर्वोपरि विशेषता यही रही है कि यहाँ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सादगी को ही अधिक महत्त्व दिया गया है। यह विशेषता वस्त्राभूषण के साथ भी जुड़ी हुई है। पिछले दिनों हमें जो यवनों और अँग्रेजों की दासता भुगतनी पड़ी, उससे हमारे संपूर्ण आचार-विचार ही परिवर्तित हो गए हैं। यह परिवर्तन खान-पान, रहन-सहन, बोल-चाल आदि सभी में समा गया है। वस्त्र भी आज हमारी सांस्कृतिक विशेषता, गौरव, जलवायु आदि के अनुरूप नहीं हैं।

भारत उष्ण प्रकृति का देश है, अतएव वस्त्रों की अधिकता की यहाँ कोई आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। पूर्व पुरुषों के चित्रों से यह विदित होता है कि ऋषि-मुनि, संत, गृहत्यागी, गृहस्थ व राजा लोग भी प्रायः उतने वस्त्र धारण करते थे, जो सदाचार और शील संरक्षण के लिए आवश्यक होते थे। विशेष अवसरों पर विशेष

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकार के वस्त्र पहनने की परंपरा थी। अधिकांश लोग अपने शरीर का अधिक से अधिक हिस्सा खुला रखते थे, ताकि वे ऋतुओं के प्रभाव को आसानी से बर्दाश्त कर लें।

वस्त्र पहनने की जो परंपरा पूर्व पुरुषों की थी, वह बड़ी सरल और उपयोगी रही है। धोती, कुर्ता आदि का चयन सादगी और सरलता की दृष्टि से भी श्रेष्ठ रहा है और इसका संबंध स्वास्थ्य की स्थिरता से भी रहा है। किंतु खेद की बात है कि अब वस्त्रों की दृष्टि से हमारी सांस्कृतिक-श्रेष्ठता लुप्तप्राय हो चुकी है। पूर्णतः विदेशियों का अनुकरण हो रहा है।

पैंट और चूड़ीदार पायजामा, टोप, टाई आदि का प्रचलन सर्वथा अभारतीय है। ये यहाँ की जलवायु के अनुरूप भी नहीं है और इससे भद्रता भी प्रकट नहीं होती है। अब लोग यह समझने लगे हैं कि पैंट के साथ वे हर घड़ी कितनी गंदगी साथ लिए घूमते हैं ? इसका स्वास्थ्य पर कितना बुरा असर पड़ता है ? दूसरे जो वस्त्र चुस्त होते हैं और जिनसे शरीर का उभार ज्यों का त्यों दिखाई देता है, वे वासना और कामुकता भड़काने वाले होते हैं। बनियान, कमीज, स्वेटर और कोट—एक के ऊपर एक—अनेक कपड़े पहन लेने से बेचारे शरीर की दुर्दशा होती है। चुस्त कपड़े स्वास्थ्य की दृष्टि से, अच्छे नहीं माने जाते। नैसर्गिक रूप से शरीर को हर क्षण शुद्ध हवा मिलती रहनी चाहिए। यदि ऐसा न हुआ तो रोम कूप गंदगी से भर जाते हैं और कोमल स्थानों में हर घड़ी सीलन बनी रहने के कारण दाद, खाज, अकौता, फोड़ा और फुंसियाँ बनी रहती हैं। किसी भी अवस्था में देश-काल की परिस्थितियों के प्रतिकूल वस्त्र नुकसानदेह ही हो सकते हैं।

अब यह बुराई स्त्रियों के जीवन में प्रवेश करती जा रही है, यह एक चिंतनीय विषय है। स्त्रियों का आधुनिक पहनावा इंतना फूहड़ और भड़कीला हो रहा है कि हर शर्मदार की आँखें नीची हो जाती हैं। दुराचार को प्रोत्साहन देने में सिनेमा, नाच, अश्लील गाने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जितने सहायक हो रहे हैं—वस्त्र-सज्जा उससे कहीं अधिक ही है। हमारी बच्चियाँ अब उन वस्त्रों की ओर अधिक आकर्षित होती हैं, जो विचित्र प्रकार के रंग-रंगीले तथा आधे-छोटे होते हैं। स्त्रियों के वस्त्र ऐसे होने चाहिए, जिनसे उनका अधिकांश शरीर ढका रहे किंतु वस्तुस्थिति इससे सर्वथा विपरीत है। यह बड़ी चिंता की बात है। अब इसमें तीव्रता से परिवर्तन की आवश्यकता अनुभव की जा रही है।

स्त्रियों की भारतीय वेषभूषा को अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त है। अतः यह नहीं कहा जा सकता कि उनकी पोशाक किसी भी देश की महिलाओं से निकृष्ट है। आज जहाँ साड़ी और पूरी बाँह के शलूके का प्रचलन दूसरे देशों में बढ़ रहा है, वहाँ यह सबसे अधिक आवश्यक है कि अपनी परंपराओं का अनुशीलन पहले अपने ही घर में हो। हमारी बहनों और बेटियों को इस बात पर अधिक ध्यान देना चाहिए और वस्त्रों की सादगी अपनाने का प्रयत्न करना चाहिए। यह संयम उन बालिकाओं को अधिक सिखाने की आवश्यकता है, जो इस समय शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ रही हैं, क्योंकि महिलाओं के निर्माण की भावी बागडोर उन्हीं के हाथों आने वाली है।

स्नो आदि के उत्पादन में तेजी से जो वृद्धि हो रही है, उससे और भी चिंता हो रही है, क्योंकि उन्हें पर्यावरण को क्षतिग्रस्त करके ही बनाया जाता है। स्नो का १९५६ में ६१४४५० पौंड उत्पादन हुआ, जो दूसरे वर्ष १०८१८८६ पौंड हो गया। इससे यह पता चलता है कि मनुष्य अपने वेष-विन्यास में किस तेजी के साथ अप्राकृतिक साधनों को बढ़ा रहा है। नैतिक दृष्टि से यह सचमुच चिंता की बात है कि मनुष्य की आदतों में छिछोरेपन की बढ़ोत्तरी अधिक हो रही है। एड़ी से लेकर चोटी तक जिस प्रकार से आज लोग शरीर को अप्राकृतिक ढंग से सजाते हैं, उससे समाज का नैतिक पतन हो रहा है और भावी पीढ़ी का चिंतन, जीवन भी प्रदूषित होता जा रहा है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मानवीय स्वभाव की यह छोटी-छोटी बातें भी सामूहिक तौर पर बड़ी प्रभावशील होती हैं; इसलिए यह आवश्यकता अब प्रत्येक विचारवान् के समक्ष समस्या बनकर खड़ी है। इसमें परिवर्तन किए बिना हमारे जातीय-जीवन, संस्कृति का विकास होना—संभव नहीं है। राष्ट्र का नैतिक बल जाग्रत् करने के लिए भी केश, वस्त्र और वेष-विन्यास आदि में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने पड़ेंगे। आत्म गौरव भी इसी में है कि हम अपनी सांस्कृतिक चेतना को समझें और उसे अपने जीवन में धारण करें।

☆ वैचारिक प्रदूषण

भारतवर्ष के प्राचीन मनीषी चरित्र की महिमा को भली प्रकार समझते थे और इसलिए उन्होंने धन और बल के बजाय अधिकांश में सदाचार, तप, त्याग, परोपकार आदि की ही महिमा गाई है, क्योंकि ये ही सब चरित्र के लक्षण हैं। इसीलिए यहाँ के राजा-महाराजा और धन कुबेर लोग कुटियों में रहने वाले मुनियों के सामने नतमस्तक होते थे और किसी विषय में उनकी आज्ञा का उल्लंघन करने का साहस नहीं करते थे।

यद्यपि चरित्र की व्याख्या बहुत विस्तृत है और सत्य, न्याय, क्षमा आदि अनेक गुणों का उसमें समावेश होता है, पर ब्रह्मचर्य, पर-स्त्री का सर्वथा त्याग, नारी मात्र को पवित्र दृष्टि से देखने को उसका विशेष अंग माना गया है। इसका कारण यही है कि जिस व्यक्ति में इस प्रकार का दोष पाया जाएगा, जो इंद्रिय लोलुप होगा, उसमें से अन्य गुणों का भी लोप हो जाएगा। कामी और कुत्तों की तरह पर-स्त्रियों के पीछे दौड़ने वाले मनुष्य में आत्म सम्मान, आत्म शक्ति, आत्म तेज आदि का रहना असंभव है और इनके बिना त्याग, उदारता, परोपकार की भी संभावना नहीं रह सकती। इतना ही क्यों, कामासक्त पुरुषों का पूर्ण रूप से विश्वास भी नहीं किया जा सकता, क्योंकि ऐसे लोगों को कोई भी सुंदरी तथा हाव-भाव में निपुण रमणी अपने फंदे में फँसाकर कर्तव्यच्युत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर सकती है। इसी तथ्य को दृष्टिगोचर रखकर प्राचीनकाल से ही बड़े-बड़े शासक और राष्ट्रों के सूत्रधार अपने गुप्तचर विभाग में सुंदर और भ्रष्ट-चरित्र नारियों को भी सम्मिलित करते रहे हैं, ताकि उनके द्वारा विपक्षी राष्ट्र के कामासक्त अधिकारियों को जाल में फँसाकर, वहाँ का भेद हस्तगत किया जा सके। इसका आशय यही है कि कामुक व्यक्तियों का चरित्र निर्बल पड़ जाता है और वे किसी उच्च कार्य के योग्य नहीं रहते।

कामुकता और अश्लीलता का अर्थ इतना ही नहीं है कि मनुष्य प्रत्यक्ष रूप से शारीरिक संबंध स्थापित करे। मन के विचारों और भावना का भी महत्त्व कम नहीं है। जो लोग किसी कारण या अभाव-वश शारीरिक-संबंध से वंचित रहकर मन से विषयों का ध्यान किया करते हैं, वे और भी दूषित होते हैं और गीता में ऐसे ही लोगों को 'विमूढ़ात्मा' कहकर पुकारा गया है और यह भी कहा गया है कि वे शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं। कारण यही है कि विषय वासना के वेग को किसी रूप में पूर्ति कर लेने वाला तो कुछ समय के लिए शांत हो जाता है और कुछ समय ऐसा जीवन व्यतीत करने के पश्चात् संयम का जीवन भी बिता सकता है, पर जो सदा मन से ही विषयों का चिंतन करता रहता है और उनकी पूर्ति में असमर्थ रहता है, उसकी विचारधारा दिन पर दिन प्रदूषित, भ्रष्ट और निकृष्ट होती जाती है और उसका पतन होना और भी अधिक संभव और सुगम होता है।

कामुकता के विचारों से मनुष्य का मानसिक तथा आत्मिक बल खोखला हो जाता है। शारीरिक दृष्टि से चाहे वह बलवान् और आकर्षक जान पड़े, पर नैतिकता, साहस, धैर्य आदि का सर्वथा अभाव हो जाता है। ब्रह्मचर्य और संयम के द्वारा मनुष्य के भीतर से एक प्रकार की शक्ति, विद्युत् या चुंबक की-सी पैदा होती है, वह इस प्रकार के निकृष्ट विचारों तथा आचार द्वारा जाती रहती है। ऐसे व्यक्ति अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ नहीं रह सकते और न किसी कठिन परिस्थिति में धैर्यपूर्वक उसका मुकाबला कर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सकते हैं; चिंता, निराशा, आशंका, अविश्वास आदि की भावनाएँ सदैव उनमें उत्पन्न हुआ करती हैं।

वर्तमान समय में मनुष्यों का दृष्टिकोण बहुत बदल गया है और बहुसंख्यक साधारण मनुष्य ही नहीं, अनेक विद्वान् और चतुर व्यक्ति भी ऐसी बातों को निजी या 'प्राइवेट' कहकर उन पर आचरण करना आवश्यक नहीं समझते। निम्न कोटि के लोग तो इसको फैशन का एक अंग समझ बैठे हैं। पुराने ढंग के लोग भी इसको मर्दानगी का चिह्न बतलाते हैं। इस प्रकार आजकल नैतिकता तथा चरित्र की लगाम बहुत कुछ ढीली हो गई है और लोगों के आचरणों में बहुत शिथिलता आ गई है। इसके फलस्वरूप मनुष्य जाति की जीवनी शक्ति का ह्रास हो रहा है और लोगों की आंतरिक शक्ति तेजी से विनष्ट होती जाती है। यों ऊपर से वे चमक-दमक के कपड़े पहनकर और पाउडर, क्रीम, साबुन, तेल आदि से चिकने-चुपड़े बनकर अपना काम चलाते रहते हैं, पर जिसको मनुष्यत्व कहा जाता है, उससे वे प्रायः रिक्त हो जाते हैं।

सांस्कृतिक और वैचारिक प्रदूषण के चलते आजकल गंदे साहित्य और अश्लीलतापूर्ण चित्रों की बाढ़-सी आ गई है। सामान्य श्रेणी के युवक प्रायः ऐसी ही कहानियाँ और उपन्यास पढ़ना पसंद करते हैं, जिनमें यौन-विषयों की गंदी चर्चा पाई जाती है। उनको कोई सुरुचिपूर्ण, नैतिक, सामाजिक या देशभक्ति का उपन्यास दे दीजिए, तो वे दस-पाँच पन्ने पढ़कर ही उसे अलग रख देंगे, पर कामुकता की बातों से भरे उपन्यासों को ढूँढ-ढूँढ़कर और माँग कर भी पढ़ते हैं। इसी प्रकार कितने ही लोग बहुत ही गंदे चित्रों की पुस्तकें भी प्रकाशित करते रहते हैं। कानून के भय से इनको गुप्त रूप से ही छापना पड़ता है, पर बड़े-बड़े नगरों में अनेक व्यक्ति इनको खुलेतौर पर बेचते देखे जाते हैं।

सिनेमा तो इस घृणित मनोवृत्ति का सबसे बड़ा पृष्ठपोषक है। सच पूछा जाए तो गंदे साहित्य और चित्रों की जो बढ़ोत्तरी इन दिनों हुई है, उसका मूल यह सिनेमा ही है। वर्षों से यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रेम(शारीरिक) के गीत गा रहा है और कामुकता को भड़काने वाले दृश्य दिखला रहा है। धीरे-धीरे इन बातों ने समाज के एक बड़े भाग के दिमाग को प्रभावित कर दिया है और आज युवक ही नहीं, छह और आठ वर्ष के बच्चे सिनेमा के श्रृंगार-रस के गाने गाते दिखाई पड़ते हैं। बहुत थोड़े घर ऐसे हैं, जो इस सत्यानाशी लहर के प्रभाव से बचे हैं। नहीं तो क्या जवान स्त्री-पुरुष और क्या लड़के और बूढ़े सब सिनेमा के दीवाने हो रहे हैं। यह स्थिति देश तथा समाज के कल्याण की दृष्टि से अत्यंत घातक और अहितकर है और राष्ट्र के कर्णधारों तथा शुभाकांक्षियों को इसके निराकरण का प्रयत्न अवश्यमेव करना कर्तव्य है।

☆ दूषित कार्यपद्धति

अंग्रेजों के हुकुमत से पैदा मैकाले की शिक्षा पद्धति और साहब-बाबू के विभाजन ने हमारे अविकसित समाज को बुरी तरह प्रभावित किया है। आज हर व्यक्ति साहब बनने को ही प्रस्तुत है। जो भाग्य से पढ़-लिख गया, वह हाथ से मेहनत के काम न करने को गौरवपूर्ण उपलब्धि मानता है, जो नहीं पढ़-लिख पाता वह कुंठाग्रस्त हो, आलस्यपूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

शास्त्रों में कर्म की महिमा अच्छी तरह गाई गई है। दर्शन तथा विज्ञान, शास्त्र आदि सभी यही बताते हैं कि यह संसार कर्म-मूल है, सभी सांसारिक जीव कर्मरत हैं। क्या जड़, क्या चेतन सभी कर्मपाश में बँधे हैं ? इस अपार संसार में आलस्य के लिए कोई स्थान नहीं। सूर्य, चंद्र, तारे, पृथ्वी तथा ग्रहों आदि सभी अपने कर्म में अहर्निश लवलीन रहते हैं। जिसमें जितनी शक्ति है, वह उसी के अनुसार कार्य करता है। कर्म की अभावावस्था का नाम आलस्य है। वास्तव में कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति कभी आलसी नहीं हो सकता, बिना काम किए उसे चैन ही न पड़ेगा। आलसी वे हैं, जो अकर्मण्य अर्थात् कर्तव्य की अवहेलना करने वाले हैं। ऐसे लोगों का मस्तिष्क हमेशा पापों और फजूल बातों ही से भरा रहता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अँग्रेजी में एक कहावत है—आलसी लोगों का दिमाग, शैतान का घर है।" एक बार प्रवेश पाते ही यह शैतान, व्यक्ति को तो नरक के गर्त में ढकेलता है, पूरे वातावरण में भी अपना कुप्रभाव डाले बिना नहीं रहता। जिन्हें अपना कर्तव्य कर्म नहीं सूझता, पिशाच का कुकर्म उन्हें ढूँढ़ देता है। अकर्मण्य और आलसी लोग दिन-रात अप्रसन्न एवं अस्वस्थ रहा करते हैं। इसके विपरीत काम करने वाले सदा प्रसन्न और स्वस्थ रहते हैं। काम करने से केवल शरीर को ही सुख नहीं मिलता, बल्कि मन को भी यथेष्ट शांति और सुख प्राप्त होता है। परिवार परिकर के लोग भी आनंदित होते हैं तथा प्रेरणा पाते हैं। जो लोग यह कहते हैं कि मुझे तो कुछ काम ही नहीं, क्या करूँ ? यह उनकी भारी भूल है। राजा, प्रजा, संन्यासी, गृहस्थ, अध्यापक, विद्यार्थी, माता-पिता तथा संतान, नौकर और मालिक आदि जितने भी व्यक्ति हैं—अधिकार भेद तथा शक्ति और अवस्था के अनुसार सबके कर्तव्य की सीमा निर्दिष्ट है। जो अपना काम नहीं करता, दूसरों का सहारा ढूँढ़ता है, वह आलस्य में पड़कर अपने को निकम्मा बनाता है, वातावरण में मनहूसियत और तनाव उत्पन्न करने का दोषी भी होता है।

किसी पदार्थ के रखे-रखे नष्ट होने की अपेक्षा उसका किसी काम में लगकर नष्ट होना अच्छा है। इसी प्रकार किसी काम में मन और शरीर को उलझाकर जीवन व्यतीत करना आलस्य में पड़े रहने से कहीं बढ़कर है।

एक प्रसिद्ध विद्वान् एमर्सन ने कहा है कि "प्रकृति की प्रेरणा मनुष्यों के प्रति यही है कि परिश्रम का मूल्य तुम पाओ चाहे न पाओ, पर कर्म (सत्कर्म) बराबर करते जाओ। तुम जो कर्म करोगे उसका पुरस्कार कभी न कभी तुम्हारे हाथ जरूर आएगा। तुम हलका काम करो या भारी, खेती करो या महाकाव्य लिखो, कोई काम क्यों न हो, योग्यता के साथ संपन्न करो। प्रथम तो उस काम के सम्यक् संपन्न होने से तुम्हारा चित्त प्रसन्न होगा, नयनादि इंद्रियगण तृप्त होंगे। इसी को पुरस्कार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समझो, यदि इस काम से तत्काल विशेष लाभ न हो, तो इससे अधीर न हो, किसी न किसी दिन तुम्हें अपने कर्म का यथेष्ट फल मिल ही जाएगा। किया हुआ कोई काम कभी निष्फल नहीं होता। किसी अच्छे काम को तुम भली-भाँति पूरा कर सकोगे तो वही तुम्हारे लिए पुरस्कार होगा।"

नीति के विरुद्ध जो काम है, उसका परिणाम कभी अच्छा नहीं हो सकता। बबूल के पेड़ में आम कभी नहीं फल सकता। बुरे काम का अंतिम फल परिताप ही है। अपकर्म करने से शारीरिक और मानसिक अनेक हानियाँ होती हैं, लोगों में भी निंदा होती है और फिर बुरे कर्मों से वातावरण भी विकृत होता है, जिससे आने वाली पीढ़ियों तक का मार्ग कंटकाकीर्ण बन जाता है।

कोई भी काम जो शारीरिक या मानसिक परिश्रम से संबंध रखता हो और लोकोपकारी अथवा जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक हो, कदापि बुरा नहीं कहा जा सकता—यदि वह ईमानदारी और सच्चरित्रता के साथ संपादित किया जाए। इस प्रकार कुली का काम, किसान का काम, शाक-भाजी बेचने का काम, क्लर्क का काम, ट्यूशन काम, बढ़ई, कुम्हार, लोहार आदि का काम कदापि निंद्य नहीं हैं। नीचता, निंदा तथा कलंक तो उन्हीं कामों के करने में हैं, जो बुरे और नीति विरुद्ध हों। काम करने की योग्यता और शक्ति रखने पर दूसरे का आश्रित होना, नीचता ही है। इस संबंध में एक कहानी उल्लेखनीय है—

एक समय एक बंगाली बाबू इंग्लैंड से लौटकर स्विट्जरलैंड देश देखने गए थे, वहाँ एक बड़े रेल के स्टेशन पर उतरे और एक कुली को पुकारा। कुली ने आकर उनका सामान उठाया। बंगाली महोदय ने उससे किसी होटल में ले चलने को कहा और वह उनको अपने साथ लेकर चला।

रास्ते में उस कुली ने उनसे पूछा—"महाशय, आप किस देश के रहने वाले हैं ? आपका स्वरूप देखकर, यह नहीं मालूम होता कि आप किस देश के निवासी हैं।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बाबू—मैं तो भारतवर्ष का निवासी हूँ।

कुली—"मैं आपको कुछ बात और पूछना चाहता हूँ। क्या आप मेरे प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे।"

बाबू—हाँ हाँ, पूछो। मैं यथा साध्य अवश्य उत्तर दूँगा।

तब कुली निर्भय होकर, उनके साथ वार्त्तालाप करने लगा। कुली की विद्वतापूर्ण बातें सुनकर बाबूजी ने आश्चर्य से कहा—"तुम पढ़े-लिखे मालूम होते हो, फिर कुली का काम क्यों करते हो ?"

कुली ने कहा—"कोई काम न मिलने पर, दूसरे का आश्रित और कंटकरूप होने की अपेक्षा मैंने कुली का काम ज्यादा अच्छा समझा। आज मैं कुली का काम कर रहा हूँ, परंतु कोई दिन ऐसा भी आ सकता है कि मैं पार्लियामेंट का सभापति हो सकूँ।"

स्विट्जरलैंड का कुली विद्वान् होते हुए भी कोई उपयुक्त काम न मिलने पर गठरी ढोकर जीवन निर्वाह करना अच्छा समझता है, परंतु दूसरे का आश्रित और कंटकरूप होना नहीं चाहता। क्या यह बड़प्पन की बात नहीं ? यह कर्मनिष्ठा ही है, जिसके कारण से पश्चिमी राष्ट्रों ने विकास और प्रगति की अनेक ऊँचाइयाँ तय की हैं और सुविधा-साधनयुक्त जीवनयापन करने में सफलता पाई है।

संसार की जितनी भी उन्नतिशील जातियाँ हैं, सबने निर्विवाद कर्म का माहात्म्य स्वीकार किया है। भारतवर्ष की तरह अमेरिका और यूरोप में भीख माँगने की प्रथा नहीं है और वहाँ भीख लेना जैसा लज्जाजनक और हीनतासूचक कार्य समझा जाता है, वैसा ही भिक्षा देना भी आलस्य को सहारा देना कहकर बहुत ही बुरा समझा जाता है। इसीलिए उक्त देशों में किसी को भिखारी कहना, सख्त गाली समझी जाती है। अमेरिका के बड़े-बड़े कॉलेजों के कितने ही निर्धन विद्यार्थी गरमी की छुट्टियों में गाड़ी हाँककर, धर्म मंदिरों में घंटा बजाकर, होटलों में बरतन साफ कर, नाट्यशाला में भाग लेकर तथा और भी ऐसे ही कितने काम करके रुपया कमाते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और उन रुपयों से कॉलेज का खर्च चलाते है। इसमें वे लोग लज्जा नहीं समझते, परंतु दूसरे का कंटकरूप होना अथवा पर उपार्जित धन सहायता के रूप में लेना, वे अवश्य महान् लज्जा का विषय समझते हैं।

खेद है कि हमारे इस आलस्य प्रधान भारत देश के निवासियों में यह भाव जाग्रत् नहीं होता, इसीलिए वे अकर्मण्यता और आलस्य को घृणित नहीं समझते। यह तो कहा ही जाता है कि मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु आलस्य ही है—**"आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः।"** पर यह आलस्य प्रकृति और पर्यावरण का भी इतना ही बड़ा शत्रु है।

हमें चाहिए कि हम किसी समय भी बेकार न बैठें। संसार का इतिहास कर्मयोगियों के इतिहास से भरा है। गीता में भगवान् कृष्ण ने कर्म की प्रधानता पर अर्जुन को उपदेश दिया है। जनक आदि ने कर्म करके ही सिद्धि पाई है।

☆ कहीं मनुष्य यंत्र मानव न बन जाए !

सुप्रसिद्ध चीनी दार्शनिक चांग होचांग एक बार देश-भ्रमण के लिए निकले। प्रजा की भलाई के लिए सामाजिक अध्ययन और उपयुक्त वातावरण की शोध, इस भ्रमण का मुख्य उद्देश्य था।

घूमते-घूमते चांग ताईवान पहुँचे। एक युवक माली, कुँए से जल निकाल रहा था। बाल्टी-बाल्टी पानी निकालने और फिर से ढोकर हर पौधे तक पहुँचाने में उसे बहुत अधिक श्रम करना पड़ रहा था। माली की देह पसीने से तर हो रही थी; तो भी काफी काम बाकी पड़ा था। काफी देर तक सोचते रहे। कोई ऐसा उपाय नहीं हैं क्या ? जिससे माली का परिश्रम कम किया जा सके।

विचार न करें तो सैकड़ों वर्षों की सड़ी-गली अनुपयोगी चीजें सगे-संबंधी की तरह चिपकी रहतीं और कष्ट देती हैं, पर विचार की एक छोटी-सी चिनगारी भी, उन्नतियों के राजमहल खड़े कर सकती है। चांग ने सोचा यदि लकड़ियों की एक घिर्री बनाकर, उसमें रस्सी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लपेटकर खड़े-खड़े ही खींचने का प्रबंध हो जाए और यहीं से प्रत्येक वृक्ष तक के लिए नाली खोद ली जाए तो माली का यथेष्ट श्रम बच सकता है। इतने ही श्रम में वह पहले से अधिक काम कर सकता है।

माली ने इस योजना का लाभ समझा और उसे मान लिया। ढेकलीनुमा व्यवस्था हो गई, माली वहीं खड़ा-खड़ा पानी निकालकर पौधे सींचने लगा।

समय तो बचा पर माली ने देखा कि उसके चलने-फिरने लचकने-झुकने के कई व्यायाम अब नहीं रहे। इसलिए शरीर के कुछ अंग शिथिल रहने लगे हैं, तो भी उसे इस बात का संतोष था कि तब से कुछ अधिक काम हो जाने से शरीर का हर अंग कुछ न कुछ तो क्रियाशील हो ही जाता है। इसलिए स्वास्थ्य में गिरावट की कोई विशेष चिंता नहीं हुई।

चांग आगे बढ़ गए। बहुत देर तक घूम चुकने के बाद वह फिर उसी रास्ते से वापस लौटे, तो उनके मस्तिष्क में एक और बात याद आई कि, यदि कुँए में भाप से चलने वाली मशीन डाल दी जाए तो परिश्रम बिल्कुल कम हो जाए और पौधों को पानी भी खूब मिलने लगे। माली ने वह प्रस्ताव भी स्वीकार कर लिया। भाप का इंजन लग गया माली को चैन हो गया।

काफी दिन बीतने के बाद एक दिन चांग की इच्छा उस बाग को देखने की हुई। उसने सोचा, बगीचा अब लहलहा रहा होगा, पर वहाँ जाकर देखा तो स्तब्ध रह गया। पूछने पर पता चला, माली बीमार रहता है, इसलिए समय-बे-समय पानी मिल पाता है। इसी से पेड़-पौधे मुरझा रहे हैं।

चांग माली को देखने उसके घर गए। सचमुच उसे बीमार पाया। उसके हाथ सूख गए थे, टाँगें कमजोर हो गई थीं, पेट दो रोटी से ज्यादा पचा नहीं सकता था। माली का मुँह पीला पड़ गया था।

चांग ने हँसकर पूछा—"कहो भाई ! अभी भी अधिक परिश्रम करना पड़ता है क्या ? तो कोई और तरकीब सोचें।" पास खड़ी मालिन ने हाथ जोड़कर कहा—"श्रीमान् जी और तरकीब लड़ाने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की अपेक्षा आप इन्हें ऐसी सीख दीजिए कि पहले की तरह फिर से अपने हाथ से ही काम करने लगें। मशीन का आराम ही इनकी बीमारी का कारण है।" चांग अपने एकांगी चिंतन पर बहुत ही पछताए। उन्होंने सोचा—"मनुष्य यांत्रिक और बिना परिश्रम के जीवन के आकर्षण में न पड़ता, तो वह न तो अस्वस्थ होता, और न ही रोगी।" उनने माली से अपनी स्त्री की ही राय मान लेने की सीख दी और वहाँ से वापस चले आए। माली अपनी पूर्व जीवन पद्धति में आकर पुनः स्वस्थ हो गया।

☆ मानव जीवन में बढ़ती विपन्नता के लिए जिम्मेदार है—वैचारिक प्रदूषण

वैचारिक प्रदूषण का इन दिनों प्रवाह कुछ ऐसा चल रहा है, जिसमें लोकमानस को अचिंत्य-चिंतन, कुकृत्य कर्तृत्व में निमग्न देखा जा सकता है। पेट और प्रजनन से आगे की बात किसी को सूझती ही नहीं। संकीर्ण स्वार्थपरता की खुमारी ऐसी चढ़ी है कि, लोभ और मोह की खाई पाटने के अतिरिक्त और कोई लक्ष्य सामने रह ही नहीं गया है। बड़प्पन की एक ही परिभाषा है—दूसरों की आँखों में चकाचौंध उत्पन्न करके अपनी विशेषता सिद्ध करना और अहंता की दर्प की आत्मप्रवंचना से मन बहलाना। नीति और अनीति का विचार छोड़कर, जिस प्रकार भी जितना भी संग्रह संभव हो करते रहना, उसे ठाठ-बाट के प्रदर्शन, वैभव-विलास एवं दुर्व्यसनों में जी खोलकर उड़ाना। इतने पर भी कुछ बच रहे, तो मात्र वंशजों के लिए छोड़ मरना, भले ही उनके पास निर्वाह की कोई कमी न हो। प्रस्तुत परिवार के प्रति उत्तरदायित्व न निभ पाने पर भी आए दिन संतानें जनना, अपना अर्थसंतुलन, पत्नी का स्वास्थ्य, बच्चों का भविष्य और देश का व्यवस्थाक्रम मटियामेट करना।

इस आसुरी रीति-नीति को अपनाने पर मनुष्य का अंतराल निष्ठुर-निकृष्ट होना स्वाभाविक है। पिछड़ापन इसी को कहते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्तर का गया-गुजरापन शिक्षित-अशिक्षित, धनी-निर्धन किसी में भेद-भाव नहीं करता और सब पर समान रूप से लदा रहता है। इस सड़न भरे वातावरण में घिनौने व्यक्तित्व वाले अपराधी, निर्मम, दुष्ट और भ्रष्ट-स्तर के लोग ही पनपते हैं या फिर हेय, हीन, आलसी, प्रमादी ऐसे नर-पशुओं की संख्या बढ़ती है, जिनके भार के सहन करने में धरती भी बहुत कष्ट अनुभव करती है। वे जिस समाज में जन्मते हैं, उसके लिए भारभूत होकर रहते हैं। विग्रह और विक्षोभ उत्पन्न करने, अव्यवस्था फैलाने, घृणा-जुगुप्सा का वातावरण बनाने, चैन की साँस न लेने देने की विडंबना ही वे रचते हैं। उनके जीवित रहने से समाज और राष्ट्र का संतुलन बिगड़ता और गौरव नष्ट होता है।

गहराई के साथ पर्यवेक्षण करने पर चित्र-विचित्र कलेवरों में ऐसे निकृष्ट स्तर के व्यक्तित्व अपनी विविध गतिविधियों में संलग्न पाए जाते हैं। क्षुद्र लोगों का उद्देश्यरहित चिंतन और आदर्शरहित चरित्र ही ऐसे घृणित वातावरण का सृजन करता है, जिसे पुरातन भाषा में नरक कहा जाता था। नरक की परिणति पीड़ा और पतन में ही होती है। जहाँ वरिष्ठ और कनिष्ठ सभी मानवीय गरिमा को तिलांजलि देकर भूत-प्रेतों जैसे उद्धत आचरण में विरत हों, वहाँ शांति कहाँ ? प्रगति कहाँ ? स्नेह कहाँ ? सौजन्य कहाँ ? न्याय कहाँ ? औचित्य कहाँ ? जहाँ दैवी विभूतियों को बहिष्कृत कर दिया गया हो, वहाँ समस्याओं, विपत्तियों, विभीषिकाओं की भी कमी कहाँ रहने वाली है ? पतन की ढलान ही ऐसी है, जिस पर लुढकने वाले त्रास देते, त्रास सहते, अंततः महाविनाश के गर्त में गिरते, आत्महत्या का कलंक ओढ़ते हैं।

आश्चर्यचकित करने वाली विडंबना यह है कि एक ओर भौतिकी, औद्योगिकी और बौद्धिकी की तूफानी प्रगति ने सुविधा-साधनों के पर्वत खड़े कर दिए हैं। इतने पर भी मनुष्य क्रमशः भीतर से खोखला और बाहर से ढोल-ढकोसला मात्र क्यों बनता जा रहा है ? उसकी चमक, उमंग, तुष्टि, तृप्ति, शांति का बेतरह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पलायन क्यों होता चला जा रहा है ? अणु आयुधों की सैन्य सज्जा ने इंद्रवज्र को पीछे छोड़ दिया, फिर सर्वत्र असुरक्षा का, आशंका का, अनिश्चितता का, आतंक का वातावरण क्यों ? प्रगति के लिए हर दिशा में बनने वाली योजनाओं, तैयारियों, व्यवस्थाओं और उपलब्धियों को देखकर लगता है कि अब अभाव-दारिद्रय का कहीं कोई अस्तित्व रहने वाला नहीं है। फिर भी निष्कर्षों तक पहुँचते-पहुँचते प्रतीत हो गया है कि किसी वेताल-ब्रह्मराक्षस ने आशाओं के अंबार फूँक से उड़ाकर अंतरिक्ष में विलीन कर दिए।

उपचार अपनी जगह पर, क्षरण और मरण का क्रम अपनी गति पर, दोनों के मध्य कोई तालमेल नहीं। इसे अनहोनी ही कहना चाहिए। यह बेबूझ पहेली—पकड़ से बाहर की भूल-भूलैया किसी तिलस्म महल-सी लगती है। प्रतीत होता है कि मानवी अस्तित्व अभिमन्यु की तरह किसी ऐसे विचित्र चक्रव्यूह में फँस गया है, जहाँ से बच निकलना कदाचित् अब शक्य रह नहीं गया है। आए दिन भविष्यवक्ताओं, मनीषियों, वस्तुस्थिति के आकलनकर्ताओं, दूरदर्शियों के कथन प्रतिपादन सुनने को मिलते रहते हैं कि दुर्दिन तेजी से बढ़ता आ रहा है और अपने विकराल मुख में इस धरातल की संचित शोभा-सुषमा को निगल जाने की तैयारी पूर्ण कर चुका है। बढ़ता हुआ प्रजनन, प्रदूषण, पर्यावरण, विकिरण, प्रकृति-संपदा के असंतुलित दोहन के फलस्वरूप पदार्थ संपदा का समापन ऐसे तथ्य हैं, जो निकट भविष्य में जीवन-मरण जैसे संकट की पूर्व सूचना देते है। प्रत्यक्ष सुविधा संपादन के लिए जब आदर्शों और भावनाओं को तिलांजलि देने की परंपरा चल पड़ी, तो फिर स्नेह-सौजन्य का क्या काम ? उदार आत्मीयता को जीवंत रखने के लिए जो आत्मसंयम और सेवासाधना करनी पड़ती है। जहाँ स्वार्थांधता का बोलबाला हो, वहाँ इन श्रद्धासिक्त सत्प्रवृत्तियों के पैर कैसे टिकें ? उनका अस्तित्व समाप्त हो जाने पर जिस प्रकार सोचा जाता है, जो किया और कराया जाता है उसकी तुलना पिशाचकृत्यों से ही की जा सकती है। जहाँ पिशाचों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की भरमार हो, उसे मरघट ही कहा जाएगा। वहाँ जलने-जलाने, डरने-डराने, रोने-रुलाने के अतिरिक्त और किसी माहौल की आशा कैसे की जाए ?

यही है उन विसंगतियों का रहस्योद्घाटन, जिनके कारण एक हाथ से भौतिक उत्कर्ष दूसरी ओर आत्मिक अपकर्ष का जादुई हेरफेर चलता दृष्टिगोचर होता है। जब तक यही स्थिति बनी रहेगी, प्रवाह, माहौल, वातावरण ऐसा ही बना रहेगा, जिसमें घुटन, संकट, असंतुलन, विभ्रम, विग्रह के अतिरिक्त और कहीं कुछ न दीखे न सूझे। फिर किया क्या जाए ? अच्छा तो यही लगता है कि अपने काम से काम रखा जाए। दुनिया का लेखाजोखा लेकर सुधार-सँभाल की चिंता का भार, सिर पर न लादा जाए। किंतु कठिनाई यह है कि बात इस प्रकार भी तो नहीं बनती। चारों ओर अग्निकांड की लपटें उठें, सारा मुहल्ला धूँ-धूँ जले, तो अपने मध्यवर्ती घर की सुरक्षा कहाँ बन पड़ती है ? गाँव में महामारी फैले, तो अपने परिवार का निश्चिंत रहना कैसे संभव है ? गुंडे-बदमाशों का समुदाय किसी क्षेत्र में छाया हो, तो अपने घर के लोगों को उनके कुचक्र से कैसे विरत रखा जाए ? उस नरक तुल्य प्रदूषित वातावरण से उन्हें कैसे बचाया जाए ? गेहूँ के साथ घुन पिसता है। दुर्जनों का बाहुल्य हो, तो मुट्ठी भर सज्जनों की भी खैर नहीं। प्रश्न समृद्धि की कमी का नहीं, भावनाओं के दुर्भिक्ष का है। मनुष्य हाड़-मांस का पुतला नहीं, भावना और आस्था का पुंज है। उसका जैसा भी अंतराल होगा, वैसी ही उसकी आदतें ढलेंगी, इच्छाएँ उठेंगी, गतिविधियाँ चलेंगी। फलतः मनःस्थिति के अनुरूप ही वह परिस्थितियाँ सृजन करता और उनमें जकड़ता चला जाएगा। यही है आज की वस्तुस्थिति का सूक्ष्म निरीक्षण, शवच्छेद और विश्लेषण।

विपन्नता को उलटने के लिए एक ही प्रयास करना होगा कि व्यक्तित्व संपन्न मानवों को ढूँढ़ा, उभारा, उछाला और लोकमानस को प्रभावित करने वाली भूमिका निभाने के लिए अग्रिम मोरचे पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खड़ा किया जाए। इतना बन पड़े तो उन समस्त समस्याओं का हल संभव और सरल है, जो लाख प्रयत्न करने पर भी सुलझने का नाम नहीं ले रहा है। सवाल न तो संपदा की कमी का है और न साधनों के बिना कोई काम रुका पड़ा है। मनुष्य का श्रम और कौशल ही संपत्ति का उत्पादन-उपार्जन करता है। वह पिछड़े स्तर का हो, तो दरिद्रता से, विपन्नता से छुटकारा नहीं। वह प्रखर हो, तो बालू से तेल निकालने, लात मारकर पाताल से पानी निकालने की बात संभव हो सकती है। फरहाद का खोह खोदकर नहर निकालना एकाकी संकल्प के सहारे संभव हो सका। कल-परसों एक हजारी किसान ने बिहार में एक हजार आम्र उद्यान लगाकर उस इलाके को हजारी बाग का श्रेयाधिकारी बना दिया।

महामानवों की समूची इतिहास श्रृंखला इसी प्रकार की है। शंकराचार्य, बुद्ध, गांधी, विवेकानंद, दयानंद, कबीर, दादू, नानक, समर्थ, केशव, प्रताप, सुभाष आदि की गाथाएँ यही प्रमाणित करती हैं कि सफलताएँ सदा मनस्वी के चरण चूमती रही हैं। ओजस् आगे बढ़ा है तो उसके तूफानी पराक्रम के साथ अनुयायियों के अनगिनत पत्ते-तिनके अनायास ही पीछे दौड़ते चले आए हैं। प्रवाह उत्पन्न करने में व्यक्तित्व ही समर्थ रहे हैं, थे और रहेंगे। आज के पतन-पराभव का सृजन भी उन्होंने किया है।

उदाहरण के लिए साहित्य, कला, अभिनय, संगीत को ही लें। इस अकेली धारा ने कोटि-कोटि मानवों के मनःक्षेत्रों को कलुष कालिमा से भर दिया है। पतन प्रवाह को सर्वनाश की भूमिका निभाने के लिए, स्वच्छंद गति से बढ़ते चलने—जो भी लपेट में आए उसे निगलते चलने के लिए स्वच्छंद छोड़ दिया है। यदि इस कला-क्षमता को सृजन-प्रयोजन में, आदर्शों के लिए प्रोत्साहन में प्रयुक्त किया गया होता, तो उसकी स्थिति आज से सर्वथा भिन्न होती। लोकमानस को उन्नत बनाने में, कला क्षेत्र के मूर्द्धन्यों की संपदा, बुद्धि और कुशलता नियोजित हो सकी होती, तो निश्चित रूप से आज सतयुग के दृश्य उपस्थित हुए होते। शक्ति तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शक्ति है। उसे दुधारी तलवार की संज्ञा दी गई है। वह सुरक्षा, दुष्ट दमन, बाल वध, आतंक, आत्महत्या आदि किसी भी भले-बुरे काम में प्रयुक्त की जा सकती है। जो बात कला के संबंध में कही जा रही है, वही विज्ञान, शिक्षा, शासन, उत्पादन, व्यवसाय, संगठन, प्रचलन आदि सभी क्षेत्रों के लिए समान रूप से लागू होती है।

न प्रकृति संपदा की कमी है, न बुद्धि-कौशल की। मानवी, पशु समुदाय का—भाप, तेल, विद्युत् का, जल वैभव भी कम नहीं। उन उपलब्धियों का यदि सही दिशा में सुनियोजन, सदुपयोग किया जा सके, तो विश्वास किया जाना चाहिए कि वर्तमान साधनों से ही व्यक्ति का, समाज का, विश्व का, कायाकल्प हो सकता है। प्रकृति और मानवजीवन में संव्याप्त हाहाकारी विपन्नता का स्थान सुख-शांति से भरी-पूरी सुसंपन्नता ग्रहण कर सकती है। इसके लिए किसी विप्लव-विद्रोह जैसी भयावह मारकाट या उथल-पुथल की भी आवश्यकता न पड़ेगी। दुर्बुद्धि को सन्मति में बदल लेना, इतना कठिन काम नहीं है, जितना कि महायुद्धों का नियोजन। जब अंतरिक्ष युद्ध से महाप्रलय के नियोजन की, अणु-आयुधों से धरती की धज्जियाँ उड़ा देने की, प्रदूषण-विकिरण से प्राणिसमुदाय का दम घोंट देने की, श्रमसाध्य, व्ययसाध्य असंभव जैसी लगने वाली योजनाएँ संभव हो सकती हैं, तो कोई कारण नहीं कि मानवीय संकल्प दुर्बुद्धि को सद्बुद्धि में बदल देने अवांछनीय दिशा में बहने वाले प्रचलन, प्रवाह को मोड़ने-मरोड़ने में सफल न हो सके। संकल्प, साहस और पुरुषार्थ का समन्वय जब भी, जहाँ भी, जिस प्रयोजन के लिए भी हुआ है, वहाँ असंभव को संभव में बदलने का चमत्कार उत्पन्न होता रहा है। यदि सृजन सोचा गया होता, उत्कर्ष लक्ष्य रहा होता—दूरदर्शी विवेक को आश्रय मिला होता, तो आज वह स्थिति सामने न आई होती, जिसमें कुछेक को छोड़कर हर व्यक्ति खिन्न, असंतुष्ट, विपन्न, निराश एवं भयभीत दिखाई पड़ रहा है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यों धरती पर सदाशयता भी विद्यमान रहती है। बीज नाश तो प्रलयकाल में भी नहीं होता। सज्जन अभी भी मौजूद हैं। सत्प्रवृत्तियों की इतिश्री हो गई हो, सो बात भी नहीं है। सृजन की बात सोचने वाले और उसके लिए अपनी नगण्य-सी सामर्थ्य से छुटपुट कुछ-कुछ करते रहने वाले भी ढूँढ़ने पर मिल ही सकते हैं; पर उनकी गणना लंका में विभीषण की—दाँतों के बीच जीभ जितनी ही हो सकती है। बाहुल्य और बहुमत को ही प्रधानता देनी होती है और मूल्यांकन उसी का होता है। इस दृष्टि से आज की मनःस्थिति और परिस्थिति पर से चमकदार परदा उठाते ही जो दीखता है, उसे एक शब्द में विघातक ही कहा जा सकता है। प्रश्न एक ही है कि आधारभूत कारण को समझने-समझाने, प्रवाह को मोड़ने-मरोड़ने गुत्थी को सुलझाने के लिए कटिबद्ध होने की तैयारी की जाए, या जो हो रहा है—होने जा रहा है—उसे मूकदर्शक की तरह देखते रहा जाए ?

❐ ❐

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org